नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 307, नई दिल्ली, मंगलवार 06 जनवरी 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

जिस इंसान के पास आशा होती है, वह कभी पराजित नहीं होता है!

02 श्माघ मास का संकट चौथ व्रत और उसका महात्म्य
06 समान अवसर का नया भारत – जब योग्यता ही पहचान बने
08 डॉ. कमलदीप शर्मा ने आई.डी.ए. अमृतसर के अध्यक्ष पद का कार्यभार संभाला

ई-रिक्शा सब्सिडी का जाल घोषणा से वास्तविकता तक

हजारों खरीदार लटके, विभागीय देरी या जानबूझकर ढिलाई?

लेखक: संजय कुमार बाठला

दिल्ली EV नीति 2020 ने ई-रिक्शा खरीदने वालों को 30,000 रुपये प्रति वाहन सब्सिडी का लालच दिया, लेकिन आज भी सैकड़ों खरीदार बिना प्रोत्साहन राशि के सड़क पर जूझ रहे हैं। ऑनलाइन पोर्टल की बंदी, बजट स्वीकृति में देरी और डीलर-मध्यस्थता ने इसे "कागजी वादा" बना दिया।

मुख्य खामियाँ: 2020-2025 के बीच केवल 40% आवेदनों पर सब्सिडी जारी; शेष लटके या खारिज।

डीलरों ने कहा – "पोर्टल बंद, विभाग जवाब नहीं देता"; खरीदारों ने 2-3 साल इंतजार किया।

नीति 31 मार्च 2026 तक बढ़ी, लेकिन पुराने लटके केसों का कोई समाधान नहीं।

जनहित सुझाव: परिवहन विभाग तत्काल बकाया जारी करे या जवाब में लिखित कारण दे।

उच्च न्यायालय के पारदर्शिता निर्देशों का पालन अनिवार्य।[

ई-रिक्शा सब्सिडी स्थिति: 60% लटके आवेदन, 30,000₹ प्रति वाहन।

विकसित भारत का सच: जहाँ हवा भी फ़िल्टर से निकलती है

तरक़्क़ी की रफ़्तार में हमने हवा, पानी और इंसानियत को भी "प्राइवेट लिमिटेड" बना डाला है

लेखक:- संजय कुमार बाठला

भूमिका:- कहते हैं भारत अब विकसित हो रहा है — सड़कें चौड़ी हो गई हैं, ट्रेनें तेज़ हो गई हैं, मॉल चमक उठे हैं और डिजिटल इंडिया हर जेब में समा गया है।

लेकिन क्या आप जानते हैं इसी विकास की चमक के पीछे एक स्याह परछाई भी है: दम तोड़ता पर्यावरण, महँगी होती शिक्षा और स्वास्थ्य, और सुविधा व दिखावे तक सिमटती हमारी संवेदनाएँ।

यह व्यंग्य उसी आत्मसंतुष्ट विकास की तस्वीर है, जहाँ हर समाधान एक फ़िल्टर से होकर आता है।

विकास के नाम पर धूल का उजालाअब तो मान ही लेना चाहिए कि भारत विकसित हो चुका है। दीवारों पर एसी की ठंडी साँसें चिपकी हैं और खिड़कियों से बाहर हवा में तरक्क़ी की धूल उड़ रही है।

हमारे डर भी बदल गए हैं — अब हमें धूप से नहीं, बिजली के बिल से डर लगता है।

पर कोई बात नहीं, बिल भी अब डिजिटल हो गया है; जैसे हमारा "विकसित भारत" — चमकदार स्क्रीन पर दिखाई देने वाला विकास, और धुंधले आसमान के नीचे जीती हुई ज़िंदगी।

* हमने नदियों को इतना प्यार दिया कि वे अब नाले बन चुकी हैं।

* जंगलों को विकास का रास्ता दिखाया, तो उन्होंने खामोशी से किनारा कर लिया।

* हवा को हमने आधुनिक बना दिया — अब उसमें धूल, धुआँ और SUV का गर्व मिला हुआ है।

* घर के भीतर RO और एयर प्यूरीफ़ायर गवाही देते हैं कि हम कितने विकसित हैं।

"जब देश तरक्क़ी कर रहा हो, तो साफ़ हवा और पानी लक्ज़री ही लगने चाहिए" — यह हमारी नई समझ है।

सुविधाओं का विकास, संवेदनाओं का पतन

* कभी शहर की बस में धक्के खाते लोग अब SUV में धूल उड़ाते हैं।

* रेल के स्लीपर कोच में बैठना अब 'अतीत का अनुभव' कहा जाता है, क्योंकि वंदे भारत की आरामदेह सीट पर बैठकर हम यह भरोसा पाल लेते हैं कि हमने विकास की रफ़्तार पकड़ ली है।

* टिकट महँगी हो गई है, पर इसे हम "प्रगति का किराया" मानकर चुप रहना सीख चुके हैं।

* शिक्षा ने भी विकास की नई परिभाषा अपना ली है।

जिन माता-पिता ने सरकारी स्कूल से पढ़कर ज़िंदगी बनाई, वही आज अपने बच्चों को वहाँ भेजना 'जोखिम' मानते हैं।

अब शिक्षा 'अवसर' नहीं, 'ऑप्शन' बन चुकी है — और जो ऑप्शन सिर्फ़ पैसे से खुलता है, वह आधुनिकता कहलाता है।

* पड़ोस का चिंटू एंट्रेंस नहीं निकाल पाया — कोई बात नहीं, प्राइवेट कॉलेज हैं ना।

* कट-ऑफ में सीट नहीं मिली, तो भी चिंता नहीं: रूस में मेडिकल की पढ़ाई भारत के विकसित मिडिल क्लास के लिए नया "कैरियर पैकेज" बन चुकी है।

* सुना है पचास–साठ लाख का ख़र्च आएगा। विकसित माँ-बाप हैं, हो जाएगा — चिंता किस बात की?

स्वास्थ्य का विकास: मरीज़ से ज़्यादा बीमा सक्रिय स्वास्थ्य के मोर्चे पर भी विकास ने कमाल कर दिया है।

* सरकारी अस्पताल अब कहानी की तरह सुनाए जाते हैं — डर, गंदगी और फ़िनायल की बदबू से भरी कहानियाँ।

* इलाज भले ही मुफ़्त हो, भरोसा बहुत महँगा हो चुका है।

* इसलिए विकसित भारत का नागरिक सीधे प्राइवेट हॉस्पिटल जाता है, जहाँ डॉक्टर से पहले बीमा कार्ड मुस्कराता है।

* वार्ड की दीवारों पर टँगे पैकेज हमें याद दिलाते हैं कि अब बीमारी भी एक "प्रोडक्ट कैटेगरी" है।

* हम यह मान चुके हैं कि "अच्छा इलाज" वही है जो जेब को हल्का कर दे और काग़ज़ात को भारी।

* अब हम बीमार भी सभ्य ढंग से होना चाहते हैं — अपॉइंटमेंट, पैकेज, रिपोर्ट और ईमेल अलर्ट के साथ।

*** विकसित हवा, प्रदूषित सोच**

* हमारे शहरों की हवा भी अब वर्गों में बँट चुकी है।

* जो लोग afford कर सकते हैं, वे एयर प्यूरीफ़ायर की साफ़ हवा में साँस लेते हैं;

* बाक़ी लोग वही साँसें खींचते हैं जिनमें "मेड इन इंडिया" धूल और "ग्लोबल स्टैंडर्ड" कचरा मिला हुआ है।

* शहरों का आसमान अब धुँधला नहीं कहलाता, उसे "स्मॉग" कहा जाता है।

* क्योंकि developed city में प्रदूषण नहीं होता, बस Air Quality Index और Fog Index होते हैं।

* शब्द बदलते हैं, हकीकत वहीं की वहीं रहती है।

*** हमने विकास को इस हद तक निजी बना लिया है कि**

* अब साफ़ हवा, स्वच्छ पानी और अच्छी शिक्षा–स्वास्थ्य भी "पर्सनल एसेट" मानी जाने लगी है।

* देश का विकास काग़ज़ों और स्क्रीन पर दर्ज होता है, और नागरिक का विकास EMI और सर्विस चार्ज में।

विकास का अंत, या आरंभ का भ्रम?

* किसे फर्क पड़ता है कि नदियाँ बीमार हैं,

* खेत कंक्रीट में बदल रहे हैं,

* सरकारी स्कूलों के मैदान सूने हैं और

* अस्पतालों की दीवारें उखड़ रही हैं —

जब तक GDP के ग्राफ़ ऊपर जा रहे हैं और शहरों की रातें तस्वीरों में चमक रही हैं,

हम संतुष्ट हैं कि भारत विकसित है। हम तरक्क़ी की उस ऊँचाई पर पहुँच चुके हैं, जहाँ ज़मीन के नीचे की मिट्टी भी एक "प्रोजेक्ट" बन चुकी है, और मिट्टी के ऊपर खड़ा इंसान बस "डेटा"।

शायद किसी दिन सचमुच भारत विकसित हो जाएगा।

बस तब तक हमें थोड़ा और प्रदूषण, थोड़ा और शोर,

और कुछ और दिखावा बर्दाश्त करना होगा।

विकास की यह कहानी जारी है — फ़र्क बस इतना है कि अब हमारे सपनों का रंग भी ग्रे हो गया है, बिलकुल उसी धुएँ की तरह जो शहर के आसमान में तैरता है और

हमें यक़ीन दिलाता है कि देखें, हम सचमुच बहुत आगे आ गए हैं।

हवाई अड्डों की तर्ज पर पुनर्विकसित होंगे रेलवे स्टेशन

अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत एआई, बीआईएम और हाई-टेक सॉफ्टवेयर से होंगे सुरक्षित व आधुनिक स्टेशन भवन तैयार

रायपुर, छत्तीसगढ़।

भारतीय रेलवे की महत्वाकांक्षी अमृत भारत स्टेशन योजना (एबीएसएस) के तहत अब रेलवे स्टेशन का स्वरूप भी पूरी तरह बदलने जा रहा है। वर्ष 2023 में शुरू की गई इस योजना के अंतर्गत देशभर के 1,275 रेलवे स्टेशनों को चरणबद्ध और स्थान-विशिष्ट तरीके से आधुनिक बनाया जा रहा है। इसका उद्देश्य स्टेशनों को केवल आवागमन केंद्र न रखकर, उन्हें हवाई अड्डों की तरह आधुनिक, सुविधायुक्त और एकीकृत परिवहन हब के रूप में विकसित करना है।

योजना के अंतर्गत रेलवे स्टेशन पर एयर कॉनकोर्स जैसी विशाल प्रतीक्षा व्यवस्था, आधुनिक प्रतीक्षालय, स्वच्छ शौचालय, लिफ्ट, एस्केलेटर, निःशुल्क वाई-फाई, कार्यकारी लाउंज तथा वीआईपी यात्रियों के लिए ठहरने की विशेष सुविधा विकसित किए जाने की परिकल्पना है। इससे यात्रियों को अब रेलवे स्टेशन पर भी एयरपोर्ट जैसा आरामदायक अनुभव मिलेगा।

अमृत भारत स्टेशन योजना में क्षेत्रीय वास्तुकला, पर्यावरण के अनुकूल और टिकाऊ निर्माण, बेहतर प्रकाश व्यवस्था, आधुनिक साइनेज तथा दिव्यांगजनों के लिए सुगम सुविधाओं पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। साथ ही 'वन स्टेशन, वन प्रोडक्ट' पहल के तहत स्टेशन परिसर में स्थानीय उत्पादों और हस्तशिल्प को बढ़ावा दिया जाएगा, जिससे अंचल की पारंपरिक कला और स्थानीय अर्थव्यवस्था को नई पहचान मिलेगी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विज़न के अनुरूप रेलवे स्टेशनों को घरेलू हवाई अड्डों की शैली में विकसित किया जा रहा है। इसी क्रम में यात्रियों की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए संरचनात्मक मजबूती पर विशेष जोर दिया जा रहा है। इसके लिए सीएसआई सेफ, ईटीएबीएस, आरसीडीसी, स्टैड प्रो, आइडिया स्टैटिका जैसे उच्च तकनीकी सॉफ्टवेयर के माध्यम से डिज़ाइन और विश्लेषण किया जा रहा है।

इस योजना को लेकर भाजपा महिला मोर्चा बस्तर की प्रभारी एवं गूंज वेलफेयर सोसायटी की अध्यक्ष लक्ष्मी कश्यप से चर्चा की गई। उन्होंने बताया कि संरचनात्मक अभियंता एवं नगर योजनाकार भूपेंद्र सिंह ठाकुर द्वारा अत्याधुनिक एआई आधारित तकनीक, बीआईएम, ऑटोकैड, सीएसआई सेफ, ईटीएबीएस और सेफ सॉफ्टवेयर के उपयोग से अमृत भारत रेलवे स्टेशन का सुरक्षित और आधुनिक डिज़ाइन तैयार किया गया है। इस अभिनव कार्यप्रणाली को अंतरराष्ट्रीय जर्नल कंस्ट्रक्शन इंजीनियरिंग एंड रिसर्च (सीई एंड सीआर) के नवंबर 2025 अंक में प्रकाशित किया गया है।

प्रधानमंत्री के दृष्टिकोण के अनुरूप रेलवे स्टेशनों को निजीकरण की पहल से जोड़कर नए व्यावसायिक अवसर, रोजगार सृजन और पारदर्शिता को बढ़ावा देने का लक्ष्य रखा गया है। इससे आर्थिक गतिविधियों में तेजी, युवाओं के लिए आय के नए साधन और स्थानीय नागरिकों के जीवन स्तर में सुधार की उम्मीद है।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

पिंकी कुंडू

आज का साइबर सुरक्षा विचार

ऑपरेशन चक्र-V (CBI), ऑपरेशन मैट्रिक्स (एमपी पुलिस), ऑपरेशन थिरैनीकु (तमिलनाडु पुलिस, साइबर क्राइम विंग), और साई-हॉक (दिल्ली पुलिस) साइबर धोखाधड़ी की रीढ़ – म्यूल अकाउंट्स – पर प्रहार कर रहे हैं।

यह खाते घोटालों और संगठित धोखाधड़ी नेटवर्क को ताक़त देते हैं।

बैंकों को ज़िम्मेदारी निभानी चाहिए: सक्रिय निगरानी, त्वरित ब्लॉकिंग और नागरिक सुरक्षा।

"साइबर धोखाधड़ी नेटवर्क म्यूल अकाउंट्स पर निर्भर हैं – श्रृंखला तोड़ें, नागरिकों की रक्षा करें।"

संदर्भ और आवश्यकता

- साइबर अपराध आज सीमाहीन है, जो सोशल मीडिया, डिजिटल भुगतान और निवेश ऐप्स का शोषण करता है।

- धोखेबाज़ म्यूल अकाउंट्स – धोखाधड़ी किए गए पैसों को छिपाने वाले बैंक खातों – पर निर्भर रहते हैं।

- जैसे भौतिक गश्त हमारी सड़कों को सुरक्षित करती है, वैसे ही साइबर गश्त और इंटेलिजेंस टीमें डिजिटल हाईवे को सुरक्षित करती हैं।

हाल की पहल

- ऑपरेशन मैट्रिक्स (एमपी पुलिस) और साई-हॉक (दिल्ली पुलिस) ने म्यूल अकाउंट्स को निशाना बनाया और धोखाधड़ी नेटवर्क को बाधित किया।

- ये अभियान एक रणनीतिक बदलाव को दर्शाते हैं: शिकायत-आधारित कार्रवाई से सक्रिय रोकथाम की ओर।

साइबर धोखाधड़ी का प्रभाव (2019–2025)

- भारत हर दिन लगभग ₹24 करोड़ साइबर धोखाधड़ी में खोता है।

- छह वर्षों में कुल नुकसान: ₹52,976 करोड़ (स्रोत: I4C, गृह मंत्रालय)।

- प्रमुख धोखाधड़ी प्रकार:

- फर्जी निवेश ऐप्स और पोंजी स्कीम

- फ़िशिंग लिंक और प्रतिरूपण घोटाले

- UPI/वॉलेट/कार्ड धोखाधड़ी

- सीमा-पार सिंडिकेट संचालन

रणनीतिक महत्व

- नागरिक सुरक्षा: परिवारों, पेंशन और जीवनभर की बचत की रक्षा।

- राष्ट्रीय सुरक्षा: भारत की डिजिटल व्यवस्था का अंतरराष्ट्रीय सिंडिकेट्स द्वारा शोषण रोकना।

- विश्वास निर्माण: डिजिटल भुगतान और ऑनलाइन सेवाओं में भरोसा बहाल करना।

- मॉडल ढांचा: अन्य राज्यों और एजेंसियों के लिए अनुकरणीय उदाहरण।

नागरिकों के लिए रोकथाम उपाय

- निवेश से पहले सत्यापन करें: केवल SEBI/RBI पंजीकृत प्लेटफ़ॉर्म का उपयोग करें।

- डिजिटल भुगतान सुरक्षित करें: OTP, PIN या UPI क्रेडेंशियल कभी साझा न करें।

- तुरंत रिपोर्ट करें: 1930 पर कॉल करें या cybercrime.gov.in पर जाएं।

- सतर्क रहें: धोखेबाज़ WhatsApp, Telegram और सोशल मीडिया समूहों के माध्यम से विश्वास का शोषण करते हैं।

बैंकों और संस्थानों के लिए आह्वान

- संदिग्ध खातों की सक्रिय निगरानी।

- म्यूल अकाउंट्स का त्वरित ब्लॉकिंग।

- पुलिस और CERT-In के साथ सूचना साझा करना।

- एआई-आधारित धोखाधड़ी पहचान और बहुभाषी अलर्ट।

आगे की राह

- जिला/ज़ोन स्तर पर साइबर गश्त टीमों का विस्तार, ताकि म्यूल अकाउंट सिंडिकेट ध्वस्त किए जा सकें।

- एआई-आधारित निगरानी और साइबर फॉरेंसिक में क्षमता निर्माण।

- क्षेत्रीय भाषाओं में जन-जागरूकता अभियान।

- त्वरित प्रवर्तन के लिए मज़बूत कानूनी ढांचा।

निष्कर्ष

* साइबर धोखाधड़ी केवल पैसे की चोरी नहीं है — यह विश्वास की चोरी है।

* म्यूल अकाउंट्स को समाप्त करके और साइबर गश्त को मज़बूत बनाकर भारत अपनी डिजिटल अर्थव्यवस्था को सुरक्षित कर सकता है।

* हर नागरिक, बैंक और एजेंसी की भूमिका है धोखाधड़ी की श्रृंखला तोड़ने में।

दिल्ली में ट्रैफिक चालान निपटारे के लिए 7 जगह लगेगी लोक अदालत, 1.80 लाख लोगों को मिलेगी राहत

नई दिल्ली। दिल्ली में यातायात के लंबित चालान के निपटारे के लिए 10 जनवरी को दिल्ली सात जिला अदालतों में लोक अदालत का आयोजन होगा। दिल्ली राज्य विधिक सेवाएं प्राधिकरण व दिल्ली यातायात पुलिस के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित लोक अदालत में 1.80 लाख चालान का निपटारा किया जाना है। चालान के लिए सोमवार से नोटिस व चालान दिल्ली यातायात पुलिस की वेबसाइट से डाउनलोड किए जा सकेंगे। इसमें 30 नवंबर 2025 तक वर्चुअल कोर्ट को भेजे गए समझौता योग्य चालान ही इस लोक अदालत में सुनवाई में रखे जा सकेंगे। पटियाला हाउस, कड़कड़डूमा, तीस हजारी, साकेत, रोहिणी, द्वारका और राउज एवेन्यू कोर्ट में यह लोक अदालत लेगी।

नोटिस डाउनलोड करने के लिए सुबह 10 बजे से लिंक एक्टीवेट होगा। प्रत्येक दिन 45 हजार चालान 1.80 लाख चालान होने तक डाउनलोड किए जा सकेंगे। नागरिक https://traffic.delhipolice.gov.in/notice/lokadalat लिंक पर जाकर चालान या नोटिस डाउनलोड किए जा सकेंगे।

"माघ मास का संकट चौथ व्रत और उसका महात्म्य"

पिंकी कुंडू

माघ मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि को सकट चतुर्थी का व्रत रखा जाता है, सकट चौथ का व्रत संतान की सुरक्षा और परिवार की सुख-शांति के लिए रखा जाता है।

इस दिन भगवान गणेश की पूजा की जाती है और उन्हें तिलकुट का भोग लगाया जाता है। इसे वक्रतुण्डी चतुर्थी, माही चौथ और तिलकुटा चौथ भी कहते हैं।

सकट चौथ के दिन भगवान गणेश को तिल और गुड़ मिलाकर भोग अर्पित किया जाता है, गणपति जी को पीले वस्त्र धारण करा कर, धूप, घी, लाल रोली, कलावा, फूल आदि पूजन सामग्री अर्पित कर पूजा की जाती है।

इस दिन भगवान श्रीगणेश के पूजन के बाद चंद्रदेव को अर्घ्य अर्पित किया जाता है, और चंद्र देव से घर-परिवार की सुख-शांति के लिए प्रार्थना की जाती।

माघ कृष्ण चतुर्थी तिथि 6 जनवरी 2026, मंगलवार को सुबह 8:01 बजे से शुरू होकर 7 जनवरी 2026, बुधवार को सुबह 6:52 बजे तक रहेगी।

चंद्रोदय तिथि के अनुसार सकट चौथ का व्रत 6 जनवरी 2026, मंगलवार को रखा जाएगा, सकट चौथ के दिन चंद्रोदय रात 8:54 बजे होगा।

दिनांक 06.01.2026 मंगलवार को है 'सकटचौथ व्रत'। जानते हैं क्या है इस महत्व – "सकट चौथ व्रत महात्मय"

यह व्रत माघ मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि को मनाया जाता है। यह व्रत स्त्रियाँ अपने सन्तान की दीर्घायु और सफलता के लिये करती हैं। इस व्रत के प्रभाव से सन्तान को रिद्धि-सिद्धि की प्राप्ति होती है तथा उनके जीवन में आने वाली सभी विघ्न-बाधायें गणेश जी दूर कर देते हैं। इस दिन स्त्रियाँ पूरे दिन निर्जला व्रत रखती है और शाम को गणेश पूजन तथा चन्द्रमा को अर्घ्य देने पश्चात् ही जल ग्रहण करती हैं।

सकट चौथ व्रत की विधि माघ मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि को सकट का व्रत किया जाता है। इस दिन संकट हरण गणपति का पूजन होता है। इस दिन विद्या, बुद्धि, वारिधि गणेश तथा चन्द्रमा की पूजा की जाती है। भालचंद्र गणेश की पूजा सकट चौथ को की जाती है।

प्रातःकाल नित्य क्रम से निवृत होकर षोड्शोपचार विधि से गणेश जी की पूजा करें। निम्न श्लोक पढ़कर गणेश जी की वंदना करें :-

गजाननं भूत गणादि सेवितं, कपित्थ जम्बू फल चारू भक्षणम्।
उमासुतं शोक विनाशकारकम्, नमामि विघ्नेश्वर पाद पंकजम्॥

* इसके बाद भालचंद्र गणेश का ध्यान करके पुष्प अर्पित करें।
* पूरे दिन मन ही मन श्री गणेश जी के नाम का जप करें।
* सुर्यास्त के बाद स्नान कर के स्वच्छ वस्त्र पहन लें। अब विधिपूर्वक (अपने घरेलु परम्परा के अनुसार) गणेश जी का पूजन करें।
* एक कलश में जल भर कर रखें।
* धूप-दीप अर्पित करें।
* नैवेद्य के रूप में तिल तथा गुड़ के बने हुए लड्डु, ईख, गंजी (शकरकंद), अमरूद, गुड़ तथा घी अर्पित करें।
* यह नैवेद्य रात्रि भर बांस के बने हुए डलिया (टोकरी) से ढ़ंककर यथावत रख दिया जाता है।
* पुत्रवती स्त्रियाँ पुत्र की सुख समृद्धि के लिये व्रत रखती है।
* इस ढ़ंके हुए नैवेद्य को पुत्र ही खोलता है तथा भाई बंधुओं में बाँटता है।

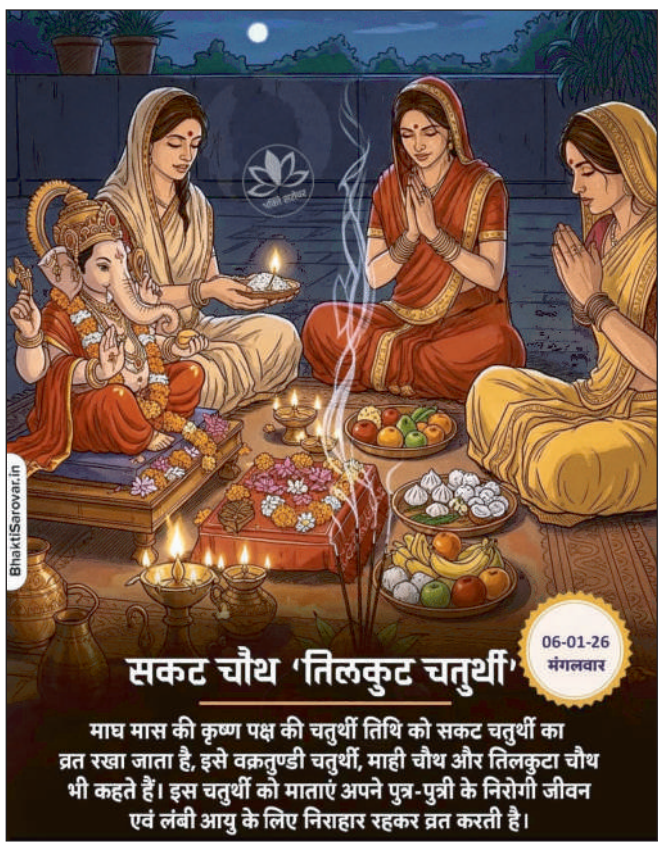

* ऐसी मान्यता है कि इससे भाई-बंधुओं में आपसी प्रेम-भावना की वृद्धि होती है।
* अलग-अलग राज्यों मे अलग-अलग प्रकार के तिल और गुड़ के लड्डु बनाये जाते हैं।
* तिल के लड्डु बनाने हेतु तिल को भूनकर, गुड़ की चाशनी में मिलाया जाता है, फिर तिलकूट का पहाड़ बनाया जाता है, कहीं-कहीं पर तिलकूट का बकरा भी बनाते हैं। तत्पश्चात गणेश पूजा करके तिलकूट के बकरे की गर्दन घर का कोई बच्चा काट देता है।

कथा - 01 एक साहूकार और एक साहूकारनी थे। वह धर्म पुण्य को नहीं मानते थे। इसके कारण उनके कोई बच्चा नहीं था। एक दिन साहूकारनी पडोसी के घर गयी। उस दिन सकट चौथ था, वहा पड़ोसन सकट चौथ की पूजा कर के कहानी सुना रही थी।

साहूकारनी ने पड़ोसन से पूछा–'तुम क्या कर रही हो ?' तब पड़ोसन बोली–'आज चौथ का व्रत है, इसलिए कहानी सुना रही हूँ।' तब साहूकारनी बोली–'चौथ के व्रत करने से क्या होता है ?' तब पड़ोसन बोली–'इसे करने से अन्न, धन, सुहाग, पुत्र सब मिलता है।' तब साहूकारनी ने कहा–'यदि मेरा गर्भ रह जाये तो मैं सवा सेर तिलकुट करूँगी और चौथ का व्रत करूँगी।'

श्री गणेश भगवान की कृपा से साहूकारनी के गर्भ रह गया। तो वह बोली–'मेरे लड़का हो जाये, तो में ढाई सेर तिलकुट करूँगी।' कुछ दिन बाद उसके लड़का हो गया, तो वह बोली–'हे चौथ भगवान ! मेरे बेटे का विवाह हो जायेगा, तो सवा पांच सेर का तिलकुट करूँगी।' कुछ वर्षो बाद उसके बेटे का विवाह तय हो गया और उसका बेटा विवाह करने चला गया। लेकिन उस साहूकारनी ने तिलकुट नहीं किया। इस कारण से चौथ देव क्रोधित हो गये और उन्होंने फेरो से उसके बेटे को उठाकर पीपल के पेड़ पर बिठा दिया। सभी वर को खोजने लगे पर वो नहीं मिला, हताश हो कर सरे लोग अपने अपने घर को लोट गए। इधर जिस लड़की से साहूकारनी के लड़के का विवाह होने वाला था, वह अपनी सहेलियों के साथ गणगौर पूजने के लिए जंगल में दूब लेने गयी।

तभी रस्ते में पीपल के पेड़ से आवाज आई–'ओ मेरी अर्धब्यहि' यह बात सुनकर जब लड़की घर आयी उसके बाद वह धीरे-धीरे सुख कर काँटा होने लगी। एक दिन लड़की की माँ ने कहा–'में तुम्हे अच्छा खिलाती हूँ, अच्छा पहनाती हूँ, फिर भी तू सूखती जा रही है ? ऐसा क्यों ?' तब लड़की अपनी माँ से बोली–'वह जब भी दूब लेने जंगल जाती है, तो पीपल के पेड़ से एक आदमी बोलता है की ओ मेरी अर्धब्यहि। उसने मेहँदी लगा रखी है और सेहरा भी बबाँध रखा है।' तब उसकी माँ ने पीपल के पेड़ के पास जा कर देखा कि यह तो उसका जमाई है। तब उसकी माँ ने जमाई से कहा–'यहाँ क्यों बैठा है ? मेरी बेटी तो अर्धब्यहि कर दी और अब क्या लेगा ?'

साहूकारनी का बेटा बोलै–'मेरी माँ ने चौथ का तिलकुट बोला था लेकिन नहीं किया, इस लिए चौथ माता ने नाराज हो कर यहाँ बैठा दिया।' यह सुनकर उस लड़की की माँ साहूकारनी के घर गई और उससे पूछा–'तुमने सकट चौथ का कुछ बोला है क्या ?' तब साहूकारनी बोली–'तिलकुट बोला था।' उसके बाद साहूकारनी बोली–'मेरा बेटा घर आ जाये, तो ढाई मन का तिलकुट करूँगी।'

इससे श्री गणेश भगवन प्रसन्न हो गए और उसके बेटे को फेरों में ला कर बैठा दिया। बेटे का विवाह धूम धाम से हो गया। जब साहूकारनी के बेटे बहु घर को आ गए तब साहूकारनी ने ढाई मन तिलकुट किया और बोली–'हे चौथ देव ! आप के आशीर्वाद से मेरे बेटा बहु घर आये है, जिससे में हमेशा तिलकुट करके व्रत करूँगी।' इसके बाद सारे नगर वासियो ने तिलकुट के साथ सकट व्रत करना प्रारम्भ कर दिया।

हे सकट चौथ जिस तरह साहूकारनी को बेटे बहु से मिलवाया, वैसे हम सब को मिलवाना। इस कथा को कहने सुनने वालो का भला करना।

बोलो सकट चौथ की जय। श्री गणेश देव की जय।

कथा - 2 एक बार महादेवजी पार्वती सहित नर्मदा के तट पर गए। वहाँ एक सुन्दर स्थान पर पार्वतीजी ने महादेवजी के साथ चौपड़ खेलने की इच्छा व्यक्त की। तब शिवजी ने कहा–'हमारी हार-जीत का साक्षी कौन होगा ?' पार्वती ने तत्काल वहाँ की घास के तिनके बटोरकर एक पुतला बनाया और उसमें प्राण-प्रतिष्ठा करके उससे कहा–'बेटा ! हम चौपड़ खेलना चाहते हैं, किन्तु यहाँ हार-जीत का साक्षी कोई नहीं है। अतः खेल के अन्त में तुम हमारी हार-जीत के साक्षी होकर बताना कि हममें से कौन जीता, कौन हारा ?'

खेल आरम्भ हुआ। दैवयोग से तीनों बार पार्वतीजी ही जीतीं। जब अन्त में बालक से हार-जीत का निर्णय कराया गया तो उसने महादेवजी को विजयी बताया। परिणामतः पार्वतीजी ने क्रुद्ध होकर उसे एक पाँव से लंगड़ा होने और वहाँ के कीचड़ में पड़ा रहकर दुःख भोगने का शाप दे दिया।

बालक ने विनम्रतापूर्वक कहा–'माँ ! मुझसे अज्ञानवश ऐसा हो गया है। मैंने किसी कुटिलता या द्वेष के कारण ऐसा नहीं किया। मुझे क्षमा करें तथा शाप से मुक्ति का उपाय बताएँ।' तब ममतारूपी माँ को उस पर दया आ गई और वे बोलीं–'यहाँ नाग-कन्याएँ गणेश-पूजन करने आएँगी। उनके उपदेश से तुम गणेश व्रत करके मुझे प्राप्त करोगे।' इतना कहकर वे कैलाश पर्वत चली गईं।

एक वर्ष बाद वहाँ श्रावण में नाग-कन्याएँ गणेश पूजन के लिए आईं। नाग-कन्याओं ने गणेश व्रत करके उस बालक को भी व्रत की विधि बताई। तत्पश्चात बालक ने 12 दिन तक श्रीगणेशजी का व्रत किया। तब गणेशजी ने उसे दर्शन देकर कहा–'मैं तुम्हारे व्रत से प्रसन्न हूँ। मनोवांछित वर माँगो।' बालक बोला–'भगवन ! मेरे पाँव में इतनी शक्ति दे दो कि मैं कैलाश पर्वत पर अपने माता-पिता के पास पहुँच सकूँ और वे मुझ पर प्रसन्न हो जाएँ।'

गणेशजी 'तथास्तु' कहकर अंतर्धान हो गए। बालक भगवान शिव के चरणों में पहुँच गया। शिवजी ने उससे वहाँ तक पहुँचने के साधन के बारे में पूछा। तब बालक ने सारी कथा शिवजी को सुना दी। उधर उसी दिन से अप्रसन्न होकर पार्वती शिवजी से भी विमुख हो गई थीं। तदुपरान्त भगवान शंकर ने भी बालक की तरह 21 दिन पर्यन्त श्रीगणेश का व्रत किया, जिसके प्रभाव से पार्वती के मन में स्वयं महादेवजी से मिलने की इच्छा जाग्रत हुई।

वे शीघ्र ही कैलाश पर्वत पर आ पहुँची। वहाँ पहुँचकर पार्वतीजी ने शिवजी से पूछा–'भगवन ! आपने ऐसा कौन-सा उपाय किया जिसके फलस्वरूप मैं आपके पास भागी-भागी आ गई हूँ।' शिवजी ने 'गणेश व्रत' का इतिहास उनसे कह दिया।

तब पार्वतीजी ने अपने पुत्र कार्तिकेय से मिलने की इच्छा से 21 दिन पर्यन्त 21-21 की संख्या में दूर्वा, पुष्प तथा लड्डुओं से गणेशजी का पूजन किया। 21वें दिन कार्तिकेय स्वयं ही पार्वतीजी से आ मिले। उन्होंने भी माँ के मुख से इस व्रत का माहात्म्य सुनकर व्रत किया।

बोलो सकट चौथ की जय। श्री गणेश देव की जय।

कथा - 03 एक शहर में देवरानी जेठानी रहती थी। जेठानी अमीर थी और देवरानी गरीब थी। देवरानी गणेश जी की भक्त थी। देवरानी का पति जंगल से लकड़ी काट कर बेचता था और अक्सर बीमार रहता था। देवरानी जेठानी के घर का सारा काम करती और बदले में जेठानी बचा हुआ खाना, पुराने कपड़े आदि उसको दे देती थी। इसी से देवरानी का परिवार चल रहा था।

माघ महीने में देवरानी ने तिल चौथ का व्रत किया। पाँच रूपये का तिल व गुड़ लाकर तिलकुट्टा बनाया। पूजा करके तिल चौथ की कथा (तिल चौथ की कहानी) सुनी और तिलकुट्टा छींके में रख दिया और सोचा की चाँद उगने पर पहले तिलकुट्टा और उसके बाद ही कुछ खायेगी।

कथा सुनकर वह जेठानी के यहाँ चली गई। खाना बनाकर जेठानी के बच्चों से खाना खाने को कहा तो बच्चे बोले–'माँ ने व्रत किया हैं और माँ भूखी हैं। जब माँ खाना खायेगी हम भी तभी खाएंगे।' जेठजी को खाना खाने को कहा तो जेठजी बोले–'मैं अकेला नही खाऊँगा, जब चाँद निकलेगा तब सब खाएंगे तभी मैं भी खाऊँगा।' जेठानी ने उसे कहा–'आज तो किसी ने भी अभी तक खाना नहीं खाया तुम्हें कैसे दे दूँ ? तुम सुबह सवेरे ही बचा हुआ खाना ले जाना।'

देवरानी के घर पर पति, बच्चे सब आस लगाए बैठे थे कि आज तो त्यौहार हैं इसलिए कुछ पकवान आदि खाने को मिलेगा। परन्तु जब बच्चों को पता चला कि आज तो रोटी भी नहीं मिलेगी तो बच्चे रोने लगे। उसके पति को भी बहुत गुस्सा आया कहने लगा–'सारा दिन काम करके भी दो रोटी नहीं ला सकती तो काम क्यों करती हो ?' पति ने गुस्से में आकर पत्नी को कपड़े धोने के धोवने से मारा। धोवना हाथ से छूट गया तो पाटे से मारा। वह बेचारी गणेश जी को याद करती हुई रोते-रोते पानी पीकर सो गयी।

उस दिन गणेश जी देवरानी के सपने में आये और कहने लगे–'धोवने मारी पाटे मारी सो रही है या जाग रही है।' वह बोली–'कुछ सो रही हूँ, कुछ जाग रही हूँ।' गणेश जी बोले–'भूख लगी है, कुछ खाने को दे।' देवरानी बोली–'क्या दूँ, मेरे घर में तो अन्न का एक दाना भी नहीं है। जेठानी बचा खुचा खाना देती थी आज वो भी नहीं मिला। पूजा का बचा हुआ तिल कुट्टा छींके में पड़ा हैं वही खा लो।'

तिलकुट्टा खाने के बाद गणेश जी बोले–'धोवने मारी पाटे मारी निमटाई लगी है, कहाँ निमटें।' वो बोली–'ये पड़ा घर, जहाँ इच्छा हो वहाँ निमट लो।' फिर गणेश जी बोले–'अब कहाँ पोंछू।' अब देवरानी को बहुत गुस्सा आया कि कब के तंग करे जा रहे है, सो बोली–'मेरे सर पर पोंछो और कहाँ पोंछोगे।'

सुबह जब देवरानी उठी तो यह देखकर हैरान रह गई कि पूरा घर हीरे-मोती से जगमगा रहा है, सिर पर जहाँ बिनायकजी पोंछनी कर गये थे वहाँ हीरे के टीके व बिंदी जगमगा रहे थे।

उस दिन देवरानी जेठानी के काम करने नहीं गई। बड़ी देर तक राह देखने के बाद जेठानी ने बच्चो को देवरानी को बुलाने भेजा। जेठानी ने–'सोचा कल खाना नहीं दिया इसीलिए शायद देवरानी बुरा मान गई है।' बच्चे बुलाने गए और बोले–'चाची चलो माँ ने बुलाया है सारा काम पड़ा हैं।' दुनिया में चाहे कोई मौका चूक जाए पर देवरानी जेठानी आपस में कहने का मौके नहीं छोड़ती। देवरानी ने कहा–'बेटा बहुत दिन तेरी माँ के यहाँ काम कर लिया, अब तुम अपनी माँ को ही मेरे यहाँ काम करने भेज दो।'

बच्चो ने घर जाकर माँ को बताया कि चाची का तो पूरा घर हीरे मोतियों से जगमगा रहा है। जेठानी दौड़ती हुई देवरानी के पास आई और पूछा–'ये सब हुआ कैसे ?' देवरानी ने उसके साथ जो हुआ वो सब कह डाला।

घर लौटकर जेठानी अपने पति से कहा–'आप मुझे धोवने और पाटे से मारो।' उसका पति बोला–'भलीमानस मैंने कभी तुम पर हाथ भी नहीं उठाया। मैं तुम्हें धोवने और पाटे से कैसे मार सकता हूँ।' वह नहीं मानी और जिद करने लगी। मजबूरन पति को उसे मारना पड़ा।

उसने ढ़ेर सारा घी डालकर चूरमा बनाया और छीकें में रखकर और सो गयी। रात को चौथ विनाययक जी सपने में आये कहने लगे–'भूख लगी है, क्या खाऊँ ?' जेठानी ने कहा–'हे गणेश जी महाराज, मेरी देवरानी के यहाँ तो आपने सूखा चूँटी भर तिलकुट्टा खाया था, मैने तो झरते घी का चूरमा बनाकर आपके लिए छींके में रखा है, फल और मेवे भी रखे हैं जो चाहें खा लीजिये।' गणेश जी बोले–'अब निपटे कहाँ ?' जेठानी बोली–'उसके यहाँ तो टूटी फूटी झोंपड़ी थी मेरे यहाँ तो कंचन के महल हैं जहाँ चाहो निपटो।' फिर गणेश जी ने पूछा–'अब पोंछू कहाँ ?' जेठानी बोली–'मेरे ललाट पर बड़ी सी बिंदी लगाकर पोंछ लो।'

धन की भूखी जेठानी सुबह बहुत जल्दी उठ गयी। सोचा घर हीरे जवाहरात से भर चुका होगा पर देखा तो पूरे घर में गन्दगी फैली हुई थी। तेज बदबू आ रही थी। उसके सिर पर भी बहुत सी गंदगी लगी हुई थी। उसने कहा–'हे गणेश जी महाराज, ये आपने क्या किया ? मुझसे रूठे और देवरानी पर टूटे।' जेठानी ने घर और सिर की सफाई करने की बहुत ही कोशिश की, परन्तु गंदगी और ज्यादा फैलती गई। जेठानी के पति को मालूम चला तो वह भी बहुत गुस्सा हुआ और बोला तेरे पास इतना सब कुछ था, फिर भी तेरा मन नहीं भरा।

परेशान होकर चौथ के बिनायक जी (गणेशजी) से मदद की विनती करने लगी। बिनायक जी ने कहा–'देवरानी से जलन के कारण तूने जो किया था यह उसी का फल है। अब तू अपने धन में से आधा उसे देगी तभी यह सब साफ होगा।'

उसने आधा धन बाँट दिया किन्तु मोहरों की एक हांडी चूल्हे के नीचे गाढ़ रखी थी। उसने सोचा किसी को पता नहीं चलेगा और उसने उस धन को नहीं बाँटा। उसने कहा–'हे चौथ बिनायक जी, अब तो अपना यह बिखराव समेटो।' वे बोले–'पहले चूल्हे के नीचे गाढ़ी हुयी मोहरो की हाँडी सहित ताक में रखी दो सुई की भी पांति कर।' इस प्रकार बिनायकजी ने सुई जैसी छोटी चीज का भी बंटवारा करवाकर अपनी माया समेटी।

हे गणेश जी महाराज, जैसी आपने देवरानी पर कृपा करी वैसी सब पर करना। कहानी कहने वाले, सुनने वाले व हुंकारा भरने वाले सब पर कृपा करना। किन्तु जेठानी को जैसी सजा दी वैसी किसी को मत देना।

बोलो सकट चौथ की जय। श्री गणेश देव की जय, "ॐ गं गणपतये नम"

घर / कार्यालय और स्वयं की नकारात्मक ऊर्जा जाँचने के शास्त्रसम्मत, सुरक्षित और स्वयं करने योग्य उपाय

पिंकी कुंडू

घर की नकारात्मक ऊर्जा जाँचने के शास्त्रसम्मत, सुरक्षित और स्वयं करने योग्य उपाय दिए जा रहे हैं। इनमें कोई हानि-कारक तंत्र नहीं है — ये केवल ऊर्जा की स्थिति पहचानने के संकेत हैं।

1. कपूर जाँच विधि (सबसे सरल व प्रभावी)
* विधि
* शाम के समय (सूर्यास्त के बाद)
* घर के मध्य भाग में
* एक चाँदी या स्टील की कटोरी में कपूर जलाएँ
* संकेत
* कपूर पूरी तरह साफ जल जाए ⟶ ऊर्जा सामान्य
* कपूर बार-बार बुझ जाए / धुआँ अधिक हो ⟶ नकारात्मकता
* काला धुआँ या चटकना ⟶ भारी नकारात्मक ऊर्जा

2. नमक जाँच विधि (24 घंटे की) विधि
* एक काँच की कटोरी में सेंधा नमक भरें
* इसे सोने के कमरे या बैठक में रखें
* 24 घंटे बाद देखें
* संकेत
* नमक वैसा ही रहे ⟶ नकारात्मकता कम
* नमक गीला / पिघला / चिपचिपा ⟶ नकारात्मक ऊर्जा
* बदबू आए ⟶ तुरंत उपाय आवश्यक
* नमक को बाद में घर से बाहर बहते जल में प्रवाहित करें

3. दीपक लौ परीक्षण
* विधि
* सरसों या गाय के घी का दीपक
* बिना हवा वाले स्थान पर जलाएँ
* संकेत
* लौ स्थिर ⟶ ऊर्जा शुद्ध
* लौ नाचती / टेढ़ी ⟶ मानसिक अशांति
* काली कालिख ⟶ नकारात्मक प्रभाव

4. तुलसी पत्ता परीक्षण (प्राचीन विधि)
* विधि
* एक ताज़ा तुलसी पत्ता घर के मंदिर में रखें
* संकेत (24 घंटे में)
* हरा रहे ⟶ शुभ ऊर्जा
* सूख जाए / काला हो ⟶ नकारात्मकता
* गिर जाए ⟶ वास्तु दोष या अशांति

5. बच्चों व पशुओं का व्यवहार (प्राकृतिक संकेत)
* संकेत
* बच्चों का अकारण डरना / रोना
* पालतू कुत्ते का एक जगह देखकर भौंकना
* बिल्ली का बार-बार किसी कोने से भागना
* यह सब सूक्ष्म नकारात्मक ऊर्जा के संकेत हो सकते हैं

6. स्वप्न व नींद संकेत
* बार-बार डरावने सपने
* नींद में घबराहट
* सुबह उठते ही भारीपन
* घर की ऊर्जा असंतुलित होने का संकेत

7. मंत्र कंपन परीक्षण (उच्च स्तर का)
* विधि घर में बैठकर ज़ोर से बोलें: ॐ नमः शिवाय
* संकेत
* मन शांत हो ⟶ ऊर्जा ठीक
* घुटन, बेचैनी ⟶ नकारात्मकता
* आवाज भारी लगे ⟶ शुद्धि आवश्यक

यदि नकारात्मकता पाई जाए तो त्वरित उपाय
* रोज़ संध्या कपूर जलाएँ
* शनिवार को झाड़ू में नमक डालकर घर साफ करें
* उत्तर-पूर्व में गंगाजल छिड़काव
* रोज़ 1 बार हनुमान चालीसा या शिव मंत्र का जाप

पुनर्नवा (Boerhavia diffusa), आयुर्वेद में अमृत और रामबाण औषधि

आयुर्वेद में अनेक ऐसे पौधों और जड़ी-बूटियों का उल्लेख मिलता है, जो सेहत के लिए बेहद लाभकारी माने जाते हैं। इनमें मौजूद औषधीय तत्व शरीर को भीतर से मजबूत बनाते हैं और कई प्रकार की बीमारियों से बचाने की क्षमता रखते हैं।

इन्हीं चमत्कारी औषधीय पौधों में से एक है पुनर्नवा (Boerhavia diffusa)। आयुर्वेद में इसे अमृत और रामबाण औषधि की संज्ञा दी गई है। यह किडनी से लेकर हृदय तक को स्वस्थ रखने के लिए जानी जाती है।

पुनर्नवा के चमत्कारिक औषधीय फायदे जानिए —

1. किडनी रोगों में लाभकारी :- पुनर्नवा को आयुर्वेद में किडनी के लिए सबसे प्रभावशाली औषधियों में से एक माना गया है। इसमें मूत्रवर्धक गुण पाए जाते हैं, जो शरीर में जमा अतिरिक्त पानी, विषैले तत्व और अपशिष्ट पदार्थों को बाहर निकालने में मदद करते हैं। किडनी की सूजन, पेशाब में जलन, मूत्र संक्रमण और किडनी की कार्यक्षमता कमजोर होने जैसी समस्याओं में पुनर्नवा का विशेष महत्व है।

२. हार्ट हेल्थ के लिए प्राकृतिक टॉनिक :- पुनर्नवा हृदय स्वास्थ्य के लिए भी लाभकारी मानी जाती है। यह शरीर में जल संतुलन बनाए रखती है, जिससे हृदय पर अतिरिक्त दबाव नहीं पड़ता। रक्त संचार को बेहतर बनाकर यह हार्ट को मजबूत करती है, इसलिए इसे हार्ट और किडनी दोनों के लिए प्राकृतिक टॉनिक कहा जाता है।

3. लीवर की सुरक्षा और पीलिया में लाभ :- इस जड़ी-बूटी में लीवर को सुरक्षित रखने वाले गुण भी पाए जाते हैं। पुनर्नवा लीवर की कोशिकाओं को क्षति से बचाने में मदद करती है और पीलिया, फैटी लीवर तथा लीवर की कमजोरी जैसी समस्याओं में उपयोगी मानी जाती है। आयुर्वेद में इसे लिवर डिटॉक्स करने वाली औषधि के रूप में भी देखा जाता है।

4. सूजन और दर्द में राहत :- पुनर्नवा दर्द और सूजन को कम करने में भी प्रभावी है। इसमें एंटी-इन्फ्लेमेटरी गुण होते हैं, जो जोड़ों के दर्द, गठिया, शरीर में सूजन और अंदरूनी चोट के दर्द में राहत प्रदान करते हैं। नियमित रूप से सही मात्रा में सेवन करने पर यह पुराने दर्द में भी लाभ पहुंचा सकती है।

5. डायबिटीज कंट्रोल में सहायक :- डायबिटीज के रोगियों के लिए भी पुनर्नवा को लाभकारी माना गया है। इसमें मौजूद हैग्नीशियम ब्लड शुगर को नियंत्रित रखने में मदद करता है और इंसुलिन की कार्यक्षमता को बेहतर बनाता है। इसी कारण आयुर्वेद में इसे मधुमेह नियंत्रण में सहायक औषधियों में शामिल किया गया है।

6. इम्युनिटी बढ़ाने में मददगार :- पुनर्नवा रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में भी मदद करती है। इसके इम्यूनो-मॉड्यूलेटरी गुण शरीर को संक्रमणों से लड़ने की शक्ति देते हैं और बार-बार होने वाली बीमारियों से बचाव करते हैं।

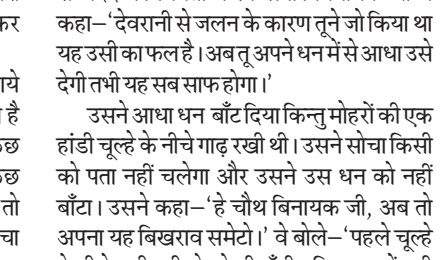

यह शरीर को भीतर से मजबूत बनाकर संपूर्ण स्वास्थ्य में सुधार करती है।

7. अस्थमा और सांस संबंधी रोग :- यह जड़ी-बूटी श्वसन तंत्र के लिए भी लाभकारी है। आयुर्वेद में इसका उपयोग अस्थमा, खांसी और सांस फूलने जैसी समस्याओं में किया जाता है, क्योंकि यह कफ को कम करने और फेफड़ों को मजबूत बनाने में सहायक होती है।

8. पेट और पाचन संबंधी लाभ :- पाचन तंत्र के लिए भी पुनर्नवा उपयोगी मानी जाती है। यह कब्ज, गैस, अपच और पेट में कीड़ों जैसी समस्याओं में राहत देती है और पाचन शक्ति को बढ़ाती है। इसके सेवन से आंतों की सफाई होती है और पेट हल्का महसूस होता है।

9. आंखों के लिए लाभकारी :- आंखों से जुड़ी समस्या रतौंधी में भी पुनर्नवा लाभ पहुंचाती है। आयुर्वेद के अनुसार इसकी जड़ का रस आंखों की कमजोरी को दूर करने में सहायक होता है।

10. त्वचा रोग और खून की कमी :- यह त्वचा रोगों, फोड़े-फुंसी और एनीमिया यानी खून की कमी में भी उपयोगी मानी जाती है, क्योंकि यह रक्त को शुद्ध करने में मदद करती है।

पुनर्नवा इस्तेमाल करने का तरीका —
* पुनर्नवा का सबसे आम उपयोग काढ़े के रूप में किया जाता है। इसके लिए 1 चम्मच सूखी जड़ या पौधे को 1–२ कप पानी में उबालकर आधा रहने पर छान लें और दिन में 1 बार पिएँ। यह किडनी और सूजन की समस्या में लाभकारी होता है।
* पुनर्नवा को चूर्ण (पाउडर) के रूप में भी लिया जा सकता है। आधा से एक चम्मच चूर्ण गुनगुने पानी के साथ दिन में 1–२ बार लिया जा सकता है।
* इसके ताज़े पौधे से निकाला गया रस भी उपयोगी होता है। 1–२ चम्मच रस सुबह या शाम को सेवन कर सकते है।

माँ कामाख्या मंदिर

पिंकी कुंडू

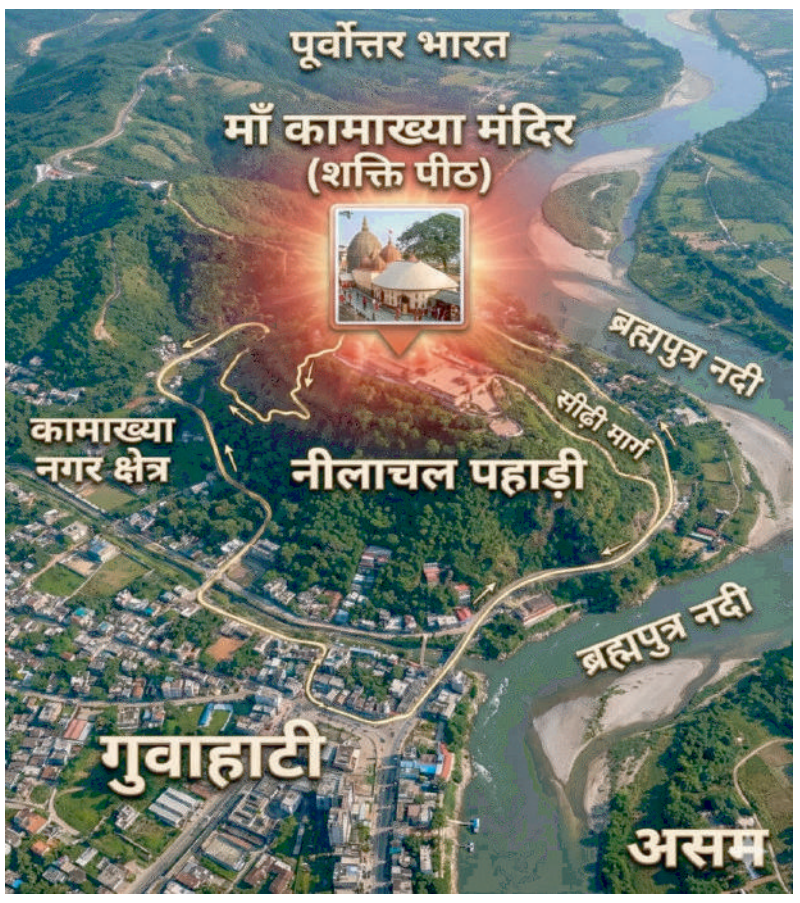

माँ कामाख्या मंदिर भारत के प्रमुख शक्ति पीठों में से एक है, जो असम के गुवाहाटी में नीलाचल पहाड़ी पर स्थित है।

यह मंदिर देवी सती के पवित्र अंग से जुड़ा माना जाता है और शक्ति उपासना का अत्यंत महत्वपूर्ण केंद्र है।

मंदिर की सबसे अनोखी विशेषता यह है कि यहाँ मूर्ति की पूजा नहीं, बल्कि देवी की योनि - शिला की आराधना की जाती है, जो सृजन और उर्वरता का प्रतीक है।

माँ कामाख्या मंदिर तांत्रिक साधना और शक्ति परंपरा का प्रमुख केंद्र माना जाता है।

हर वर्ष आयोजित होने वाला अंबुबाची मेला यहाँ का सबसे प्रसिद्ध आयोजन है, जिसमें देश-विदेश से लाखों श्रद्धालु और साधक आते हैं।

मंदिर परिसर से ब्रह्मपुत्र नदी का भव्य दृश्य दिखाई देता है, जो इस स्थान को आध्यात्मिक और प्राकृतिक—दोनों दृष्टि से विशेष बनाता है।

नवरात्र में 'नौ' ही क्यों? आठ या दस क्यों नहीं?

पिंकी कुंडू

इसके दो मुख्य कारण जान पड़ते हैं। पहली बात तो यह कि भारतीय दर्शन में 108 अंक अत्यंत पवित्र अंक माना जाता है।

योगियों ने सौरमार्ग को सत्ताइस बाराबर भागों में बाँटा है। जिन्हें नक्षत्र कहते हैं। प्रत्येक नक्षत्र को चार बाराबर पदों में बाँटा है। इनका गुणनफल 108 होता है। इस प्रकार माला के 108 मनकों का जाप करके भक्त सौरमार्ग की परिक्रमा पूरी कर लेता है।

108 का जोड़ होता है एक + आठ = नौ। इस नौ के अंक की खूबी यह है कि इस अंक का किसी भी संख्या से गुण किया जाये, तो उनका जोड़ नौ आएका। 9 * 2 =18, 1 + 8 = 9 । 15 * 9 = 135, 1 + 3 + 5 = 9। इस प्रकार नौ पूर्णता का प्रतिनिधित्व करता है।

पूर्ण मौन है ?:- मात्र ईश्वर पूर्ण है, ईश्वर को किसी से भी गुणा करो, परिणाम हमेशा ईश्वर ही रहता है। इसलिए नौ का अंक ईश्वर का प्रतिनिधितव करता है।

महान वैज्ञानिक आंइस्टीन का मानना था कि यह सम्पूर्ण जगत मूलतः ऊर्जा से बना हुआ है। पदार्थ ऊर्जा के ही संघटित रूप हैं पदार्थ को ऊर्जा में बदला जा सकता है, और ऊर्जा को पदार्थ में।

हमारे यहाँ देवी को ऊर्जा के ही रूप में देखा गया है। देवी यानी कि रचनात्मकता से भरपूर वह शक्ति, जिसमें जन्म देने की क्षमता है, कुछ नया बनाने की क्षमता है। विश्व के आदिकाल में जब ब्रह्मा को इस संसार की चरना करने की इच्छा हुई, तो उन्हें नारी शक्ति का आह्वान करना पड़ा था।

यही कारण है कि भारत ने विष्णु एवं शिव जैसे महाशक्तिशाली देवों के साथ पत्नियों का विधान किया, ताकि ऊर्जा अपनी सम्पूर्णता को प्राप्त कर सके।

नवरात्रि के नौ दिनों को तीन-तीन दिनों के तीन भागों में बाँटा गया है,

* प्रथम तीन दिनों में माँ दुर्गा की आराधना होती है। माँ दूर्गा ने महिषासुर का विनाश किया था। इस प्रकार ये तीन दिन हमें हमारे अंदर की आसुरी प्रवृत्तियों को समाप्त करने का संदेश देते हैं।

* आसुरी प्रवृत्तियां क्या है ? घोर स्वार्थ, हिंसा वृत्ति, क्रोध, बुराइयां, अपवित्रतायें तथा दुर्भावनाओं को आसुरी प्रवृत्तियां माना जाता है। वस्तुतः वे भावना और विचार जो नकारात्मक हों और ध्वंसात्मक हो, इस श्रेणी में आती हैं। ऊर्जा के रूप में माँ दुर्गा की आराधना हम इन निम्न वृत्तियों से युक्त होने का प्रयास करते हैं।

* बीच के तीन दिन लक्ष्मी देवी की पूजा-आर्चना के दिन होते हैं। लक्ष्मी जी को धन की देवी माना गया है, और इस धन में आध्यात्मिक धन भी शामिल है क्योंकि इसी आध्यात्मिक धन को पाकर हम 'धन्य' होते हैं। इस धन की प्राप्ति तभी संभव है, जब हम अपने अंदर की बुराइयों को बाहर कराके इसके लिए जगह बना लेते है। इस प्रकार लक्ष्मी की आराधना द्वारा हम स्वय को भौतिक एवं आध्यात्मिक सम्पत्ति के योग्य बनाने की साधना करते है।

* अंतिम तीन दिन ज्ञान की देवी सरस्वती को समप्रित हैं। ये मुलतः विवेक की देवी है। विवेक का अर्थ होता है - सही एवं गलत का निर्णय लेने की ज्ञान पूर्ण दृष्टि का होना। विवेक के अभाव में धन एवं शक्ति अहंकारी हो जाते हैं। माँ सरस्वती की आराधना हमें विवेक का प्रकाश प्रदान करके अपनी सम्पत्ति का समुचित उपयोग करके एक संतुलित जीवन जीने के लिए प्रेरित करती हैं।

इस प्रकार नवरात्र में आराधित इन दिनों देवियों की ऊर्जा हमारे भौतिक एवं आध्यात्मिक जीवन को सम्पूर्णता प्रदान करती है।

वैसे ही इस पृथ्वी पर ऐसा कौन व्यक्ति है, जो शक्ति नहीं चाहता, ऊर्जा नहीं चाहता?

देवी के रूप में हमारे यहाँ माँ गायत्री का नाम सबसे पहले आता है। उनकी आराधना के रूप में 'ॐ भूभुर्वः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यए भर्गो देवस्य धीमहि धीयो यो नः प्रचोदयात' मंत्र का जाप करना अत्यंत लोकप्रिय है। यहाँ भी मूलतः मातृ शक्ति के रूप में ऊर्जा का ही आह्वान किया गय है। ऊर्जा के इस आह्वान के केन्द्र में 'सूर्य' है। और सूर्या का भंडार है, जो विवेक प्रदान करता है।

इस प्रकार नवरात्रि का पर्व हमारे लिए स्वयं को धो-पोंछकर नवीन ऊर्जा को धारण करने योग्य बनाने का एक धार्मिक किन्तु अत्यंत वैज्ञानिक उपक्रम है। इस अवसर पर रखे जाने वाले उपवास का यही उद्देश्य है।

तुंगनाथ महादेव मंदिर उत्तराखंड

पिंकी कुंडू

तुंगनाथ महादेव मंदिर उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग जनपद में स्थित भगवान शिव का एक अत्यंत पवित्र धाम है और यह विश्व का सबसे ऊँचाई पर स्थित शिव मंदिर माना जाता है।

यह पंचकेदार में से एक है और समुद्र तल से लगभग 3,680 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है।

पौराणिक मान्यता के अनुसार, यहाँ भगवान शिव के भुजाओं (हाथों) की पूजा होती है। चोपता से लगभग 3 .5 किमी का सुंदर ट्रेक तय कर यहाँ पहुँचा जाता है, जहाँ से हिमालय की भव्य चोटियों और आध्यात्मिक शांति का अद्भुत अनुभव मिलता है।

ब्रह्म मुहूर्त में उठने की परंपरा क्यों ?

पिंकी कुंडू

रात्रि के अंतिम प्रहर को ब्रह्म मुहूर्त कहते हैं। हमारे ऋषि मुनियों ने इस मुहूर्त का विशेष महत्व बताया है। उनके अनुसार यह समय निद्रा त्याग के लिए सर्वोत्तम है। ब्रह्म मुहूर्त में उठने से सौंदर्य, बल, विद्या, बुद्धि और स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। सूर्योदय से चार घड़ी (लगभग डेढ़ घण्टे) पूर्व ब्रह्म मुहूर्त में ही जग जाना चाहिये। इस समय सोना शास्त्र निषिद्ध है।

ब्रह्म का मतलब परम तत्व या परमात्मा। मुहूर्त यानी अनुकूल समय। रात्रि का अंतिम प्रहर अर्थात प्रातः 4 से 5.30 बजे का समय ब्रह्म मुहूर्त कहा गया है।

"ब्रह्ममुहूर्ते या निद्रा सा पुण्यक्षयकारिणी"।

(ब्रह्ममुहूर्त की निद्रा पुण्य का नाश करने वाली होती है।)

सिख धर्म में इस समय के लिए बेहद सुन्दर नाम है-₹अमृत वेलाऱ, जिसके द्वारा इस समय का महत्व स्वयं ही साबित हो जाता है। ईश्वर भक्ति के लिए यह महत्व स्वयं ही साबित हो जाता है। ईवर भक्ति के लिए यह सर्वश्रेष्ठ समय है। इस समय उठने से मनुष्य को सौंदर्य, लक्ष्मी, बुद्धि, स्वास्थ्य आदि की प्राप्ति होती है। उसका मन शांत और तन पवित्र होता है।

ब्रह्म मुहूर्त में उठना हमारे जीवन के लिए बहुत लाभकारी है। इससे हमारा शरीर स्वस्थ होता है और दिनभर स्फूर्ति बनी रहती है। स्वस्थ रहने और सफल होने का यह ऐसा फार्मूला है जिसमें खर्च कुछ नहीं होता। केवल आलस्य छोड़ने की जरूरत है।

पौराणिक महत्व -- वाल्मीकि रामायण के मुताबिक माता सीता को ढूंढते हुए श्रीहनुमान ब्रह्ममुहूर्त में ही अशोक वाटिका पहुंचे। जहां उन्होंने वेद व यज्ञ के ज्ञाताओं के मंत्र उच्चारण की आवाज सुनी।

शास्त्रों में भी इसका उल्लेख है

वर्णं कीर्तिं मतिं लक्ष्मीं स्वास्थ्यमायुश्च विदन्ति।

ब्राह्मे मूहूर्ते संजाग्रच्छि वा पंकज यथा॥

अर्थात - ब्रह्म मुहूर्त में उठने से व्यक्ति को सुंदरता, लक्ष्मी, बुद्धि, स्वास्थ्य, आयु आदि की प्राप्ति होती है। ऐसा करने से शरीर कमल की तरह सुंदर हो जाता हे।

ब्रह्म मुहूर्त और प्रकृति ब्रह्म मुहूर्त और प्रकृति का गहरा नाता है। इस समय में पशु-पक्षी जाग जाते हैं। उनका मधुर कलरव शुरू हो जाता है। कमल का फूल भी खिल उठता है। मुर्गे बांग देने लगते हैं। एक तरह से प्रकृति भी ब्रह्म मुहूर्त में चैतन्य हो जाती है। यह प्रतीक है उठने, जागने का। प्रकृति हमें संदेश देती है ब्रह्म मुहूर्त में उठने के लिए।

इसलिए मिलती है सफलता व समृद्धि

* आयुर्वेद के अनुसार ब्रह्म मुहूर्त में उठकर टहलने से शरीर में संजीवनी शक्ति का संचार होता है। यही कारण है कि इस समय बहने वाली वायु को अमृततुल्य कहा गया है। इसके अलावा

* यह समय अध्ययन के लिए भी सर्वोत्तम बताया गया है क्योंकि रात को आराम करने के बाद सुबह जब हम उठते हैं तो शरीर तथा मस्तिष्क में भी स्फूर्ति व ताजगी बनी रहती है।

* प्रमुख मंदिरों के पट भी ब्रह्म मुहूर्त में खोल दिए जाते हैं तथा भगवान का श्रृंगार व पूजन भी ब्रह्म मुहूर्त में किए जाने का विधान है।

ब्रह्ममुहूर्त के धार्मिक, पौराणिक व व्यावहारिक पहलुओं और लाभ को जानकर हर रोज इस शुभ घड़ी में जागना शुरू करें तो बेहतर नतीजे मिलेंगे।

ब्रह्म मुहूर्त में उठने वाला व्यक्ति सफल, सुखी और समृद्ध होता है, क्यों? क्योंकि जल्दी उठने से दिनभर के कार्यों और योजनाओं को बनाने के लिए पर्याप्त समय मिल जाता है। इसलिए न केवल जीवन सफल होता है। शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहने वाला हर व्यक्ति सुखी और समृद्ध हो सकता है। कारण वह जो काम करता है उसमें उसकी प्रगति होती है। विद्यार्थी परीक्षा में सफल रहता है। जॉब (नौकरी) करने वाले से बॉस खुश रहता है। बिजनेसमैन अच्छी कमाई कर सकता है। बीमार आदमी की आय तो प्रभावित होती ही है, उल्टे खर्च बढने लगता है। सफलता उसी के कदम चूमती है जो समय का सदुपयोग करे और स्वस्थ रहे। अतः स्वस्थ और सफल रहना है तो ब्रह्म मुहूर्त में उठें।

वेदों में भी ब्रह्म मुहूर्त में उठने का महत्व और उससे होने वाले लाभ का उल्लेख किया गया है।

प्रातारत्नं प्रातरिष्वा दधाति तं चिकित्वा प्रतिगृह्यनिधत्तो।

तेन प्रजां वर्धयमान आयू रायस्पोषेण सचेत सुवीरः॥ - ऋग्वेद-1/125/1

अर्थात - सुबह सूर्य उदय होने से पहले उठने वाले व्यक्ति का स्वास्थ्य अच्छा रहता है। इसीलिए बुद्धिमान लोग इस समय को व्यर्थ नहीं गंवाते। सुबह जल्दी उठने वाला व्यक्ति स्वस्थ, सुखी, ताकतवाला और दीर्घायु होता है।

यद्य सूर उदितोऽनागा मित्रोऽर्यमा। सुवाति

सविता भगः॥ - सामवेद-35

अर्थात - व्यक्ति को सुबह सूर्योदय से पहले शौच व स्नान कर लेना चाहिए। इसके बाद भगवान की पूजा-अर्चना करना चाहिए। इस समय की शुद्ध व निर्मल हवा से स्वास्थ्य और संपत्ति की वृद्धि होती है।

उद्यन्त्सूर्यं इव सुप्तानां द्विषतां वर्च आददे।

अथर्ववेद- 7/16/२

अर्थात - सूरज उगने के बाद भी जो नहीं उठते या जागते उनका तेज खत्म हो जाता है।

व्यावहारिक महत्व - व्यावहारिक रूप से अच्छी सेहत, ताजगी और ऊर्जा पाने के लिए ब्रह्ममुहूर्त बेहतर समय है। क्योंकि रात की नींद के बाद पिछले दिन की शारीरिक और मानसिक थकान उतर जाने पर दिमाग शांत और स्थिर रहता है। वातावरण और हवा भी स्वच्छ होती है। ऐसे में देव उपासना, ध्यान, योग, पूजा तन, मन और बुद्धि को पुष्ट करते हैं।

जैविक घड़ी पर आधारित शरीर की दिनचर्या

प्रातः 3 से 5 – इस समय जीवनी-शक्ति विशेष रूप से फेफड़ों में होती है। थोड़ा गुनगुना पानी पीकर खुली हवा में घूमना एवं प्राणायाम करना । इस समय दीर्घ श्वसन करने से फेफड़ों की कार्यक्षमता खूब विकसित होती है। उन्हें शुद्ध वायु (आक्सीजन) और ऋण आयन विपुल मात्रा में मिलने से शरीर स्वस्थ व स्फूर्तिमान होता है। ब्रह्म मुहूर्त में उठने वाले लोग बुद्धिमान व उत्साही होते है, और सोते रहने वालों का जीवन निस्तेज हो जाता है ।

प्रातः 5 से 7 – इस समय जीवनी-शक्ति विशेष रूप से आंत में होती है। प्रातः जागरण से लेकर सुबह 7 बजे के बीच मल-त्याग एवं स्नान का लेना चाहिए । सुबह 7 के बाद जो मल-त्याग करते है उनकी आँतें मल में से त्याज्य द्रवांश का शोषण कर मल को सुखा देती हैं। इससे कब्ज तथा कई अन्य रोग उत्पन्न होते हैं।

प्रातः 7 से 9 – इस समय जीवनी-शक्ति विशेष रूप से आमाशय में होती है। यह समय भोजन के लिए उपर्युक्त है । इस समय पाचक रस अधिक बनते हैं। भोजन के बीच-बीच में गुनगुना पानी (अनुकूलता अनुसार) घूँट-घूँट पिये।

प्रातः 11 से 1 – इस समय जीवनी-शक्ति विशेष रूप से हृदय में होती है।

दोपहर 12 बजे के आस–पास मध्याह्न – संध्या (आराम) करने की हमारी संस्कृति में विधान है। इसी लिए भोजन वर्जित है । इस समय तरल पदार्थ ले सकते है। जैसे मट्ठा पी सकते है। दही खा सकते है ।

दोपहर 1 से 3 -- इस समय जीवनी-शक्ति विशेष रूप से छोटी आंत में होती है। इसका कार्य आहार से मिले पोषक तत्त्वों का अवशोषण व व्यर्थ पदार्थों को बड़ी आँत की ओर धकेलना है। भोजन के बाद प्यास अनुरूप पानी पीना चाहिए । इस समय भोजन करने अथवा सोने से पोषक आहार-रस के शोषण में अवरोध उत्पन्न होता है व शरीर रोगी तथा दुर्बल हो जाता है ।

दोपहर 3 से 5 -- इस समय जीवनी-शक्ति विशेष रूप से मूत्राशय में होती है । 2-4 घंटे पहले पिये पानी से इस समय मूत्र-त्याग की प्रवृति होती है।

शाम 5 से 7 -- इस समय जीवनी-शक्ति विशेष रूप से गुर्दे में होती है । इस समय हल्का भोजन कर लेना चाहिए । शाम को सूर्यास्त से 40 मिनट पहले भोजन कर लेना उत्तम रहेगा। सूर्यास्त के 10 मिनट पहले से 10 मिनट बाद तक (संध्याकाल) भोजन न करे। शाम को भोजन के तीन घंटे बाद दूध पी सकते है । देर रात को किया गया भोजन सुस्ती लाता है यह अनुभवगम्य है।

रात्री 7 से 9 -- इस समय जीवनी-शक्ति विशेष रूप से मस्तिष्क में होती है । इस समय मस्तिष्क विशेष रूप से सक्रिय रहता है । अतः प्रातःकाल के अलावा इस काल में पढ़ा हुआ पाठ जल्दी याद रह जाता है । आधुनिक अन्वेषण से भी इसकी पुष्टी हुई है।

रात्री 9 से 11 -- इस समय जीवनी-शक्ति विशेष रूप से रीढ़ की हड्डी में स्थित मेरुरज्जु में होती है। इस समय पीठ के बल या बायीं करवट लेकर विश्राम करने से मेरूरज्जु को प्राप्त शक्ति को ग्रहण करने में मदद मिलती है। इस समय की नींद सर्वाधिक विश्रांति प्रदान करती है । इस समय का जागरण शरीर व बुद्धि को थका देता है । यदि इस समय भोजन किया जाय तो वह सुबह तक जठर में पड़ा रहता है, पचता नहीं और उसके सड़ने से हानिकारक द्रव्य पैदा होते हैं जो अम्ल (एसिड) के साथ आँतों में जाने से रोग उत्पन्न करते हैं। इसलिए इस समय भोजन करना खतरनाक है।

रात्री 11 से 1 -- इस समय जीवनी-शक्ति विशेष रूप से पित्ताशय में होती है । इस समय का जागरण पित्त-विकार, अनिद्रा , नेत्ररोग उत्पन्न करता है व बुढ़ापा जल्दी लाता है । इस समय नई कोशिकाएं बनती है ।

रात्री 1 से 3 -- इस समय जीवनी-शक्ति विशेष रूप से लीवर में होती है । अन्न का सूक्ष्म पाचन करना यह यकृत का कार्य है। इस समय का जागरण यकृत (लीवर) व पाचन-तंत्र को बिगाड़ देता है । इस समय यदि जागते रहे तो शरीर नींद के वशीभूत होने लगता है, दृष्टि मंद होती है और शरीर की प्रतिक्रियाएं मंद होती हैं। अतः इस समय सड़क दुर्घटनाएँ अधिक होती हैं।

नोट :-

* ऋषियों व आयुर्वेदाचार्यों ने बिना भूख लगे भोजन करना वर्जित बताया है। अतः प्रातः एवं शाम के भोजन की मात्रा ऐसी रखे, जिससे ऊपर बताए भोजन के समय में खुलकर भूख लगे।

* जमीन पर कुछ बिछाकर सुखासन में बैठकर ही भोजन करें। इस आसन में मूलाधार चक्र सक्रिय होने से जठराग्नि प्रदीप्त रहती है।

* कुर्सी पर बैठकर भोजन करने में पाचनशक्ति कमजोर तथा

* खड़े होकर भोजन करने से तो बिल्कुल नहींवत्हो जाती है। इसलिए 'बुफे डिनर' से बचना चाहिए।

पृथ्वी के चुम्बकीय क्षेत्र का लाभ लेने हेतु सिर पूर्व या दक्षिण दिशा में करके ही सोयें, अन्यथा अनिद्रा जैसी तकलीफें होती हैं।

शरीर की जैविक घड़ी को ठीक ढंग से चलाने हेतु रात्रि को बत्ती बंद करके सोयें। इस संदर्भ में हुए शोध चौंकाने वाले हैं। देर रात तक कार्य या अध्ययन करने से और बत्ती चालू रख के सोने से जैविक घड़ी निष्क्रिय होकर भयंकर स्वास्थ्य-संबंधी हानियाँ होती हैं। अँधेरे में सोने से यह जैविक घड़ी ठीक ढंग से चलती है।

आजकल पाये जाने वाले अधिकांश रोगों का कारण अस्त-व्यस्त दिनचर्या व विपरीत आहार ही है। हम अपनी दिनचर्या शरीर की जैविक घड़ी के अनुरूप बनाये रखें तो शरीर के विभिन्न अंगों की सक्रियता का हमें अनायास ही लाभ मिलेगा। इस प्रकार थोड़ी-सी सजगता हमें स्वस्थ जीवन की प्राप्ति करा देगी।

सब सुखी और निरोगी हों !!

रूसी तेल आयात को लेकर अमेरिका की भारत को टैरिफ बढ़ाने की चेतावनी

संगिनी घोष विशेष संवाददाता
परिवहन विशेष

संयुक्त राज्य अमेरिका ने भारत को चेतावनी दी है कि यदि भारत रूस से बड़ी मात्रा में तेल खरीदना जारी रखता है, तो अमेरिकी सरकार भारतीय वस्तुओं पर आयात शुल्क (टैरिफ) बढ़ा सकती है। पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने हाल ही में यह बयान दिया, जिससे दोनों देशों के बीच व्यापारिक तनाव बढ़ने की आशंका है।

डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि अमेरिका और भारत के बीच अच्छे संबंध हैं और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ उनकी सकारात्मक बातचीत रही है, लेकिन अमेरिका भारत द्वारा रूस से तेल खरीदने को लेकर असंतुष्ट है। उन्होंने यह भी कहा कि यदि भारत ने रूसी तेल आयात कम नहीं किया, तो अमेरिका बहुत जल्द भारतीय उत्पादों पर टैरिफ बढ़ा सकता है, जिससे अमेरिका में भारतीय सामान महंगे हो जाएंगे।

यह चेतावनी ऐसे समय पर आई है जब भारत सस्ता रूसी तेल खरीदकर ईंधन की कीमतों को नियंत्रित करने और महंगाई को कम रखने की कोशिश कर रहा है। वहीं, अमेरिका और उसके सहयोगी देश वैश्विक राजनीतिक तनाव के कारण रूस की तेल आय को सीमित करना चाहते हैं। इसी वजह से भारत और अमेरिका के बीच इस मुद्दे पर मतभेद सामने आ रहे हैं।

वर्तमान अपडेट के अनुसार, भारत और अमेरिका के अधिकारियों के बीच बातचीत जारी है। भारत सरकार की ओर से अभी कोई आधिकारिक बयान नहीं आया है, लेकिन सूत्रों के अनुसार भारत अमेरिका को अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं और आर्थिक कारणों के बारे में जानकारी दे रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि भारत अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करते हुए अमेरिका के साथ मजबूत संबंध बनाए रखने की कोशिश कर रहा है। यदि टैरिफ बढ़ाए जाते हैं, तो इससे कपड़ा, इंजीनियरिंग सामान और दवा उद्योग जैसे भारतीय निर्यात क्षेत्रों पर असर पड़ सकता है। अर्थशास्त्रियों का कहना है कि यदि जल्द समाधान नहीं निकाला गया, तो भारत के निर्यात पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

कुल मिलाकर, यह मामला दिखाता है कि भारत के लिए वैश्विक कूटनीति, ऊर्जा सुरक्षा और अंतरराष्ट्रीय व्यापार के बीच संतुलन बनाना कितना चुनौतीपूर्ण होता जा रहा है। आने वाले हफ्ते महत्वपूर्ण होंगे, क्योंकि दोनों देश इस व्यापारिक टकराव से बचने के लिए बातचीत जारी रखेंगे।

ऑपरेशन सवेरा : "नशे के अंधकार से जीवन के उजाले की ओर"

नईम सागर

सहारनपुर पुलिस की नशा तस्करों के विरूद्ध कडी कार्यवाही थाना बेहट पुलिस का मादक पदार्थों की तस्करी पर करारा प्रहार — 01 नशा तस्कर अभियुक्त गिरफ्तार, कब्जे से 12 .97 ग्राम अवैध स्मैक बरामद

अवगत कराना है कि श्रीमान पुलिस उपमहानिरीक्षक, सहारनपुर परिक्षेत्र, सहारनपुर द्वारा मादक पदार्थों / नशे के अवैध कारोबार, प्रतिबंन्धित दवाओं की तस्करी / बिक्री पर प्रभावी रोकथाम के लिए ठोस एवं समन्वित कार्यवाही हेतु परिक्षेत्र सहारनपुर के तीनो जनपदो में "ऑपरेशन सवेरा" – "नशे के अंधकार से जीवन के उजाले की ओर" अभियान चलाया जा रहा है ।

इसी क्रम में पुलिस उपमहानिरीक्षक/वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, सहारनपुर के निर्देशन मे नशीलें पदार्थों की तस्करी की रोकथाम व नशे के कारोबार मे शामिल अपराधियों की गिरफ्तारी हेतु चलाये जा रहे अभियान "ऑपरेशन सवेरा"" के अनुपालन में पुलिस अधीक्षक ग्रामीण एवं क्षेत्राधिकारी बेहट के निकट पर्यवेक्षण मे प्रभारी निरीक्षक श्री सतपाल भाटी के कुशल नेतृत्व में थाना बेहट पुलिस टीम द्वारा दिनांक 05.01.2026 को चैकिंग के दौरान 01 नशा तस्कर अभियुक्त कुलदीप उर्फ शम्भू पुत्र सुमेरचन्द नि0 ग्राम ताजपुरा थाना बेहट जनपद सहारनपुर को ग्राम पानसर से रीढी जाने वाला खडन्जे से 20 कदम की दूरी गिरफ्तार किया गया। अभियुक्त कुलदीप के कब्जे से 12.97 ग्राम अवैध स्मैक बरामद हुई । गिरफ्तारी व बरामदगी के आधार पर थाना बेहट पर मु0अ0सं0 013/26 धारा 8/21 एनडीपीएस एक्ट के पंजीकृत किया गया है । अभियुक्त द्वारा मादक पदार्थों के अवैध कारोबार के संबंध में FORWARD AND BACKWARD लिंको की जाँच की जा रही है। गिरफ्तार अभियुक्त के विरूद्ध विधिक कार्यवाही कर समय से माननीय न्यायालय के समक्ष पेश किये जा रहे है ।

गिरफ्तार अभियुक्त का नाम पताः-

कुलदीप उर्फ शम्भू पुत्र सुमेरचन्द नि0 ग्राम ताजपुरा थाना बेहट जनपद सहारनपुर

बरामदगी का विवरण-

12.97 ग्राम अवैध स्मैक

अभियुक्त कुलदीप का आपराधिक इतिहास–

1. मु0अ0सं0- 013/26 धारा- 8/21 एनडीपीएस एक्ट थाना बेहट जनपद सहारनपुर

गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीमः-

1. उ0नि0 श्री अरूण कुमार थाना बेहट जनपद सहारनपुर
2. का0 1850 मनजीत सिंह थाना बेहट जनपद सहारनपुर
3. का0 2183 संजू सैम थाना बेहट जनपद सहारनपुर

प्रयागराज माघ मेला में 'मां सीता रसोई' के द्वारा साधु-संतों को भोजन करा रही हैं प्रख्यात समाजसेवी मनप्रीत कौर

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

प्रयागराज।प्रयागराज के माघ मेला में इन दिनों देश भर के साधु-संतों का कल्पवास प्रारम्भ हो गया है।जिसमें 'मां सीता रसोई' के तत्वावधान में संकटमोचन सेना महिला प्रकोष्ठ, पंजाब की अध्यक्ष, प्रख्यात समाजसेवी मनप्रीत कौर (लुधियाना) के द्वारा निस्वार्थ भाव से सेवा कार्य किए जा रहे हैं।वह प्रयागराज महाकुंभ की भांति माघ मेला 2026 में भी अपनी पूरी टीम के साथ साधु-संतों के भण्डारों के लिए विशेष रूप से अलग - अलग शिविरों में जाकर अन्न क्षेत्र चला रही है।साथ ही प्रतिदिन हजारों साधु-संतों व निर्धनों-निराश्रितों को भोजन प्रसाद उपलब्ध करा रही हैं।

मां सीता रसोई के प्रबन्धक आचार्य अंशुल पाराशर ने बताया कि प्रयागराज माघ मेला 2026 में 'मां सीता रसोई' के द्वारा अन्नक्षेत्र चलाकर साधु-संतों को भोजन प्रसाद ग्रहण कराकर उन्हें दक्षिणा वितरित की जा रही है।यह सेवा 03 जनवरी से प्रारंभ होकर 15 फरवरी 2026 तक चलेगी।

संकटमोचन सेना महिला प्रकोष्ठ, पंजाब की अध्यक्ष, प्रख्यात समाजसेवी मनप्रीत कौर ने कहा कि वे कई वर्षों से अयोध्या और वृंदावन के अलावा अन्य कई तीर्थ स्थानों पर भी ₹मां सीता रसोई₹ चला रही हैं।जिनके माध्यम से वे धार्मिक स्थलों पर जा-जाकर इसी तरह साधु-संतों व निर्धनों-निराश्रितों की सेवा करती हैं।उनका प्रयास रहता है कि तीर्थ स्थल पर आने वाला कोई भी व्यक्ति भूखा न सोए।

उन्होंने बताया कि हमें इस बात की हार्दिक प्रसन्नता है कि हमें प्रयागराज माघ मेले में संतों की सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।समाजसेवा करने से उन्हें बहुत संतुष्टि मिलती है।इसीलिए उनकी पूरी कोशिश रहती है, कि वे अधिक से अधिक लोगों की अन्न से सेवा कर सकें।

रोगियों की निस्वार्थ सेवा ही नारायण की सच्ची सेवा है : भागवत किंकर अनुराग कृष्ण शास्त्री

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन।गांधी मार्ग स्थित श्रीअमरनाथ धाम में धर्म, आध्यात्म एवं सेवा को समर्पित भागवत एवं संस्था के तत्वाधान में निर्फाद ग्रामीण चिकित्सालय के सहयोग से भारत सरकार के अंधता निवारण कार्यक्रम के अंतर्गत त्रिदिवसीय निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर ₹वैदिक पथिकर₹ भागवत किंकर अनुराग कृष्ण शास्त्री (कन्हैया जी) की अध्यक्षता में संपन्न हुआ।जिसके अन्तर्गत सैकड़ो नेत्र रोगियों के मोतियाबिंद का निशुल्क ऑपरेशन कर उन्हें नेत्र ज्योति प्रदान की गई।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि मथुरा-वृंदावन नगर निगम के उप-सभापति मुकेश सारस्वत ने कहा कि नेत्रों में रोशनी देना बहुत पुन्य का कार्य है। आज संस्था के द्वारा अनुराग कृष्ण शास्त्री ने अपने पूज्य दादा गुरुजी गोलोकवासी पुराणाचार्य श्रीनाथ शास्त्री एवं पूज्य. अम्माजी श्रीमती पुष्पवती शर्मा की स्मृति में यह जो तीन दिवसीय निशुल्क मोतियाबिंद ऑपरेशन शिविर का आयोजन किया है, वो बहुत प्रसंसनीय कार्य है। आर्थिक दृष्टि से कमजोर लोगों के नेत्रों का उपचार करके उन्हें पुनः रोशनी प्रदान करना ईश्वर की सच्ची सेवा है।

विशिष्ट अतिथि वृंदावन विद्यापीठ इंटर कॉलेज के भौतिक विज्ञान विभाग के प्रवक्ता सुंदर सिंह ने कहा के संस्था के द्वारा नेत्रों में रोशनी देने का जो कार्य किया जा रहा है, वो अद्भुत व अकल्पनीय है।

कार्यक्रम के अध्यक्ष भागवत किंकर अनुराग कृष्ण शास्त्री ने कहा कि विगत 2013 से निरंतर 1 जनवरी से 3 जनवरी तक यह शिविर लगाने का सौभाग्य मुझे प्राप्त होता रहा है।मैं रोगियों में नारायण के दर्शन करता हूं और उनकी सेवा ही नारायण की सेवा है। पूज्य दादा गुरुजी ने मुझे जो आदेश दिए हैं चाहे वह भागवत पठन-पाठन का हो, चाहे गौ सेवा का हो, चाहे सनातन संस्कृति के संरक्षण का हो सभी कार्य उन्हीं की आज्ञा से मैं कर रहा हूं।

कार्यक्रम के संयोजक देवेंद्र शर्मा ने कहा के निर्फाद नेत्र चिकित्सालय के द्वारा जनपद में आठ स्थानों पर 303 ओपीडी की गई।जिनमें डेढ़ सौ लोगों के मोतियाबिंद और काला पानी के ऑपरेशन किये गए हैं।

कार्यक्रम में संस्था के द्वारा निर्फाद हॉस्पिटल की समस्त टीम को मुख्य अतिथि मुकेश सारस्वत ने प्रशस्ति-पत्र एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

इस अवसर पर संस्था के सचिव डॉक्टर कृष्ण कुमार शर्मा, डॉक्टर मनोज महोलिया, सुबोध कुमार मिश्रा, वैभव अग्निहोत्री, आर.के. लवानिया, मिनेश यादव, भारत, जीतू, शुभम, लव, जय नारायण शुक्ला, श्याम सुंदर एवं नागेश आदि की उपस्थिति विशेष रही।

करूणा साहित्यिक मंच की काव्यगोष्ठी सफल संपन्न

परिवहन विशेष न्यूज

लखनऊ - दिनांक 04 जनवरी 26 को करुणा साहित्यिक सांस्कृतिक संस्थान के तत्वावधान में शानदार काव्य गोष्ठी विभूति खण्ड स्थित आर्यावर्ती सरोज तिवारी जी के आवास पर हुई । जिसकी अध्यक्षता वरिष्ठ लेखक व साहित्यकार श्री दयानंद पाण्डेय जी ने की ।

मुख्य अतिथि डा० मिथिलेश तिवारी जी उपाध्यक्ष -बिरजू महाराज कथक संस्थान, लखनऊ उत्तर प्रदेश तथा अखिल भारतीय मातृशक्ति संस्कार भारती संस्कार भारती, विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ एवं चर्चित साहित्यकार श्री महेन्द्र भीष्म जी, श्री दिनेश चन्द्र दीक्षित जी, अरविन्द पाण्डेय एवं महेश चन्द्र गुप्त 'महेश' रहे । माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण व पुष्पार्चन के पश्चात अल्का अस्थाना' अमृतमयी' ने शास्त्रीय राग पर आधारित वाणी वंदना से सभी को भाव विभोर किया ।

तत्पश्चात निशा सिंह 'नवल', रेनू द्विवेदी, अल्का अस्थाना, आर्यावर्ती सरोज, आशुतोष 'आशु', महेश चन्द्र गुप्त 'महेश', दिनेश चन्द्र अवस्थी, महेन्द्र 'भीष्म', डा० मिथिलेश तिवारी, व दयानंद पाण्डेय ने गीत, ग़ज़ल, कविता, दोहे, छंद व हास्य-व्यंग्य के सशक्त प्रस्तुति से कार्यक्रम को ऊँचाई प्रदान की ।

शानदार आयोजन प्रवीण तिवारी, संयोजन आर्यावर्ती सरोज व संचालन आशुतोष 'आशु' ने किया ।

इस अवसर पर प्रशान्त मिश्रा (लखनऊ विश्वविद्यालय), अमित कृष्णा श्रीवास्तव आदि अतिथि व श्रोतागण ने अपनी उपस्थिति से गरिमा प्रदान की व रचनाकारों को प्रोत्साहित किया ।

नववर्ष पर संस्था की पहली गोष्ठी का समापन लजीज पकवान के साथ हुआ । कुछ झलकियां सादर निवेदित है ।

भारत में महिला कैदियों की बढ़ती संख्या- सशक्तिकरण, अपराध,न्याय और जेल प्रशासन की वैश्विक चुनौती-एक अंतरराष्ट्रीय समग्र विश्लेषण

बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, उज्ज्वला, महिला हेल्पलाइन, मिशन शक्ति,स्टैंड-अप इंडिया जैसी असंख्य योजनाओं क़े बावजूद,आपराधिक न्याय व्यवस्था के आकड़ों से गहरी चिंता उभरती है-

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर भारत की सांस्कृतिक चेतना में नारी को देवी का दर्जा प्राप्त है।शक्ति,दुर्गा सरस्वती और लक्ष्मी के रूप में स्त्री भारतीय सभ्यता की आत्मा रही है।शासन-प्रशासन ने महिला सशक्तिकरण के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, राजनीतिक भागीदारी और सुरक्षा से जुड़े अनेक कार्यक्रम शुरू किए।भारत की सभ्यता में नारी को शक्ति, मातृत्व और देवत्व का प्रतीक माना गया है। वेदों से लेकर संविधान तक, महिला को सम्मान, समानता और गरिमा का अधिकार देने की बात की जाती रही है।स्वतंत्र भारत में भी महिला सशक्तीकरण को राष्ट्र निर्माण का मूल आधार घोषित किया गया। बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, उज्ज्वला, महिला हेल्पलाइन,मिशन शक्ति, स्टैंड- अप इंडिया जैसी असंख्य योजनाएँ इस बात का प्रमाण हैं कि राज्य महिला उत्थान को प्राथमिकता देने का दावा करता है। इसके बावजूद,यदि हम आपराधिक न्याय व्यवस्था के आंकड़ों की ओर देखें तो एक गहरी चिंता उभरती है। इंस्टीट्यूट फॉर क्राइम एंड जस्टिस पॉलिसी रिसर्च की वर्ल्ड फीमेल इमप्रिजनमेंट लिस्ट यह बताती है कि बीते दो दशकों में भारतीय जेलों में बंद महिलाओं की संख्या,पुरुषों और सामान्य जनसंख्या की तुलना में दोगुनी गति से बढ़ी है। यह तथ्य केवल आंकड़ों का खेल नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक, न्यायिक और लैंगिक संरचनाओं पर गंभीर सवाल खड़ा करता है।मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं क़ि हाल के वर्षों में अवैध रूप से रह रहे विदेशी नागरिकों, विशेषकर बांग्लादेशी मूल की महिलाओं के खिलाफ सघन अभियानों के कारण भी महिला कैदियों की संख्या में वृद्धि हुई है। एक अनुमान के अनुसार, केवल पश्चिम बंगाल की जेलों में ही लगभग 358 बांग्लादेशी महिलाएं कैद में हैं।इनमें से कई मानव तस्करी, अवैध प्रवास या जबरन अपराध में धकेली गई पीड़िताएं भी हो सकती हैं। यह स्थिति भारत की जेल व्यवस्था को एकअंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार और कूटनीतिक आयाम भी प्रदान करती है।रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2000 से 2022 के बीच भारतीय जेलों में महिला कैदियों (विचाराधीन और सजायाफ्ता दोनों) की संख्या 9,089 से बढ़कर 23,772 हो गई। यह लगभग 162 प्रतिशत की वृद्धि है। इसके विपरीत, इसी अवधि में भारत की कुल जनसंख्या में लगभग 30 प्रतिशत की वृद्धि हुई,जबकि पुरुष कैदियों की संख्या 3,10,310 से बढ़कर5,49,351 हुई, जो करीब 77 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्शाती है।यह असंतुलन इस ओर संकेत करता है कि महिलाओं के मामले में या तो अपराध के स्वरूप बदले हैं, या कानून,व्यवस्था और न्यायिक व्यवहार में ऐसा परिवर्तन आया है,जिसने महिलाओं को अपेक्षाकृत अधिक संख्या में जेल तक पहुंचाया है।

साथियों बात अगर हम महिला सशक्तिकरण बनाम अपराधःइस मूल प्रश्न को समझने की करें तो सबसे बड़ा सवाल यही है कि जिस दौर में महिला सशक्तिकरण बढ़ रहा है, उसी दौर में महिलाएं अपराध से विमुख क्यों नहीं हो रहीं? क्या अधिकारों की जागरूकता के साथ-साथ सामाजिक और आर्थिक संरचनाएं उन्हें सुरक्षित विकल्प नहीं दे पा रही हैं? कई मामलों में जांच के दौरान यह सामने आया है कि मादक पदार्थों और अन्य तस्करी गतिविधियों में महिलाओं को जानबूझकर शामिल किया जा रहा है, क्योंकि उन्हें कानून से कम संदेहास्पद माना जाता है। इस संदर्भ में यह आशंका भी उठती है कि कहीं पुरुष–प्रधान आपराधिक नेटवर्क अपने बचाव के लिए महिलाओं को आगे तो नहीं कर रहे।अमेरिका और चीन जैसे विशाल आबादी वाले देशों की तुलना में भारत में महिला कैदियों की कुल संख्या अपेक्षाकृत कम है। इससे एक प्रकार का संतोष मिल सकता है, लेकिन यह संतोष भ्रमित करने वाला है। मात्र 4 प्रतिशत हिस्सेदारी के बावजूद महिला अपराधियों की संख्या में तेज़ी से वृद्धि होना यह दर्शाता है कि समस्या की जड़ें गहरी हैं और भविष्य में इसके सामाजिक परिणाम गंभीर हो सकते हैं।

साथियों बात अगर हम महिला कैद में वृद्धिः केवल अपराध नहीं सामाजिक-संरचनात्मक संकट इसको समझने की करें तो, महिलाओं के जेल जाने को केवल अपराध में वृद्धि के रूप में देखना एक सतही दृष्टिकोण होगा। वास्तविकता यह है कि अधिकांश महिला कैदी हिंसक अपराधी नहीं हैं। वे या तो गरीबी-जनित अपराध, परिस्थितिजन्य अपराध, पारिवारिक दबाव में किए गए अपराध, या कानूनी अज्ञानता के शिकार मामले हैं।अंतरराष्ट्रीय अध्ययन बताते हैं कि महिला अपराध अक्सर सर्वाइवल क्राइम होते हैं, यानें जीवित रहने की मजबूरी से उपजे अपराध।भारत में महिला कैदियों का बड़ा हिस्सा अंडरट्रायल है। वर्षों तक मुकदमे लंबित रहते हैं, जमानत की प्रक्रिया जटिल होती है और कानूनी सहायता तक पहुँच सीमित रहती है।गरीब,अशिक्षित और सामाजिक रूप से हाशिए पर खड़ी महिलाएँ इस प्रणाली में सबसे पहले फँसती हैं और सबसे अंत में बाहर निकलती हैं। यह स्थिति सीधे-सीधे संविधान के अनुच्छेद 14 (समानता), अनुच्छेद 21 (जीवन और गरिमा का अधिकार) तथा अनुच्छेद 39A (निःशुल्क कानूनी सहायता) के उल्लंघन की ओर संकेत करती है।

साथियों बात अगर हम महिला अपराध के पीछे प्रमुख कारणः एक बहु-आयामी विश्लेषण करने की करें तो महिला कैदियों की संख्या में वृद्धि के पीछे पहला बड़ा कारण आर्थिक असमानता और स्त्री-गरीबी है। भारत में महिलाओं की श्रम भागीदारी दर चिंताजनक रूप से कम है। अनौपचारिक क्षेत्र में काम करने वाली महिलाएँ असुरक्षित मजदूरी, ऋण जाल और शोषण का शिकार होती हैं। जब जीवन की बुनियादी आवश्यकताएँ पूरी नहीं होतीं, तो छोटी-मोटी चोरी, अवैध व्यापार या तस्करी जैसे

अपराधों में फँसना उनकी मजबूरी बन जाता है। दूसरा कारण घरेलू हिंसा और पितृसत्तात्मक दबाव है। कई मामलों में महिलाएँ अपने पति या परिवार के पुरुषसदस्यों के अपराधों में सह-अभियुक्त बना दी जाती हैं। ड्रग्स, अवैध शराब, मानव तस्करी या आर्थिक अपराधों में महिलाओं की भूमिका अक्सर गौण होती है, लेकिन कानून उन्हें मुख्य आरोपी के समान दंडित करता है। यह दर्शाता है कि न्याय प्रणाली लिंग-संवेदनशीलता से अभी भी वंचित है।तीसरा बड़ा कारण कानूनी जागरूकता की कमी है। ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों की महिलाएँ अपने अधिकारों, जमानत प्रक्रियाओं और कानूनी उपायों से अनभिज्ञ रहती हैं। वे पुलिस हिरासत में दिए गए बयानों के कानूनी निहितार्थ तक नहीं समझ पातीं। कई बार फर्जी मुकदमे या मामूली अपराधों में भी उन्हें लंबे समय तक जेल में रहना पड़ता है।

साथियों बात अगर हम राज्य की भूमिका सशक्तीकरण बनाम दंडात्मक शासन व जेल प्रशासन की चुनौतियाँः इसको समझने की करें तो, महिला सशक्तीकरण की योजनाएँ प्रायः कल्याणकारी स्वरूप की हैं,जबकि आपराधिक न्याय प्रणाली आज भी दंडात्मक मानसिकता से संचालित होती है।पुलिस तंत्र में महिला अधिकारियों की संख्या सीमित है,जिससे महिलाओं के साथ होनेवाली पूछताछ और गिरफ़्तारी में संवेदनशीलता का अभाव रहता है। अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुसार, महिलाओं की गिरफ्तारी अंतिम विकल्प होनी चाहिए, विशेषकर जब वे गर्भवती हों या छोटे बच्चों की माँ हों। किंतु भारत में इस सिद्धांत का पालन अपवादस्वरूप ही होता है।अदालतों पर बढ़ता बोझ भी महिला कैदियों की संख्या में वृद्धि का एक प्रमुख कारण है। मुकदमों के वर्षों तक लंबित रहने से महिलाएँ सजा से पहले ही सजा भुगतने को मजबूर होती हैं। यह स्थिति लोकतंत्र के उस मूल सिद्धांत को कमजोर करती है कि जब तक दोष सिद्ध न हो, व्यक्ति निर्दोष है।जेल प्रशासनकी चुनौतियाँः अदृश्य पीड़ा औरसंरचनात्मक विफलता- भारतीय जेल प्रणाली मूलतः पुरुष-केंद्रित है। महिला कैदियों की बढ़ती संख्या के बावजूद, जेलों में उनके लिए बुनियादी सुविधाओं का अभाव है। स्वास्थ्य सेवाएँ, मानसिक परामर्श, स्वच्छता मातृत्व देखभाल और बच्चों के पालन-पोषण की व्यवस्था गंभीर रूप से अपर्याप्त है। कई जेलों में महिलाएँ अपने नवजात बच्चों के साथ अमानवीय परिस्थितियों में रहने को विवश हैं।यह स्थिति न केवल मानवाधिकारों का उल्लंघन है, बल्कि अंतरराष्ट्रीय मानकों,जैसे संयुक्त राष्ट्र की बैंकाक रूल्स के भी विपरीत है, जो महिला कैदियों के लिए विशेष संरक्षण और वैकल्पिक दंड व्यवस्था की सिफारिश करती हैं। भारत ने इन मानकों का समर्थन तो किया है, लेकिन उनका प्रभावीक्रियान्वयन अब भी दूर की बात है।

साथियों बात अगर हम अपराध के बदलते स्वरूपः शहरीकरण और नई भूमिकाएं को समझने की करें तो रिपोर्ट के अनुसार, भारत में शहरीकरण और वैश्वीकरण के साथ अपराधों के स्वरूप में बदलाव आया है। अब महिलाएं केवल घरेलू या पारंपरिक अपराधों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि संगठित अपराध, मादक पदार्थों की तस्करी, साइबर धोखाधड़ी, वित्तीय अपराध और मानव तस्करी जैसे मामलों में भी अधिक देखी जा रही हैं। शहरी क्षेत्रों में महिलाओं की सार्वजनिक सक्रियता, रोजगार में भागीदारी और सामाजिक गतिशीलता बढ़ने से अपराध के अवसर और जोखिम दोनों बढ़े हैं। यह एक जटिल प्रक्रिया है, जिसमें सशक्तिकरण और शोषण दोनों एक साथ चलते दिखाई देते हैं।न्यायिक रुझानों में बदलावः जमानत से सख्ती तकपिछले कुछ वर्षों में न्यायिक दृष्टिकोण में भी परिवर्तन देखा गया है। गैर- हिंसक अपराधों, जैसे छोटे चोरी,चकारे, सेक्स वर्क या आर्थिक अपराधों में भी अदालतें महिलाओं को जमानत देने में पहले जितनी उदार नहीं रहीं। इसके पीछे एक तर्क कानून के समान अनुप्रयोग का है, लेकिन इसका व्यावहारिक प्रभाव महिलाओं पर अधिक कठोर पड़ता है। सामाजिक कलंक के कारण कई महिलाओं को परिवार का सहयोग नहीं मिलता, जिससे जमानत की प्रक्रिया और कानूनी लड़ाई अत्यंत कठिन हो जाती है।

अतः अगर हम उपयोग पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे क़ि भारत में महिला कैदियों की बढ़ती संख्या एक चेतावनी है, लेकिन साथ ही सुधार का अवसर भी। यह हमें याद दिलाती है कि सशक्तिकरण केवल योजनाओं और नारों से नहीं, बल्कि सामाजिक,आर्थिक न्याय, संवेदनशील न्यायिक प्रक्रिया और मानवीय जेल व्यवस्था से साकार होता है। यदि आज इस प्रवृत्ति को गंभीरता से नहीं समझा गया, तो इसका प्रभाव न केवल महिलाओं पर, बल्कि परिवार, बच्चों और समाज की भावी पीढ़ियों पर पड़ेगा। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की छवि भी इसी से तय होगी कि वह नारी को देवी मानने की सांस्कृतिक परंपरा को न्याय और करुणा की आधुनिक व्यवस्था में कैसे बदलता है।

कोच्चि में भारतीय सांस्कृतिक कांग्रेस के कुछ पहलू

(रिपोर्ट : मालिनी भट्टाचार्य, अनुवाद : संजय पराते)

आज पूरे भारत में धर्मनिरपेक्ष और प्रगतिशील सांस्कृतिक कार्यकर्ता अलगाव की भावना से जूझ रहे हैं। पहले प्रगतिशील लेखक एवं कलाकार संघ तथा आईपीटीए (इप्टा) जैसे अखिल भारतीय संगठन थे, जिन्होंने कुछ हद तक एक ऐसा मंच दिया था, जहाँ ऐसे सांस्कृतिक कार्यकर्ता एक साथ आ सकते थे और अपनी रचनात्मक गतिविधियों के बदलते संदर्भ पर अपने विचार साझा कर सकते थे। जब ये संगठन अखिल भारतीय स्तर पर खत्म हो गए, तो साहित्य अकादमी, संगीत नाटक अकादमी, नेशनल स्कूल ऑफ़ ड्रामा जैसे कुछ सरकारी सहायता प्राप्त, लेकिन स्वायत्त निकायों ने कम से कम आंशिक रूप से हमारे देश में सांस्कृतिक गतिविधियों की भारी विविधता को एक साथ आने का मौका दिया, जिससे कार्यकर्ताओं में जुड़ाव की एक महत्वपूर्ण भावना का संचार हुआ।

लेकिन आज हम बदलाव के एक ऐसे अंधेरे भंवर में फंसते जा रहे हैं, जो आज़ादी की लड़ाई से उभरे प्रगति के विचार को ही खत्म करने की धमकी दे रहा है। भारत की संप्रभुता और संविधान, जो हमें एक साथ जोड़े रखता है, उसी लड़ाई से निकले थे। अब इन दोनों पर हमारे देश में वैश्विक कॉर्पोरेट पूंजी और आरएसएस-भाजपा जैसी सबसे खतरनाक फासीवादी ताकतों के साथ सामाजिक-राजनीतिक स्तर पर बने गठबंधन द्वारा हमला हो रहा है। आज यही फासीवादी ताकतें केंद्र और कई राज्यों में सरकार और प्रशासन को नियंत्रित कर रही हैं।

सांस्कृतिक क्षेत्र में, इसका मतलब है कि सभी सांस्कृतिक गतिविधियाँ कॉर्पोरेट पूंजी और उसके आधिपत्य वाले मीडिया के दबदबे के तहत 'संस्कृति उद्योग' के रूप में विलीन हो जाती हैं। साथ ही, इसका यह भी मतलब है कि उस दबदबे को मज़बूत करने और बनाए रखने के लिए, लोगों के बीच सबसे पिछड़ी और बांटने वाली विचारधारा को आक्रामक तरीके से बढ़ावा दिया जाता है। सार्वजनिक शिक्षा और शोध की नीतियों को कमज़ोर किया जाता है। सांस्कृतिक 'अकादमियाँ' खुद अपनी जो भी स्वायत्तता थी, उसे खो देती हैं और सरकार उन पर कब्ज़ा करने की कोशिश करती है। एक तरफ़ आतंक का राज और दूसरी तरफ़ चुप्पी का माहौल -- लोगों के बीच सभी रचनात्मक पहलों को खतरे में डाल देता है।

कोच्चि में 20-22 दिसंबर, 2025 को आयोजित इंडियन कल्चरल कांग्रेस, ऐसे सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं की ओर से एक शुरुआती कोशिश थी, ताकि वे भौगोलिक दूरी और भाषाई विविधता की बाधाओं को पार करके एक साथ आ सकें और उस हमले का सामना करने और उसका विरोध करने के तरीके ढूंढ सकें, जिसके बारे में वे सभी किसी न किसी रूप में सचेत हैं।

केरल सरकार ने यह सांस्कृतिक महाधिवेशन एक ऐसे समय में आयोजित किया था, जब किसी भी राज्य सरकार के लिए इस परियोजना की अहमियत को स्वीकार करना या उसका अनुमोदन करना मुश्किल हो सकता था। केरल के मुख्यमंत्री ने खुद उद्घाटन सत्र को संबोधित किया और अपने भाषण में संस्कृति के महत्व और हमारी ताकत मानी जाने वाली विविधता को संरक्षित रखने की ज़रूरत पर ज़ोर दिया। ऑल-इंडिया ऑनलाइन कल्चरल न्यूज़लेटर 'हम देखेंगे' को इस सांस्कृतिक महाधिवेशन की देखरेख में पहली बार प्रिंट में लाया गया और प्रतिभागियों के बीच वितरित किया गया।

इस कल्चरल कांग्रेस के आयोजन में केरल सरकार की पहल के अलावा कई संगठनों और छात्रों और युवाओं सहित केरल के लोगों और कई स्वयंसेवकों के दिन-रात की मेहनत और कोच्चि के लोगों का मिला-जुला प्रयास शामिल था, जिसके बिना इस सांस्कृतिक महाधिवेशन का आयोजन संभव नहीं हो पाता। कोच्चि बैकवाटर के सामने सुभाष पार्क के बड़े मैदान में, जो किसी भी तरह से सड़कों से अलग नहीं था, यह देखना वाकई एक रोमांचक अनुभव था कि दिन में होने वाले संवाद समूहों और शाम को होने वाले सांस्कृतिक प्रदर्शनों के लिए दर्शकों की कभी कमी नहीं रही। इसमें आज की भारतीय सांस्कृतिक जगत की कुछ जानी-मानी हस्तियां भी शामिल थीं, जिन्होंने संस्कृति के क्षेत्र में लोकतंत्र और धर्मनिरपेक्षता के लिए खुला समर्थन देकर अपनी पहचान बनाई है। आमंत्रितों में से अधिकांश लोग आए और कुछ जो ज़रूरी कारणों से शामिल नहीं हो पाए, उन्होंने महाधिवेशन के मकसद का समर्थन करते हुए अपना संदेश भेजा था।

सादगी भरे और दोस्ताना माहौल, जिसमें आयोजकों और प्रतिभागियों दोनों का योगदान था, ने एक ऐसे वैकल्पिक सौंदर्यशास्त्र की पृष्ठभूमि तैयार की, जिसे वे सभी मिलकर, पैसे और हिंसा पर आधारित मौजूदा सांस्कृतिक व्यवस्था के विरोध में, ढूंढ रहे थे।

अलग-अलग जगहों पर जो प्रस्तुतियां हुई, चाहे वह तेलंगाना का बाबासाहेब अंबेडकर पर नाटक हो, या जनम का महिलाओं के काम पर प्रस्तुति हो, या हरियाणा ग्रुप द्वारा मुक्तिबोध की कविता पाठ की प्रस्तुति हो — वे सभी कॉर्पोरेट मीडिया के चंगुल में फंसे लोगों के बड़े तबकों तक पहुंचने के लिए नए तरीकों के साथ प्रयोग कर रहे थे। इसी समस्या को संवाद समूहों में शामिल लोगों ने भी उठाया, जैसे कि एक समूह में तमिलनाडु के युवा फिल्म निर्माताओं ने बताया कि वे गंभीर फिल्में बनाने में फाइनेंसरों की कमी की बाधा को दूर करने की कैसे कोशिश कर रहे हैं। एक दूसरे समूह में विश्व बाजार द्वारा लोक और आदिवासी संस्कृति को निगलने का मुकाबला करने और इसके मेहनती प्राथमिक उत्पादकों के अलगाव में पड़ने से लड़ने की ज़रूरत पर भी चर्चा हुई।

सभी संवाद समूहों में चर्चा किए गए मामले को एक अकेले व्यक्ति के लिए समेटना मुश्किल होता, यदि समूहों में मुख्य चर्चा करने वालों की प्रस्तुतियों के बाद नीचे बैठे लोग उत्साह से अपने विचार न रखते। यह कोई भी देख सकता था कि कई भाषाओं वाले जमावड़े में होने वाली स्वाभाविक दिक्कतों के बावजूद लोग सवाल पूछने और अपने विचार व्यक्त करने के लिए उत्सुक थे।

लेखक की आज की दुविधा, थिएटर के ज़रिए विरोध, संगीत और नृत्य में परंपरा और आधुनिकता, संचार और वर्चस्व के साधन के रूप में भाषा, मीडिया, राज्य और समाज, विज्ञान और मिथक जैसे विषय संवाद के विषय थे। ऐसे विषयों ने सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं को संकट की स्थिति में अपनी भूमिका के लिए आत्मालोचनात्मक नज़रिया अपनाने के लिए एक मंच प्रदान किया। हालांकि सभी इस बात पर सहमत थे कि संस्कृति बुरे दौर से गुज़र रही है, लेकिन इस संवाद से कुछ उम्मीद भी जगी।

मैं यहाँ यह समझाने की कोशिश करूँगी कि इस उम्मीद का स्वरूप क्या था और यह भी बताऊंगी कि इस बारे में साझा चिंता कितनी थी कि इस उम्मीद को एक साझा संकल्प में कितना बदला जा सकता है।

सांस्कृतिक महाधिवेशन ने अपने आखिरी दिन सर्वसम्मति से एक घोषणापत्र अपनाया। प्रोफेसर गणेश नारायण डेवी ने यह भी प्रस्ताव दिया कि अगला सांस्कृतिक महाधिवेशन कर्नाटक के धारवाड़ में हो। इस तरह एक समय सीमा का निर्धारण किया गया और इस समय के अंदर क्या करना है, इसके लिए कुछ बुनियादी सिद्धांतों पर सहमति बनी।

घोषणापत्र में चार सिद्धांतों की बात की गई है, जिन्हें सांस्कृतिक महाधिवेशन में मौजूद सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं ने अपने काम के साझा आधार के रूप में पहचाना है : धर्मनिरपेक्षता का सिद्धांत, शांति का सिद्धांत, स्वतंत्रता का सिद्धांत और सम्मान का सिद्धांत।

शायद अलग-अलग राजनीतिक विचारों के साथ इस सांस्कृतिक महाधिवेशन में अलग-अलग भाषाओं और कला समुदायों के लोगों का एक साथ आना, इन्हीं सिद्धांतों के आधार पर संभव हुआ है। अगर ऐसा है, तो हमें यह भी मानना होगा कि इस जमावड़े की आम 'राजनीति' यह संकल्प है कि अपने-अपने राज्यों में समान विचारों वाले दूसरे सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं को भी एक ही मंच पर लाया जाए। साथ ही, इस 'राजनीति' का दूसरा पहलू यह है कि ज़मीनी स्तर पर इन चार सिद्धांतों के लिए सबसे बड़े खतरे की पहचान की जाए और उसका मुकाबला किया जाए, यानी आरएसएस-भाजपा का वैश्विक कॉर्पोरेट्स के साथ गठबंधन और भारत के लोगों पर अपने संयुक्त प्रभुत्व को बनाए रखने के लिए उनकी 'सोशल इंजीनियरिंग' की योजनाओं का मुकाबला करना।

इस संघर्ष का सांस्कृतिक पहलू इसलिए भी ज़्यादा महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह बुरी ताक़त हमारे अंदर के विरोधाभासों को भड़काकर, हमारे सामाजिक-राजनीतिक इतिहास का हिस्सा रहे झगड़ों, अनिश्चितताओं और कमजोरियों को हवा देकर अपनी ताक़त बढ़ाती है।

हमारे दुश्मन नफ़रत और बंटवारे का अपना अभियान लोगों के दिमाग में इतनी गहराई तक ले जाने में कामयाब हो गए हैं कि आज हमें एक 'पोजीशन की लड़ाई' लड़ने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है, जिसमें हम आज़ादी की लड़ाई से मिली अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को पूरी तरह से बर्बाद होने से बचाने की कोशिश कर रहे हैं। इसे सांस्कृतिक स्तर पर 'दांव-पेंच की लड़ाई' में बदलना होगा, जिससे हम सांस्कृतिक विकल्पों के साथ आगे बढ़ सकें। यही वह काम है, जो हमने अपने लिए तय किया है। क्या हम इस चुनौती का सामना कर पाएंगे, यह तो भविष्य ही बताएगा, लेकिन यही वह उम्मीद है जो इस सांस्कृतिक महाधिवेशन ने हममें जगाई है।

इस सांस्कृतिक महाधिवेशन में दो बहुत ही जाने-माने प्रतिभागियों के विचारों से ऐसी उम्मीद की वजह साफ़ होती है। सईद अख्तर मिर्जा ने कहा कि अपनी आखिरी फिल्म 'नसीम' बनाने के बाद, जो बाबरी मस्जिद के विध्वंस को दिखाती है, उन्हें लगा था कि सब कुछ खत्म हो गया है ; लेकिन उसके बाद, वह पूरे भारत में घूमने लगे और हर जगह आम मेहनतकश लोगों से मिले और बातचीत की। इससे उनके मन में अपने जन्मभूमि के प्रति विश्वास वापस आया। इसी तरह, गणेश डेवी ने आज हम पर हावी हो रही हिंसात्मक भाषा के बारे में गंभीर चेतावनी देते हुए कहा कि ऐसा प्रभुत्व पहले भी हुआ है, लेकिन भारत के लोग हमेशा इससे बच निकलने और मजबूत होकर उभरने में कामयाब रहे हैं। इस बार भी वे ऐसा ही करेंगे।

(लेखिका लोकसभा की पूर्व-सदस्य, प्रख्यात संस्कृतिकर्मी तथा महिला आंदोलन की जानी-पहचानी नेत्री हैं। अनुवादक अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध छत्तीसगढ़ किसान सभा के उपाध्यक्ष हैं।)

आईआईटी दिल्ली में "हिंदुत्व की शाश्वत प्रासंगिकता" विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्ली। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) दिल्ली में वर्ल्ड एसोसिएशन ऑफ हिन्दू एकेडमिशियन (डब्लू ए एच ए) के तत्वावधान में "हिंदुत्व की शाश्वत प्रासंगिकता" विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का सफल आयोजन किया गया। संगोष्ठी में देशभर के विभिन्न विश्वविद्यालयों से 300 से अधिक प्रोफेसरों एवं शिक्षाविदों ने सहभागिता की ! इस संगोष्ठी का विहिप क्षेत्रीय संगठन मंत्री नीरज दनौरिया समेत गणमान्य अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कर वैदिक मंत्रों के साथ विधिवत उद्घाटन किया !कार्यक्रम की प्रस्तावना रखते हुए डब्लू ए एच ए के राष्ट्रीय समन्वयक प्रो. नचिकेत तिवारी ने कहा कि हिंदुत्व और भारतीय संस्कृति को लेकर समाज में अनेक भ्रांतियाँ फैली हुई हैं। हिंदुत्व का मूल अधिष्ठान ज्ञान है, जिसमें वेद, बौद्ध दर्शन, भारतीय ज्ञान परंपरा, संत परंपरा और विविध भाषाओं का समावेश है। हिंदुत्व की मूल पहचान ही ज्ञान है।

साउथ एशियन यूनिवर्सिटी के अध्यक्ष प्रो. के. के. अग्रवाल ने अपने संबोधन में कहा कि यदि भारत को विश्वगुरु बनना है, तो उसे हिंदुत्व के सिद्धांतों के अनुरूप आगे बढ़ना होगा। उन्होंने कहा कि भारत में शिक्षा केवल पाठ्यक्रम नहीं, बल्कि एक जीवन शैली है और राष्ट्र की शिक्षा नीति श्रीराम के सिद्धांतों से प्रेरित होनी चाहिए। संगोष्ठी का प्रथम सत्र "सामाजिक समरसता: हिंदू जीवन शैली का सार" विषय पर केंद्रित रहा। इस सत्र में राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग के अध्यक्ष किशोर मकवाना ने कहा कि सामाजिक समरसता के लिए बंधुत्व और एकात्मता की भावना आवश्यक है, जिसके लिए डॉ. भीमराव अंबेडकर ने निरंतर संघर्ष किया। हिंदुत्व के मूल में सामाजिक एकत्व निहित है, जो भारतीय राष्ट्रीय एकता के लिए अनिवार्य है।

इस अवसर पर डॉ. के. जी. सुरेश ने कहा कि सामाजिक समरसता एक सतत प्रक्रिया है और भारत इस दिशा में सही मार्ग पर अग्रसर है। उन्होंने शिक्षा पद्धति में मूलभूत परिवर्तन की आवश्यकता पर बल दिया !संगोष्ठी में दस गुरु परंपरा के ऐतिहासिक महत्व पर भी प्रकाश डाला गया। वक्ताओं ने कहा कि यदि यह परंपरा न होती, तो उत्तर-पश्चिम भारत विशेषकर पंजाब की

सामाजिक और सांस्कृतिक स्थिति अत्यंत जटिल हो सकती थी। भारत की संस्कृति और धर्म की अक्षुण्णता हजारों वर्षों के संघर्ष का परिणाम है, जिसे हिंदुत्व के सिद्धांतों ने संरक्षित किया।

दूसरा सत्र "पंजाब: संस्कृति, चुनौतियाँ और परिवर्तन" विषय पर आयोजित हुआ। इस सत्र में डॉ. अशमिंदर सिंह बहल ने कहा कि पंजाब में युवाओं में नशे की समस्या बढ़ रही है, जिसका एक कारण पड़ोसी देश से जुड़ी परिस्थितियाँ भी हैं। युवाओं का निरंतर पलायन और धर्मांतरण जैसी चुनौतियाँ पंजाब की संस्कृति को प्रभावित कर रही हैं, जिनके समाधान हेतु सरकार को त्वरित और ठोस निर्णय लेने होंगे।विश्व हिंदू परिषद के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष आलोक ने कहा कि पंजाब की समस्याओं पर निर्भीकता से विचार करना होगा। उन्होंने गुरु नानक देव जी गुरु रविदास और गुरु परंपरा के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि 'एक ओंकार' के मंत्र में निहित निर्भयता पंजाब की सांस्कृतिक शक्ति है। उन्होंने यह भी कहा कि राजनीतिक स्वार्थों के कारण पंजाब में विद्वेष फैलाया गया, जबकि यह भूमि संस्कृत, धर्म और भारतीय परंपरा से एक रही है। उन्होंने बताया कि बजरंग दल पंजाब में नशा मुक्ति हेतु निरंतर कार्य कर रहा है। संगोष्ठी का तृतीय सत्र "हिंदू मूल्य: सामाजिक परिवर्तन की दिशा" विषय पर केंद्रित रहा, जिसमें इग्नू की कुलपति प्रो. उमा कांजीलाल ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति में गुरु शिष्य परंपरा और सांस्कृतिक निरंतरता, भारतीय ज्ञान परंपरा के महत्व पर अपने विचार प्रस्तुत किए और भारतीय मूल्यों की समकालीन प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। भारत के भविष्य एवं सामाजिक परिवर्तन के लिए मानवीय मूल्य को लेकर चलने की बात कही कार्यक्रम के अंत में आयोजकों ने सभी वक्ताओं, प्रतिभागियों और शिक्षाविदों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस प्रकार की संगोष्ठियाँ भारतीय संस्कृति, ज्ञान परंपरा और सामाजिक समरसता को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

शंकराचार्य ने पुरी में की महोदधी आरती, कहा भारत का कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता...

समंदर तट तामसिक भोग भूमि कदाचित न हो : निश्चलानंद सरस्वती- शंकराचार्य,पुरी

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्थम्भकार

पुरी शंकराचार्य ने पौष पूर्णिमा के अवसर पर महोदधी आरती उतारते हुए हजारों श्रद्धालुओं के बीच महत्वपूर्ण उद्गार व्यक्त किये। जहां न केवल ओडिशा वल्कि झारखंड , बंगाल एवं अन्य प्रान्तों से पहुंचे भारी संख्या में श्रद्धालु व पर्यटकों ने सागर पुजन एवं आरती का भक्ति पूर्वक नयनाभिराम किया । उन्होंने अपने संबोधन में खचाखच भरी भीड़ में कहा कि क्रिश्चियन, मुसलमान तथा कम्युनिस्ट लोग बहुत पहले से वैदिक सनातनी हिन्दू थे । आज हिंदुओं को हत्या करने की धमकी दी जा रही है परन्तु उन्हें यह जान लेना उचित होगा कि वे भारत का कुछ भी बिगाड़ नहीं सकते । उक्त उद्गार पौष पूर्णिमा के अवसर पर गोवर्धन पीठ के पीठाधीश्वर जगतगुरु शंकराचार्य स्वामी निश्चलानंद नंद सरस्वती ने पुरी महोदधी तट पर कहीं । जहां विगत दो दशकों से यह कार्यक्रम आकर्षण का केन्द्र बिन्दु बना हुआ है । उन्होंने आगे यह कहा कि यह जो भारत वह भूमि है जहां जगदीश राम, कृष्ण तो जगदीश्वरी सीता एवं रूक्मणी की रूप में इसकी भूमि पर जन्म लेती हैं । वही सिद्ध संत गण मानव के रूप में जन्म लेते है । उनके कृपा से हमें मानव जन्म मिला है तथा इस जीवन उद्देश्य भगवत ज्ञान, कृपा पाना है । धर्म का फल वैराग्य होता है और वैराग्य का फल समाधि है । समाधि क फल ज्ञान और ज्ञान का फल मोक्ष का आधार ही है । आत्मा को आत्मा के अनुरूप जानना ही मुक्ति है ।

पुरी शंकराचार्य निश्चलानंद सरस्वती ने महोदधी उत्सव पर बताते हुए कहा कि समन्दर की सुरक्षा निमित्त सागर नामक ऋषि को इसकी उत्तरदायित्व दी गई है । इसलिए समंदर अपनी मर्यादा उलंघन कभी नहीं करता । भगवान निर्गुण और सगुण रूप में आते हैं । समंदर देवता निराकार व वरूण रूप में दर्शन देते हैं । नारद मुनिका यहां आना उनके इच्छा के अधीन होता है । महोदधी तट शराब पीने वालो तथा युवतियोंको लेकर भोग भूमी कदाचित नहीं होनी चाहिए । महोदधी निकट प्रत्येक स्थल में किसी प्रकार का तामसिक बदलाव न लाने हेतु जोरदार अपील की ।

इस अवसर पर न केवल उड़ीसा बल्कि बंगाल , आंध्र प्रदेश व झारखंड के लोग उपस्थित थे। झारखंड के सिंहभूम व सरायकेला खरसावां के अनेक परिवार वहां मौजूद रहे । मंच पर जगन्नाथ जी के चलंत विग्रह माने जाने वाले गजपति महाराज दिव्य सिंहदेव, अनेक साधु सन्यासी, भाजपा के ओडिशा प्रदेश अध्यक्ष मनमोहन सामल, उच्च शिक्षा मंत्री सूर्य वंशी सुरज , पुरी सांसद डा० संवित पात्र , विधायक आश्रित पट्टनायक आदि मंच पर आसिन रहे ।

मोबाइल फोन छीनने के मामले में आरोपी को पांच साल की कठोर कैद

अमृतसर, 5 जनवरी (साहिल बेरी)

माननीय जिला एवं सत्र न्यायाधीश अमृतसर, श्रीमती जतिंदर कौर की अदालत ने मोबाइल फोन छीनने के एक मामले में आरोपी को दोषी करार देते हुए उसे पांच वर्ष की कठोर कैद की सजा सुनाई है।

अदालत ने अपने फैसले में महत्वपूर्ण टिप्पणी करते हुए कहा कि आपराधिक न्याय प्रणाली का उद्देश्य केवल अपराधी को दंडित करना ही नहीं, बल्कि पीड़ित को न्याय दिलाना और समाज में कानून के प्रति विश्वास को पुनः स्थापित करना भी है।

अभियोजन पक्ष के अनुसार, दिनांक 19.12.2023 को पुलिस पार्टी, जिसकी अगुवाई एएसआई स्विंदर पाल सिंह, थाना रंजीत एवेन्यू, अमृतसर कर रहे थे, गश्त के दौरान जनता द्वारा मचाए गए शोर की सूचना मिलने पर बेस्ट वेस्टर्न होटल, अमृतसर के समीप पहुंची, जहां एक आरोपी को काबू किया गया। पकड़े गए व्यक्ति ने अपना नाम अजय उर्फ डाना, निवासी गांव ठाठा बताया।

जांच के दौरान शिकायतकर्ता मृगिम वैद, जो कि सेंट्रल बैंक, रंजीत एवेन्यू, अमृतसर में कर्मचारी है, ने अपने बयान में बताया कि उसी दिन शाम करीब 6:00 बजे ड्यूटी समाप्त करने के बाद जब वह पुरानी जेल रोड की ओर जा रहा था, तो दो व्यक्ति मोटरसाइकिल पर आए और उसका वीवो मोबाइल फोन छीन लिया। शिकायतकर्ता ने पीछे बैठी सवारी को पकड़ लिया, जिसे पुलिस ने मौके पर ही हिरासत में लेकर थाने पहुंचाया, जबकि दूसरा आरोपी मौके से फरार हो गया।

इस शिकायत के आधार पर थाना रंजीत एवेन्यू, अमृतसर में एफआईआर नंबर 253 दिनांक 19.12.2023, धारा 379-बी, 34 और 411 आईपीसी के तहत दर्ज की गई। जांच एवं मुकदमे की समस्त कार्यवाही पूर्ण होने के उपरांत अदालत

ने आरोपी को दोषी ठहराया। सजा सुनाते समय अदालत ने यह भी स्पष्ट किया कि न्याय का उद्देश्य पीड़ित को हुए नुकसान की भरपाई करना और कानून के राज को सुदृढ़ बनाना है, ताकि कानून का पालन करने वाले नागरिक स्वयं को सुरक्षित महसूस कर सकें।

इस प्रकार, अदालत द्वारा आरोपी को मोबाइल फोन छीनने के मामले में पांच वर्ष की कठोर कैद की सजा सुनाई गई।

डॉ. कमलदीप शर्मा ने आई.डी.ए. अमृतसर के अध्यक्ष पद का कार्यभार संभाला

अमृतसर, 5 जनवरी (साहिल बेरी)

डॉ. कमलदीप शर्मा (एम.डी.एस. प्रोस्थोडॉन्टिक्स), डॉ. कमल्स स्माइल स्टूडियो, बसंत एवेन्यू, अमृतसर से संबद्ध, ने आयोजित एक समारोह के दौरान इंडियन डेंटल एसोसिएशन (आई.डी.ए.) अमृतसर ब्रांच के वर्ष २०२६ के लिए अध्यक्ष पद का कार्यभार संभाला।

इस अवसर पर डॉ. पवन शर्मा (पूर्व अध्यक्ष), डॉ. भावना शर्मा (निर्वाचित अध्यक्ष – २०२७), डॉ. नितिन वर्मा (सचिव), डॉ. ज्योति लुथरा (संयुक्त सचिव), डॉ. जसकरण छिन्ना (कोषाध्यक्ष), डॉ. नवदीप सिंह ख्रुराना (सी.डी.ई. प्रतिनिधि) सहित आई.डी.ए. के अन्य सदस्य उपस्थित रहे।

डॉ. कमलदीप शर्मा ने अपने कार्यकाल के लिए दंत स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने, सामाजिक पहुंच को विस्तारित करने, डेंटल क्लिनिशियंस को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर के विशेषज्ञों से सीखने हेतु मंच उपलब्ध कराने तथा दंत चिकित्सा सेवाओं को और अधिक उन्नत स्तर तक ले जाने की अपनी दृष्टि साझा की।

क्या नवाचार केवल विज्ञान और इंजीनियरिंग के साथ ही हो सकता है?

● विजय गर्ग

कुछ सबसे प्रभावशाली नवाचार पारंपरिक STEM क्षेत्रों के बाहर उभरे हैं सामाजिक नवाचारः शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल वितरण या सामुदायिक विकास के लिए नए दृष्टिकोण अक्सर प्रयोगशालाओं की बजाय सामाजिक विज्ञानों, जमीनी स्तर के विचारकों और शिक्षाविदों से आते हैं। व्यवसाय और उद्यमिताः अभिनव व्यापार मॉडल – जैसे माइक्रोफाइनेंस या साझाकरण अर्थव्यवस्था – अकेले इंजीनियरिंग की तुलना में मानव व्यवहार में अंतर्दृष्टि पर अधिक निर्भर करते हैं।

जब हम नवाचार शब्द सुनते हैं, तो अक्सर हमारे दिमाग में प्रयोगशालाओं, इंजीनियरों, कोडिंग स्क्रीन और उच्च तकनीक वाली मशीनों की तस्वीरें आती हैं। विज्ञान और इंजीनियरिंग को व्यापक रूप से नवाचार के इंजन के रूप में देखा जाता है, जो चिकित्सा, प्रौद्योगिकी और बुनियादी ढांचे में सफलताएं प्रदान करते हैं। लेकिन गहराई से देखने पर एक महत्वपूर्ण सच्चाई सामने आती हैः नवाचार केवल विज्ञान और इंजीनियरिंग का नहीं है। यह एक मानवीय क्षमता है जो जहां भी जिज्ञासा, रचनात्मकता और समस्या-समाधान मौजूद हो, वहां पनपती है।

विज्ञान और इंजीनियरिंगः शक्तिशाली लेकिन विशेष नहीं

इसमें कोई संदेह नहीं है कि विज्ञान और इंजीनियरिंग ने आधुनिक दुनिया को बदल दिया है। टीकों और नवीकरणीय ऊर्जा से लेकर स्मार्टफोन और अंतरिक्ष अन्वेषण तक, वैज्ञानिक ज्ञान और इंजीनियरिंग कौशल विचारों को व्यावहारिक समाधानों में बदल देते हैं। ये क्षेत्र ऐसे उपकरण, विधियां और सटीकता प्रदान करते हैं जो बड़े पैमाने पर नवाचार को संभव बनाते हैं। हालांकि, केवल विज्ञान और इंजीनियरिंग पर ध्यान केंद्रित करने से हमें एक अधूरी तस्वीर मिलती है। नवाचार सिर्फ इस बारे में नहीं है कि कोई चीज कैसे बनाई जाती है, बल्कि यह भी है कि इसकी आवश्यकता क्यों है, यह किसकी सेवा करता है और लोग इसका उपयोग कैसे करेंगे।

प्रयोगशाला से परे नवाचार

कुछ सबसे प्रभावशाली नवाचार पारंपरिक STEM क्षेत्रों के बाहर उभरे हैं
सामाजिक नवाचारः शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल वितरण या सामुदायिक विकास के लिए नए दृष्टिकोण अक्सर प्रयोगशालाओं की बजाय सामाजिक विज्ञानों, जमीनी स्तर के विचारकों और शिक्षाविदों से आते हैं।
व्यवसाय और उद्यमिताः अभिनव व्यापार मॉडल — जैसे माइक्रोफाइनेंस या साझाकरण अर्थव्यवस्था — अकेले इंजीनियरिंग की तुलना में मानव व्यवहार में अंतर्दृष्टि पर अधिक निर्भर करते हैं।
कला और डिजाइनः डिज़ाइन सोच, कहानी सुनाना, संगीत और दृश्य कला इस बात को आकार देती हैं कि नवाचार लोगों के साथ भावनात्मक रूप से कैसे जुड़ते हैं। कोई उत्पाद तकनीकी रूप से शानदार हो सकता है, लेकिन अच्छे डिजाइन और कथा के बिना वह असफल भी हो सकता है।
नीति और शासनः नवीन सार्वजनिक नीतियां, कानूनी सुधार और प्रशासनिक प्रणालियाँ एक भी मशीन का आविष्कार किए बिना लाखों लोगों के जीवन को बदल सकती हैं।

नवाचार में मानव कारक

नवाचार की शुरुआत मानवीय आवश्यकताओं को समझने से होती है। मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, दर्शन और इतिहास जैसे विषयों से हमें यह समझने में मदद मिलती है कि लोग कैसे सोचते हैं, व्यवहार करते हैं और बदलाव का जवाब देते हैं। इस समझ के बिनाः
समाज द्वारा प्रौद्योगिकियों को अस्वीकार किया जा सकता है
समाधान असमानता को कम करने के बजाय उसे गहरा कर सकते हैं
प्रगति कुशल हो सकती है लेकिन नैतिक नहीं
सच्चा नवाचार तकनीकी व्यवहार्यता को मानवीय मूल्यों के साथ संतुलित करता है।
जब अनुशासन मिलते हैं, तो नवाचार गुणा होता है
आज सबसे शक्तिशाली नवाचार विषयों के चौराहे पर उभरते हैं। उदाहरणों पर विचार करेंः स्वास्थ्य सेवा नवाचार में चिकित्सा, इंजीनियरिंग, नैतिकता और संचार का संयोजन है।
आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को कंप्यूटर साइंस की जरूरत है, लेकिन दर्शनशास्त्र, कानून और भाषा विज्ञान की भी।
सतत विकास पर्यावरण विज्ञान को अर्थशास्त्र, संस्कृति और स्थानीय ज्ञान के साथ मिलाता है।
यह अभिसरण दर्शाता है कि जब विज्ञान और इंजीनियरिंग मानविकी और सामाजिक विज्ञान के साथ सहयोग करते हैं तो नवाचार पनपता है।
हम नवाचार कैसे सिखाते हैं, इस पर पुनर्विचार करना
यदि हम छात्रों को यह सिखाते हैं कि नवाचार केवल विज्ञान और इंजीनियरिंग से संबंधित है, तो हम उनकी कल्पना को सीमित कर देते हैं। स्कूलों और कॉलेजों को प्रोत्साहित करना चाहिएः

विषयों में जिज्ञासा

रचनात्मक सोच और प्रश्न पूछना
समस्याओं को हल करने के विविध तरीकों का सम्मान साहित्य का एक छात्र संचार में नवाचार कर सकता है; इतिहास का एक छात्र नीति में नवीनता ला सकता है; कला का एक छात्र डिजाइन और सामाजिक प्रभाव में नवोन्मेष कर सकता है।

निष्कर्ष

नवाचार केवल विज्ञान और इंजीनियरिंग से संबंधित नहीं है। जबकि वे आवश्यक उपकरण और विधियां प्रदान करते हैं, नवाचार अंततः मानव जीवन में सुधार लाने के बारे में है — और इसके लिए कई क्षेत्रों से अंतर्दृष्टि की आवश्यकता होती है। सच्चा नवाचार तब होता है जब वैज्ञानिक ज्ञान रचनात्मकता, नैतिकता, संस्कृति और सहानुभूति से मिलता है। एक जटिल दुनिया में, भविष्य एकल विषयों का नहीं है, बल्कि उन दिमागों का है जो उन्हें जोड़ने के लिए तैयार हैं।

सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाविद स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर पंजाब

लाइब्रेरी बूस्टः कैसे पुस्तकालय छात्रों के बीच ज्ञान, ध्यान, शक्ति और रचनात्मकता का निर्माण करते हैं

डॉ विजय गर्ग

लगातार सूचनाओं, लघु वीडियो और तत्काल उत्तरों के युग में, पुस्तकालय एक छात्र के जीवन में एक शांत लेकिन शक्तिशाली शक्ति बना हुआ है। पुस्तकालय को अक्सर पुस्तकों से भरे कमरे के रूप में देखा जाता है, लेकिन वास्तव में यह एक ऐसा स्थान होता है जो सोच को आकार देता है, ध्यान केंद्रित करता है, आंतरिक शक्ति का निर्माण करता है और रचनात्मकता को बढ़ावा देता है। छात्रों के लिए, पुस्तकालयों के साथ नियमित रूप से जुड़ाव एक सच्चा ₹पुस्तकालय को बढ़ावा देना₹ हो सकता है - मन और चरित्र का सर्वांगीण संवर्धन।

1।गहन ज्ञान का एक आधार

पुस्तकालय विश्वसनीय, संरचित और विविध ज्ञान के द्वार हैं। बिखरी हुई ऑनलाइन जानकारी के विपरीत, पुस्तकालयों में पुस्तकें और पत्रिकाएं गहराई, संदर्भ और विश्वसनीयता प्रदान करती हैं। जो छात्र व्यापक रूप से पढ़ते हैं उनमें निम्नलिखित का विकास होता है
वैचारिक स्पष्टता, न कि केवल परीक्षा-उन्मुख तथ्य
विज्ञान, साहित्य, इतिहास और समाज के बारे में व्यापक दृष्टिकोण
आलोचनात्मक सोच, क्योंकि पुस्तकें प्रश्न पूछने और चिंतन को प्रोत्साहित करती हैं
एक पुस्तकालय छात्रों को अपने पाठ्यक्रम से परे अन्वेषण करने की अनुमति देता है, जिससे उन्हें विषयों के बीच विचारों को जोड़ने में मदद मिलती है। अन्वेषण की यह आदत आजीवन सीखने की नींव रखती है।

2। फोकस और एकाग्रता के लिए एक प्राकृतिक स्थान

एक पुस्तकालय की सबसे बड़ी ताकत इसका वातावरण है। मौन, व्यवस्था और उद्देश्य केंद्रित अध्ययन के लिए आदर्श परिस्थितियां बनाते हैं। एक पुस्तकालय मेंः
विकर्षण न्यूनतम हैं
पढ़ना गहन हो जाता है, खंडित नहीं
ध्यान अवधि स्वाभाविक रूप से बेहतर हो जाती है
एकाग्रता से जूझ रहे छात्रों के लिए पुस्तकालय का समय मानसिक प्रशिक्षण के रूप में कार्य करता है। नियमित पठन सत्र मस्तिष्क को धीमा करने, गहराई से ध्यान केंद्रित करने और जानकारी को बेहतर ढंग से संसाधित करने में मदद करते हैं — कौशल जो न केवल शिक्षाविदों के लिए बल्कि जीवन के लिए आवश्यक हैं।

3।मानसिक शक्ति और अनुशासन का निर्माण

पुस्तकालय चुपचाप आंतरिक शक्ति का निर्माण करते हैं। किसी पुस्तक के साथ बैठना, कठिन पृष्ठों को पढ़ना और एक अध्याय को पूरा करना धैर्य और आत्म-अनुशासन की आवश्यकता है। समय के साथ, छात्रों का विकास होता है
जटिल विचारों को संभालते समय दृढ़ता
भावनात्मक लचीलापन, क्योंकि कहानियां उन्हें संघर्षों, असफलताओं और आशा को समझने में मदद करती हैं
ज्ञान और विचार की स्पष्टता के माध्यम से प्राप्त आत्मविश्वास
जीवनी, इतिहास और साहित्य पढ़ने से छात्रों को मानवीय सहनशक्ति और साहस का अनुभव होता है, तथा वे अपनी चुनौतियों का बलपूर्वक सामना करने के लिए प्रेरित होते हैं।

4। रचनात्मकता और कल्पना की एक नर्सरी

रचनात्मकता केवल शोर में नहीं बढ़ती; यह चिंतन में भी बढ़ती है। पुस्तकालय छात्रों को उनकी तात्कालिक वास्तविकता से परे कहानियां, विचार और दुनिया प्रदान करते हैं। पढ़ने के माध्यम सेः
कल्पना का विस्तार होता है
भाषा और अभिव्यक्ति में सुधार होता है
मौलिक सोच को प्रोत्साहित किया जाता है
चाहे वह कल्पना को जन्म देने वाली कथा हो, भावनाओं को तेज करने वाली कविता हो, या नवाचार को प्रेरित करने वाली विज्ञान पुस्तकें हों, पुस्तकालय रचनात्मक दिमागों को पोषण प्रदान करते हैं। कई लेखक, वैज्ञानिक और विचारक अपनी रचनात्मकता का पता पुस्तकालयों में बिताए गए लंबे घंटों से लगा लेते हैं।

5। पुस्तकों से परेः सीखने की संस्कृति

आधुनिक पुस्तकालय सीखने के केंद्र बन रहे हैं। वे पत्रिकाएं, समाचार पत्र, डिजिटल संसाधन, चर्चाएं और सामुदायिक गतिविधियाँ प्रदान करते हैं। छात्रों के लिए, पुस्तकालय पढ़ाते हैंः
स्वतंत्र रूप से शोध कैसे करें
साझा स्थानों और विचारों का सम्मान कैसे करें
बिना दबाव के कैसे सीखें
स्व-निर्देशित शिक्षण की यह संस्कृति ऐसी दुनिया में महत्वपूर्ण है, जहां अनुकूलनशीलता रट याद करने से अधिक मायने रखती है।

निष्कर्ष

पुस्तकालय केवल परीक्षाओं के लिए एक सहायता प्रणाली नहीं है; यह एक मौन मार्गदर्शक है। यह ज्ञान को बढ़ाता है, ध्यान केंद्रित करता है, मानसिक शक्ति का निर्माण करता है और छात्रों में रचनात्मकता को अनलॉक करता है। पाठकों को पोषित करने में, पुस्तकालय विचारकों का पोषण करते हैं और विचारक भविष्य को आकार देते हैं। इसलिए, छात्रों को नियमित रूप से पुस्तकालयों का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करना न केवल शिक्षा में निवेश है, बल्कि विचारशील, रचनात्मक और लचीले व्यक्तियों के विकास में भी निवेश है।

रिटायर्डप्रिंसिपलएजुकेशनलस्तंभकारप

समान अवसर का नया भारत जब योग्यता ही पहचान बने

लेखकः- संजय कुमार बाठला

भारत आज ऐसे मोड़ पर खड़ा है जहाँ सामाजिक न्याय, समान अधिकार और योग्यता आधारित अवसरों के बीच संतुलन की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक महसूस की जा रही है। संविधान निर्माताओं ने यह स्वीकार किया था कि सदियों से वंचित वर्गों को बराबरी की पंक्ति में लाने के लिए आरक्षण नीति एक आवश्यक कदम है। इस नीति ने लाखों लोगों को शिक्षा, रोजगार और सामाजिक प्रतिष्ठा की मुख्यधारा से जोड़ने का कार्य किया।

पर अब, जब देश आर्थिक और बौद्धिक रूप से नई दिशा की ओर अग्रसर है, यह प्रश्न पुनः उठता है कि अगला कदम क्या होना चाहिए? आज की पीढ़ी 'समान अवसरों' की आकांक्षा रखती है, जहाँ हर प्रतिभा को जाति, धर्म, क्षेत्र या वर्ग की सीमाओं से परे अपनी मेहनत के बल पर आगे बढ़ने का मार्ग मिले। यह सोच केवल आदर्श नहीं, बल्कि आधुनिक भारत की आवश्यकता भी है। क्योंकि किसी भी राष्ट्र की असली शक्ति उसकी प्रतिभाशाली मानव पूँजी में होती है, और जब योग्य व्यक्ति व्यवस्था की अनदेखी का शिकार होते हैं, तो विकास की गति रुक जाती है।यह भी उतना ही सच है कि सामाजिक भेदभाव पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है। ग्राम्य भारत में अब भी जातीय वर्चस्व और शिक्षा असमानता के स्वर प्रबल हैं।

इसलिए नीतिगत दृष्टि से "आरक्षण का पुनर्गठन" हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए — ऐसा मॉडल, जो आर्थिक रूप से पिछड़े हर वर्ग को समान अवसर दे, और साथ ही सामाजिक पिछड़ेपन के genuinely प्रभावित समूहों को भी वास्तविक सहायता पहुँचाए।

शिक्षा और अवसर की समान उपलब्धता ही किसी भी लोकतंत्र की सबसे मजबूत नींव है। हमें ऐसी व्यवस्था बनानी होगी जहाँ बच्चे का भविष्य उसके स्कूल की गुणवत्ता, उसकी लगन और उसकी क्षमता पर निर्भर करे — न कि उस जाति पर जिसमें वह जन्मा है। समान शिक्षा नीति, सरकारी विद्यालयों की सुदृढ़ता और रोजगार चयन में पूर्ण पारदर्शिता इस दिशा में ठोस कदम हो सकते हैं।

अब समय है कि भारत "आरक्षण बनाम योग्यता" की बहस से आगे बढ़े और "समान अवसर बनाम असमानता" की बहस को केंद्र में लाए। जब तक अवसर की शुरुआत समान नहीं होगी, परिणामों की समानता केवल एक सपना बनी रहेगी।उम्मीद यही है कि आने वाला भारत ऐसा हो — जहाँ हर युवा अपनी काबिलियत और मेहनत के आधार पर खड़ा हो सके, जहाँ योग्यता का अधिकार हर नागरिक का नैतिक और संवैधानिक हक बन जाए, और जहाँ किसी को भी अपनी पहचान साबित करने के लिए अपने जन्म की व्याख्या न करनी पड़े। यही नए भारत का सच्चा सपना है — सशक्त, सक्षम और समान।

योग्यता का अधिकार

बदल रहा है देश हमारा, बदल रही है धारा,
अब हर प्रतिभा को मिलना चाहिए, अपना आसमान सारा।
कल की मजबूरियाँ शायद, कुछ और रही होंगी, पर आज की पीढ़ियाँ, नई उम्मीदें बो रही होंगी।
जाति-पाति के बंधनों से, कब तक हम बँधेंगे?
पिछड़ेपन की इस परिभाषा को, कब तक हम ढोएंगे?
जिसके हाथों में हुनर है, उसे अवसर मिलना चाहिए, समानता का सच्चा सूरज, अब तो खिलना चाहिए।
प्रतिभा जब सिसकती है, कागज़ के उन खानों में, देश पीछे छूट जाता है, विकास के मैदानों में। आर्थिक तंगी हो आधार, तो समझ में आता है, पर जाति देख कर मौका देना, मन को बड़ा दुखाता है।
सबको एक समान धरा हो, एक सा ही आकाश मिले, मेहनत करने वाले को, उसकी मेहनत का प्रकाश मिले।
न हो किसी का हक छोटा, न किसी का बड़ा हो, भारत का हर युवा अब, अपनी काबिलियत पर खड़ा हो।
मिटा दो ये दीवारें सारी, जो हमें बाँटती हैं, ये आरक्षण की बेड़ियाँ, अक्सर उड़ान काटती हैं।
समान शिक्षा, समान अवसर, यही अब नारा हो, योग्य हाथों में ही सुरक्षित, भविष्य हमारा हो।

ऊपरलिखित लेख एवम्कविता आज के युवा की जरूरत के आधार पर सामाजिक समानता और ₹योग्यता आधारित अवसर₹ पर टिप्पणी है, जिसमें आरक्षण नीति, प्रतिभा की पहचान और सामाजिक न्याय की अवधारणा पर विमर्श निहित है।

क्रिकेट जो संवाद था, कैसे बन गया टकराव का मंच

· प्रो. आरके जैन "अरिजीत"

क्रिकेट, जिसे कभी पड़ोसी देशों के बीच संवाद और सौहार्द का माध्यम माना जाता था, आज उसी मैदान पर राजनीतिक कटुता की गहरी लकीरें खींचता दिखाई दे रहा है। बांग्लादेशी तेज गेंदबाज मुस्ताफिजुर रहमान की आईपीएल से अचानक रिहाई ने खेल की सीमाओं को लांघते हुए भारत–बांग्लादेश संबंधों को विवाद के केंद्र में ला खड़ा किया है। जनवरी 2026 की शुरुआत में बीसीसीआई द्वारा कोलकाता नाइट राइडर्स को दिया गया यह निर्देश केवल एक खिलाड़ी का करियर प्रभावित करने तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उसने यह प्रश्न खड़ा कर दिया कि क्या अब क्रिकेट भी कूटनीति और आक्रोश का उपकरण बन चुका है। मैदान पर गेंद नहीं, बल्कि अविश्वास और नाराज़गी उछलती दिखाई दे रही है।

इस पूरे विवाद की जड़ें बांग्लादेश की आंतरिक राजनीतिक अस्थिरता में छिपी हैं। शेख हसीना सरकार के पतन के बाद वहां अल्पसंख्यक हिंदू समुदाय पर बढ़ते हमलों की खबरों ने भारत में तीखी प्रतिक्रिया को जन्म दिया। अगस्त 2025 से जनवरी 2026 के बीच हिंसा, आगजनी और हत्याओं की घटनाओं ने सामाजिक माध्यमों और राजनीतिक मंचों पर उबाल पैदा कर दिया। दिपु चंद्र दास की लिंचिंग जैसी घटनाएं केवल मानवीय त्रासदी नहीं रहीं, बल्कि वे पड़ोसी देश के साथ भावनात्मक रिश्तों पर भी चोट करने लगीं। इसी आक्रोश की छाया क्रिकेट तक पहुंच गई, जहां खेल अब भावनाओं का बंधक बनता दिख रहा है।

आईपीएल 2026 की नीलामी में मुस्ताफिजुर रहमान की बोली एक बड़े क्रिकेटीय क्षण के रूप में दर्ज हुई थी। आधार मूल्य से कई गुना अधिक, 9.20 करोड़ रुपये में केकेआर द्वारा खरीदे गए इस गेंदबाज को उनकी घातक कटर और अनुभव के लिए चुना गया था। चेन्नई और दिल्ली जैसी टीमों से भिड़ंत के बाद मिली यह राशि उनकी लोकप्रियता और उपयोगिता को दर्शाती थी। लेकिन कुछ ही हफ्तों में यह निवेश राजनीतिक दबावों के आगे बेमानी हो गया। बीसीसीआई का आदेश आते ही आईपीएल की चमक फीकी पड़ गई और खेल के व्यावसायिक तर्क भावनात्मक शोर में दब गए।

बीसीसीआई द्वारा दिए गए संक्षिप्त और अस्पष्ट कारणों ने विवाद को और हवा दी। 'वर्तमान परिस्थितियों' का हवाला देकर की गई रिहाई ने यह स्पष्ट कर दिया कि क्रिकेट प्रशासन भी अब राजनीतिक माहौल से अछूता नहीं रहा। यह फैसला पाकिस्तानी खिलाड़ियों के आईपीएल बहिष्कार की याद दिलाता है, जब कूटनीतिक तनाव ने खेल के दरवाजे बंद कर दिए थे। इस बार भी सोशल मीडिया पर दबाव, राष्ट्रवादी भावनाएं और राजनीतिक बयानबाज़ी निर्णायक भूमिका में दिखीं। इससे क्रिकेट की स्वायत्तता और निष्पक्षता पर गंभीर प्रश्नचिह्न लग गए हैं।

भारत में जहां इस कदम को कुछ वर्गों ने 'राष्ट्रीय भावनाओं की रक्षा' बताया, वहीं बांग्लादेश में इसे अपमान और भेदभाव के रूप में देखा गया। बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड ने तीखी प्रतिक्रिया देते हुए मुस्ताफिजुर का एनओसी रद्द कर दिया और भारत में आईपीएल प्रसारण पर रोक लगाने की धमकी दी। इतना ही नहीं, उन्होंने आईसीसी से टी20 विश्व कप 2026 के मैच भारत से श्रीलंका स्थानांतरित करने की औपचारिक मांग भी की। यह प्रतिक्रिया केवल एक खिलाड़ी के समर्थन में नहीं थी, बल्कि राष्ट्रीय सम्मान और संप्रभुता की घोषणा बन गई, जिसने रिश्तों में और खटास घोल दी।

टी20 विश्व कप 2026 इस पूरे विवाद की सबसे अहम अंतरराष्ट्रीय कड़ी के रूप में उभरता दिखाई दे रहा है। भारत में प्रस्तावित बांग्लादेशी मैचों को लेकर सुरक्षा आशंकाओं का हवाला देते हुए श्रीलंका स्थानांतरित करने की औपचारिक मांग की गई है। BCB ने आईसीसी को पत्र भेजकर यह अनुरोध किया है, जिसने टूर्नामेंट की तैयारियों पर सवाल उठाए हैं। यदि यह मांग स्वीकार हुई, तो यह एक खतरनाक उदाहरण बनेगा कि राजनीतिक तनाव किस तरह वैश्विक खेल आयोजनों की रूपरेखा बदल सकता है। इसका सीधा असर विश्व कप की गरिमा, निष्पक्षता और अंतरराष्ट्रीय भरोसे पर पड़ना तय है।

भारत और बांग्लादेश के क्रिकेट संबंधों का इतिहास उतार–चढ़ाव और सहयोग की मिली-जुली कहानियों से भरा रहा है। 2011 विश्व कप से लेकर कई द्विपक्षीय श्रृंखलाओं तक, क्रिकेट ने दोनों देशों को करीब लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। मुस्ताफिजुर जैसे खिलाड़ी इसी सेतु के प्रतीक रहे हैं, जिन्हें सीमाओं से परे सम्मान और प्रशंसा मिली। किंतु वर्तमान घटनाक्रम ने उस सौहार्द की नींव को हिला दिया है। 1971 के युद्ध की स्मृतियां, हालिया हिंसा और बढ़ता अविश्वास रिश्तों को फिर से संदेह और दूरी की दिशा में धकेल रहा है।

इस पूरे प्रकरण में राजनीतिक हस्तक्षेप सबसे निर्णायक तत्व बनकर उभरा है। भारत में कुछ नेताओं ने केकेआर और बीसीसीआई के फैसले को राष्ट्रभावना से जोड़कर सही ठहराया, जबकि अन्य ने इसे खेल की निष्पक्षता पर आघात बताया। यह विवाद दिखाता है कि मामला केवल समर्थन या विरोध तक सीमित नहीं, बल्कि खेल संस्थाओं की स्वायत्तता से भी जुड़ा है। सोशल मीडिया पर इतना उबाल रहा कि शाहरुख खान तक निशाने पर आ गए, जहां भावनाएं विवेक पर भारी पड़ती दिखीं। नतीजतन क्रिकेट धीरे-धीरे खेल से अधिक राजनीतिक प्रतीक बनता जा रहा है, जो लोकतांत्रिक संवाद के बजाय ध्रुवीकरण को बढ़ावा दे रहा है।

आगे की राह और अधिक धुंधली व अनिश्चित होती दिखाई दे रही है। द्विपक्षीय श्रृंखलाएं, खिलाड़ियों का आदान–प्रदान और संयुक्त क्रिकेट आयोजन सभी गंभीर सवालों के घेरे में आ खड़े हुए हैं। यदि यह तनाव लंबा खिंचता है, तो भारत–बांग्लादेश के क्रिकेट संबंध भी उसी राह पर बढ़ सकते हैं, जहां राजनीति ने खेल को वर्षों तक जकड़े रखा। आईसीसी के हस्तक्षेप की संभावना भले मौजूद हो, लेकिन ठोस राजनीतिक इच्छाशक्ति के बिना किसी स्थायी समाधान की उम्मीद कमजोर है। यह हालात वैश्विक क्रिकेट के लिए चेतावनी हैं कि बढ़ता राजनीतिक दखल अंततः खेल की आत्मा को खोखला कर देगा।

वेनेजुएला घटनाक्रम : हतप्रभ दुनिया, बेलगाम ट्रंप

डॉ घनश्याम बादल

लोकतंत्र के स्वयं भू ठेकेदार और दुनियाभर में थानेदारी करने वाले अमेरिका ने जिस तरीके से वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो को उनकी पत्नी सिलविया फ्लोरेस के साथ बेडरूम से घसीट कर, बंधक बनाकर हाथों में हथकड़ियां और पैरों में बेड़ियां डालकर डिटेंशन सेंटर में रखा है, वह एक तानाशाह, वैध या अवैध राष्ट्रपति का अपहरण मात्र नहीं बल्कि वेनेजुएला के प्रतीक रूप में दुनिया भर के लोकतंत्र की आत्मा का अपहरण एवं प्रताड़न है।

जब किसी संप्रभु देश का राष्ट्रपति खुले तौर पर यह कहता है कि उसने दूसरे संप्रभु देश में सैन्य या अर्धसैन्य अभियान चलाकर वहां के राष्ट्राध्यक्ष को बंधक बनाया, तो यह केवल एक देश की कार्रवाई नहीं अपितु अंतरराष्ट्रीय कानून, संयुक्त राष्ट्र चार्टर और वैश्विक व्यवस्था की सामूहिक अवहेलना बन जाती है। यह वही अमेरिका है जो दुनिया को लोकतंत्र, मानवाधिकार और कानून का पाठ पढ़ाता रहा है।

वैसे यह पहली बार नहीं हुआ है. अमेरिका का ताकत प्रदर्शन का यह चेहरा पहले भी कई बार सामने आ चुका है। चिली, पनामा, ग्वाटेमाला, अफगानिस्तान, वियतनाम, ईरान व इराक जैसे कितने ही देश में अमेरिका ने मनमाने आरोप लगाकर वहां के शासको को सत्ता से बाहर किया है।

एब्सोल्यूट रेजोल्यूशन नाम के इस अभियान के बाद जिस तरह ट्रंप ने अमेरिका में बैठकर कोलंबिया और मेक्सिको की राष्ट्रपतियों को भी धमकी दी वह और भी ज्यादा चिंताजनक परिस्थितियों की ओर संकेत करता है।

ट्रंप का यह अभियान उसी 'रूल्स-बेस्ड ऑर्डर' का शव परीक्षण है, जिसकी दुहाई पश्चिम दशकों से देता आया है।

भले ही डोनाल्ड ट्रंप मादूरो पर ड्रग तस्करी एवं आतंकवाद को बढ़ावा देने का आरोप लगा रहे हैं लेकिन सच कुछ और ही है। यदि ऐसे आरोपी के आधार पर अमेरिका यह कार्रवाई करता है तो फिर उसका पहला टारगेट पाकिस्तान होना चाहिए था लेकिन आतंकिस्तान का नाम पा चुके इस देश को वह गोद में बैठा कर रखता है वहां के सेना अध्यक्ष को लोकतांत्रिक सरकार को एक तरफ करते हुए लंच पर बुलाता है। अमेरिका की कथनी करनी में यह फर्क कोई पहली बार परिलक्षित नहीं हुआ है यह उसकी बहुत पुरानी फितरत रही है।

यदि गहराई में जाया जाए तो इस अभियान का मूल राजनीतिक कारण है अपनी मनमाफिक सत्ता-परिवर्तन की ज़िद। और साथ ही साथ पेट्रोलियम, सोने एवं हीरे जैसे बहुमूल्य खनिजों की संपदा से मालामाल इस देश पर कब्जा करने की उसकी गिद्ध दृष्टि है।

वैसे वेनेजुएला के साथ अमेरिका का संघर्ष कोई एक दिन का नहीं है। ह्यूगो चावेज़ के समय से ही वाशिंगटन की असहजता जगज़ाहिर रही है। निकोलस मादुरो उस असहजता की निरंतरता हैं। अमेरिका को समस्या केवल मादुरो से नहीं, बल्कि उस राजनीतिक मॉडल से है जो अमेरिकी प्रभाव से बाहर निकलकर संसाधनों पर राष्ट्रीय नियंत्रण और सामाजिक राज्य की बात करता है।

ट्रंप के कृत्य से साफ है कि लोकतंत्र का सवाल केवल एक औज़ार था, असली लक्ष्य सत्ता-परिवर्तन। जब चुनाव, प्रतिबंध और कूटनीति काम नहीं आए, तो सीधा हस्तक्षेप ही अमेरिकी राजनीति का नंगा सच है।

इस घटनाका आर्थिक पक्ष तेल, डॉलर और सत्ता पर नियंत्रण है। वेनेजुएला दुनिया के सबसे बड़े प्रमाणित तेल भंडारों में से एक है। यह तथ्य इस पूरे घटनाक्रम की चाबी है। अमेरिकी अर्थव्यवस्था और उसकी वैश्विक हैसियत तेल, डॉलर और नियंत्रण के त्रिकोण पर टिकी है। वेनेजुएला का अपने तेल संसाधनों पर संप्रभु नियंत्रण और चीन-रूस जैसे देशों से बढ़ता सहयोग, अमेरिका के लिए रणनीतिक चुनौती था।

ट्रंप का अभियान दुनिया भर के देशों को खुला धमकी भरा संदेश है कि ऊर्जा संसाधनों पर स्वतंत्र नीति अपनाने की कीमत चुकानी पड़ती है। यह संदेश केवल वेनेजुएला के लिए नहीं, बल्कि उन तमाम देशों के लिए है जो वैश्विक आर्थिक ढांचे में अपनी शर्तों पर जीना चाहते हैं।

अमेरिकी हस्तक्षेप के पीछे केवल राजनीति और अर्थशास्त्र नहीं, एक गहरी सांस्कृतिक मानसिकता भी है। उसके पीछे की धारणा है कि अमेरिका को जो उचित लगे, वही वैश्विक नैतिकता है। और जो उसे चुनौती दे उसे निष्ठा नाबूत करना उसके लिए अनैतिक नहीं है।

लैटिन अमेरिका का इतिहास इस मानसिकता का शिकार रहा हैचिली, ग्वाटेमाला, पनामा, निकारागुआ और अब वेनेजुएला हो सकता है इसके बाद कोलंबिया और मैक्सिको की भी बारी आए। जिसकी झलक ट्रंप के उसे अभियान भरे बयान के बाद मिल रही है जिसमें उन्होंने मेक्सिको के राष्ट्रपति को अपनी जान की परवाह करने की खुली धमकी दी है। ख़ैर कल जो होगा, सो होगा। अभी तो वेनेजुएला के घटनाक्रम का विश्व पर क्या प्रभाव पड़ेगा है इसका आकलन ज़रूरी है.

राष्ट्रपति को बंधक बनाना केवल एक व्यक्ति का अपहरण नहीं, पूरे राष्ट्र की संप्रभुता का अपहरण है। इससे वेनेजुएला के भीतर राजनीतिक अस्थिरता बढ़ेगी, सामाजिक ध्रुवीकरण गहराएगा और हिंसा की आशंका प्रबल होगी। वहां का आम नागरिकजो पहले ही प्रतिबंधों, महंगाई और अभावों से जूझ रहा है अब और असुरक्षित महसूस करेगा। लोकतंत्र का दावा करने वाली ताक़तों ने एक बार फिर यह साबित कर दिया है कि आम जनता उनके एजेंडे में सबसे आख़िर में आती है। भले ही तात्कालिक रूप से रूस चीन ब्रिटेन और यूरोपीय यूनियन के देश ने इस घटनाक्रम की आलोचना की है लेकिन सच यह भी है कि यह आलोचना केवल शाब्दिक निंदा तक ही सीमित रहने वाली है।

चुनावी पारिवारिक एकता...!

अस्तित्व 'संकट' के बीच पारिवारिक एकता,
अपनी सत्ता सदा बनी रहें यहीं नेता देखता।
यहां कोई न स्थायी दोस्त ना ही कोई दुश्मन,
इस कुर्सी के लिए होते रहते बेमेल गठबंधन।

संभावना, चुनौतियों में अवसरों की बुनियाद,
ये एक और एक ग्यारह होंगे करते फरियाद।
अभी-भी दो परिवारों का हो रहा यह मिलन,
भई, बिना बरसात के इसमें आई थी सीलन।

कुनबों में बिखराव कहानी अलग-अलग रही,
क्योंकि, रिश्तों में भी खूब जम गया था दही।
दिल भले मिले ना मिले 'दल से बल' ही मिले,
अद्भुत संभावनाओं से 'चेहरे' ज़रूर हैं खिलें।
(संदर्भ-महाराष्ट्र चुनाव में पारिवारिक एकता का राग)

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)
इन्दौर-452011 (मध्य प्रदेश)

कुमावत समाज तेलंगाना की आम मीटिंग

कुमावत समाज तेलंगाना के समस्त आजीवन सदस्य एवं तेलंगाना की सभी शाखाओं के अध्यक्षों की एक महत्वपूर्ण आम बैठक दिनांक 7 जनवरी 2026, समय प्रातः 11:30 बजे से दोपहर 2:00 बजे तक आयोजित की जाएगी।

यह बैठक कुमावत समाज हैदराबाद, ज्ञान बाग कॉलोनी में आयोजित होगी। बैठक निर्धारित समयानुसार ही संपन्न की जाएगी।

बैठक के उपरांत सभी उपस्थित सदस्यों के लिए भोजन व्यवस्था भी रखी गई है। इस बैठक में प्रदेश अध्यक्ष श्री सोनाराम तिलायचा का दो वर्षीय कार्यकाल पूर्ण हो रहा है, अतः इस अवसर पर नए प्रदेश अध्यक्ष एवं नवीन कार्यकारिणी का गठन किया जाएगा। इस चुनाव प्रक्रिया में केवल आजीवन सदस्य एवं तेलंगाना की शाखाओं के अध्यक्ष ही भाग ले सकेंगे। कुमावत समाज तेलंगाना प्रदेश अध्यक्ष व कार्यकरणी पद हेतु केवल आजीवन सदस्य ही पात्र होंगे।

देर से पहुंचे अधिकारी को जिला कलेक्टर ने हटाया

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर/रायगड़ा : सोमवार को डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट आशुतोष कुलकर्णी ने रायगढ़ में एक सुनवाई के लिए देर से पहुंचे अधिकारियों को बाहर निकाल दिया।रिपोर्ट्स के मुताबिक, सुनवाई सुबह 10 बजे ज़िला परिषद कॉन्फ्रेंस रूम में शुरू हुई और डिस्ट्रिक्ट कलेक्टर तय समय पर वहां पहुंच गए। लेकिन, कुछ सीनियर अधिकारी तय समय पर वहां नहीं पहुंचे। बताया जा रहा है कि इस पर सख्त कार्रवाई की गई। इसे गंभीरता से लेते हुए रायगढ़ के सब-कलेक्टर के साथ-साथ देर से पहुंचने वाले अधिकारियों को भी अंदर जाने से रोक दिया गया।लेकिन, देर से पहुंचने वाले अधिकारियों में डिस्ट्रिक्ट असिस्टेंट सुपरिटेंडेंट, डिस्ट्रिक्ट पंचायत ऑफिसर, डिस्ट्रिक्ट सोशल सिक्योरिटी ऑफिसर, डिस्ट्रिक्ट सोशल वेलफेयर ऑफिसर, डिस्ट्रिक्ट इन्फॉर्मेशन एंड पब्लिक रिलेशन्स ऑफिसर, रायगडा वीडियो, एक असिस्टेंट कंजर्वेटर ऑफ फॉरेस्ट्स, रूरल ड्रिंकिंग वॉटर सप्लाई डिपार्टमेंट के एक ऑफिसर और कई दूसरे लोग शामिल थे।

राज्य सरकार ने बताया है कि वह ऐसे प्रोग्राम में लापरवाही बरतने वाले अधिकारियों के खिलाफ सख्त एक्शन लेगी, और जनता की शिकायतों को सबसे ज़्यादा प्राथमिकता देगी।

डॉक्टर्स अड़े हुए हैं, आज से 2 घंटे OPD बंद रहेगी

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : डॉक्टर्स अड़े हुए हैं। आज से 2 घंटे OPD बंद रहेगी। OMSA ने ऐसा सख्त फैसला लिया है। चूंकि सरकार डॉक्टरों की मांगें नहीं सुन रही है, इसलिए वे अपनी जिद पर अड़े हुए हैं। सुबह 9 बजे से रात 11 बजे तक अलग-अलग सरकारी अस्पतालों में OPD बंद रहने से हालात और खराब हो जाएंगे। नतीजतन, मरीज़ों की सेवा में रुकावट आएगी। इसलिए, मेडिकल कॉलेज को इससे बाहर रखा गया है।

हेल्थ मिनिस्टर मुकेश महालिंग ने डॉक्टरों से काम पर आने की अपील की है। हेल्थ मिनिस्टर मुकेश महालिंग ने डॉक्टरों के आंदोलन पर रिएक्शन दिया है। उन्होंने कहा कि डॉक्टर्स मरीज़ों की सेवा के काम पर आएं। बातचीत से सब कुछ हल हो जाएगा, हमसे बात करें।

जूनियर डॉक्टर्स एसोसिएशन इस सख्त फैसले पर सहमत हो गया है। OMSA प्रमोशन, सैलरी बढ़ाने, काम पर सुरक्षा जैसी 18 मांगों को पूरा करने के लिए प्रोटेस्ट कर रहा है। काले बैज पहनकर, 26 तारीख से सुबह 10 बजे से 11 बजे तक OPD बंद रखे गए हैं। कृपया ध्यान रखें कि मरीज़ों की सर्विस में रुकावट न आए। जानकारी के मुताबिक, डॉक्टरों ने आज सुबह 9 बजे से 11 बजे तक सरकारी अस्पतालों में OPD सर्विस बंद करके विरोध शुरू कर दिया है। डॉक्टर इन दो घंटों तक OPD में मरीज़ों को नहीं देखेंगे। अगर सरकार 14 तारीख तक उनकी मांगों पर कोई एक्शन नहीं लेती है, तो OMSA ने चेतावनी दी है कि सुबह और दोपहर दोनों समय दो-दो घंटे OPD बंद रखे जाएंगे। हालांकि, इस समय सभी इमरजेंसी सर्विस जारी हैं।

प्रदूषित जल से जन-जीवन पर संकट: इंदौर की चेतावनी कहानी

-सुनील कुमार महला

कहां गया है कि 'जल ही जीवन है।' लेकिन जल किसी की जान ले लें तो यह बहुत दुखद ही कहा जाएगा। हाल ही में देश के सबसे साफ शहर माने जाने वाले इंदौर के भागीरथपुरा इलाके में गंदा पानी पीने की वजह से उल्टी-दस्त होने से कम से कम छह लोगों की मौत की हो चुकी है तथा मीडिया में उपलब्ध जानकारी के अनुसार फिलहाल शहर के 41 अस्पतालों में कुल 203 मरीजों का इलाज चल रहा हैं और इनमें से 34 लोगों को आईसीयू में रखा गया है और उनकी हालत को देखते हुए इलाज पर खास ध्यान दिया जा रहा है। अच्छी बात यह है कि गंदे पानी पीने से उल्टी-दस्त फैलने के बाद प्रशासन और स्वास्थ्य विभाग लगातार हालात पर नजर बनाए हुए है और मरीजों को जरूरी मेडिकल सुविधा दी जा रही है। हालांकि, लोकल लोगों का दावा है कि गंदे पानी से छह महीने के एक बच्चे समेत कुल 16 लोगों की जान गई है। मीडिया में उपलब्ध जानकारी के अनुसार यह घटना मुख्यतः शहर के कुछ इलाकों में हुई, जहाँ सीवर लाइन और जलापूर्ति पाइपलाइन में लीकेज/क्रॉस-कनेक्शन के कारण दूषित पानी घरों तक पहुंचा। इस पानी के सेवन से लोगों को तेज दस्त, उल्टी, बुखार और डिहाइड्रेशन जैसी गंभीर समस्याएं हुईं तथा जांच में पानी में हानिकारक बैक्टीरिया (जैसे ई-कोलाई) पाए गए, जो मानव मल से फैलते हैं।भारत ही नहीं, आज विश्व स्तर पर दूषित जल एक गंभीर मानव-स्वास्थ्य और विकास समस्या बना हुआ है। बहरहाल, यहां पाठकों को बताता चलूं कि विश्व तथा भारत-दोनों स्तरों पर दूषित जल (वाटर पोल्यूशन) के कारण लगभग समान हैं, हालांकि जनसंख्या घनत्व, औद्योगिकीकरण और प्रबंधन की कमी के कारण भारत में इनका प्रभाव अधिक गंभीर रूप में दिखाई देता है। प्रमुख कारणों में प्रमुख रूप से औद्योगिक अपशिष्टों, घरेलू सीवेज और मलजल, कृषि रसायनों का अत्यधिक उपयोग, ठोस कचरा और प्लास्टिक प्रदूषण, धार्मिक और सामाजिक गतिविधियाँ, खनन और निर्माण गतिविधियाँ तथा भूजल का प्राकृतिक व मानवजनित प्रदूषण आदि को शामिल किया जा सकता है। यह बहुत ही दुखद है कि आज विभिन्न कल-कारखानों से निकलने वाला रासायनिक कचरा, भारी धातुएँ (सीसा, पारा, आर्सेनिक), रंग, एसिड और विषैले तत्व बिना पर्याप्त शोधन के नदियों, झीलों और भूजल में छोड़ दिए जाते हैं। इससे जल न केवल पीने योग्य नहीं रहता, बल्कि जलीय जीवन भी नष्ट होता है। हमारे यहां सीवेज सिस्टम भी ठीक नहीं है और आज यह देखने में आता है कि बड़े बड़े शहरों और कस्बों में उत्पन्न होने वाला सीवेज अक्सर बिना उपचार के नदियों में बिना किसी रोक-टोक के धड़ल्ले से प्रवाहित कर दिया जाता है। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज भारत में सीवेज ट्रीटमेंट क्षमता की कमी के कारण यह दूषित जल का सबसे बड़ा स्रोत बन चुका है। आज खेतों में अधिक उत्पादन लेने के लिए विभिन्न कीटनाशकों, उर्वरकों का प्रयोग किया जाता है। वास्तव में, खेतों में प्रयुक्त रासायनिक उर्वरक, कीटनाशक और खरपतवारनाशी वर्षा के पानी के साथ बहकर जलस्रोतों में पहुँच जाते हैं। इससे नाइट्रेट और फॉस्फेट की मात्रा बढ़ती है, जो जल को विषैला बनाती है।प्लास्टिक, पॉलीथिन, घरेलू कचरा और मेडिकल वेस्ट का अनुचित निस्तारण नदियों और तालाबों को प्रदूषित करता है। आज के समय में तो

जल प्रदूषण का एक सबसे बड़ा और गंभीर कारण प्लास्टिक माना जा रहा है। आधुनिक जीवनशैली में प्लास्टिक का अत्यधिक उपयोग किया जा रहा है जैसे पॉलीथिन बैग, बोतलें, पैकेजिंग सामग्री और डिस्पोज़ेबल वस्तुएँ आदि। जिसके परिणामस्वरूप आज हमारी नदियों, झीलों और समुद्रों में बड़ी मात्रा में प्लास्टिक पहुँच रहा है।पाठक जानते हैं कि प्लास्टिक जैव-अपघटित नहीं होता, बल्कि सैकड़ों वर्षों तक जल में बना रहता है और धीरे-धीरे माइक्रोप्लास्टिक में बदल जाता है। ये सूक्ष्म कण जलीय जीवों द्वारा निगल लिए जाते हैं, जिससे उनकी मृत्यु होती है और अंततः यही विषैले कण खाद्य श्रृंखला के माध्यम से मानव शरीर तक पहुँचते हैं। इसके अलावा प्लास्टिक जल प्रवाह को बाधित करता है, नालों को जाम करता है और जल स्रोतों की प्राकृतिक शुद्धता को नष्ट करता है। इसलिए प्लास्टिक प्रदूषण न केवल पर्यावरण बल्कि मानव स्वास्थ्य के लिए भी एक गंभीर खतरा बन चुका है। आज दूषित जल की समस्या वैश्विक है, लेकिन भारत में कचरा प्रबंधन की कमजोरी इसे और गंभीर बनाती है।हमारा देश एक धार्मिक देश है और हमारे यहां नदियों, झीलों, पानी के विभिन्न स्त्रोतों आदि में मूर्तियों का विसर्जन, पूजा सामग्री, अस्थि विसर्जन और सामूहिक स्नान जैसी गतिविधियाँ जल में रसायन, रंग और जैविक कचरा बढ़ाती हैं, जिससे जल की गुणवत्ता प्रभावित होती है। आज विकास के नाम पर अंधाधुंध खनन गतिविधियां की जा रहीं हैं और खनन से निकला मलबा, विभिन्न रसायन और निर्माण कार्यों से बहकर आने वाली मिट्टी नदियों में गाद और विषैले तत्व बढ़ाती है, जिससे जल प्रदूषित होता है। इसके अलावा, कुछ क्षेत्रों में आर्सेनिक, फ्लोराइड और लवणता जैसी समस्याएँ प्राकृतिक हैं, लेकिन अंधाधुंध दोहन और प्रदूषित जल का रिसाव इन्हें और गंभीर बना देता है।निष्कर्षतः, हम यहां यह बात कही सकते हैं कि आज विश्व और भारत दोनों में दूषित जल की समस्या मानव गतिविधियों का ही परिणाम है। यदि समय रहते प्रभावी जल प्रबंधन, अपशिष्ट शोधन और जन-जागरूकता नहीं बढ़ाई गई, तो यह समस्या भविष्य में और भी भयावह रूप ले सकती है। यदि हम यहां जल से संबंधित आंकड़ों की बात करें तो विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) और यूनिसेफ के अनुसार आज भी दुनिया में लगभग 2.2 अरब लोग सुरक्षित रूप से प्रबंधित पेयजल सेवा से वंचित हैं, यानी उन्हें ऐसा पानी नहीं मिल पाता जो घर पर उपलब्ध, निरंतर और दूषण-मुक्त हो। इनमें से करीब 1.7 अरब लोग ऐसे जल स्रोतों का उपयोग करते हैं, जिनमें मल-जनित प्रदूषण का जोखिम रहता है, जबकि लगभग 115 मिलियन लोग सीधे नदियों, तालाबों और झीलों जैसे सतही जल पर निर्भर हैं। आंकड़े बताते हैं कि दूषित पानी के सेवन से हर वर्ष लगभग 5 लाख से अधिक लोगों की मौत होती है, जिनमें बड़ी संख्या छोटे बच्चों की होती है। इसके साथ-साथ दुनिया में करीब 3.5 अरब लोग सुरक्षित स्वच्छता सुविधाओं से भी वंचित हैं, जिससे जल स्रोतों का प्रदूषण और बढ़ जाता है। ये आंकड़े स्पष्ट करते हैं कि दूषित जल वैश्विक स्वास्थ्य, गरीबी और असमानता से गहराई से जुड़ी समस्या है।भारत में यदि दूषित जल की बात करें तो हमारे देश में दूषित जल की समस्या एक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य चुनौती बन चुकी है। सरकारी व अंतरराष्ट्रीय आकलनों के अनुसार देश की लगभग 62% आबादी पेयजल के लिए भूजल पर निर्भर है, जबकि 250 से अधिक जिलों में भूजल फ्लोराइड, आर्सेनिक, नाइट्रेट, आयरन और भारी धातुओं से प्रदूषित पाया गया है। संसद में प्रस्तुत एक जानकारी के अनुसार 26,000 से अधिक ग्रामीण बस्तियों में लोगों को आज भी दूषित पानी पीने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है।शहरी क्षेत्रों में भी स्थिति चिंताजनक है।एक आकलन के मुताबिक बहुत कम शहरी परिवारों को सीधे नल से सुरक्षित पेयजल उपलब्ध है, जबकि अधिकांश लोग फिल्टर/आरओ पर निर्भर हैं, जिसकी गुणवत्ता हर जगह सुनिश्चित नहीं है। विश्व स्तर पर उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार भारत में असुरक्षित पानी से जुड़ी मौतों की दर लगभग 35 प्रति एक लाख जनसंख्या है, जो वैश्विक औसत से अधिक है। दूषित जल के कारण डायरिया, हैजा, टाइफाइड जैसी जलजनित बीमारियाँ व्यापक रूप से फैलती हैं, जिससे खासकर बच्चों और ग्रामीण आबादी के स्वास्थ्य पर गंभीर असर पड़ता है। अंत में यही कहूंगा कि साफ जल प्रत्येक मनुष्य की आवश्यकता है। हमें इसे दूषित होने से बचाना होगा। दूसरे शब्दों में कहें तो जल को दूषित होने से बचाना आज की सबसे बड़ी जरूरतों में से एक है। इसके लिए व्यक्तिगत, सामाजिक और सरकारी—तीनों स्तरों पर ठोस कदम उठाने होंगे। प्रमुख प्रभावी उपायों में क्रमशः प्लास्टिक और ठोस कचरे का सही निपटान बहुत ही महत्वपूर्ण और अहम्है। वास्तव में, नदियों, तालाबों और झीलों में प्लास्टिक, पॉलीथिन व अन्य कचरा फेंकने पर सख्त रोक होनी चाहिए तथा कचरे का पृथक्करण (गीला-सूखा) और पुनर्चक्रण को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।औद्योगिक अपशिष्ट का उपचार किया जाना चाहिए। दरअसल, उद्योगों से निकलने वाले रासायनिक अपशिष्ट को सीधे जलस्रोतों में छोड़ने के बजाय शोधन संयंत्रों में उपचारित करना अनिवार्य किया जाना चाहिए और नियमों का सख्ती से पालन होना चाहिए। घरेलू सीवेज का शोधन जरूरी है।शहरों और कस्बों में सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट (STP) की पर्याप्त व्यवस्था होनी चाहिए, ताकि गंदा पानी नदियों में जाने से पहले साफ किया जा सके।जल को दूषित होने से बचाने के लिए हमें यह चाहिए कि हम कृषि में रसायनों का सीमित, संतुलित उपयोग करें।हमें यह याद रखना चाहिए कि जैविक खेती को अपनाने से भूजल और सतही जल प्रदूषण कम होता है। इसके अलावा खुले में शौच पर पूर्ण रोक, धार्मिक और सामाजिक गतिविधियों में सावधानी बरतकर भी हम जल को प्रदूषित होने से बचा सकते हैं।पूजा-सामग्री, मूर्तियों, फूल-मालाओं और राख(भभूत)आदि को नदियों में प्रवाहित करने के बजाय वैकल्पिक, पर्यावरण-अनुकूल तरीकों को अपनाया जाना चाहिए। वर्षा जल संचयन को महत्व देना चाहिए, जैसा कि वर्षा जल संचयन से भूजल स्तर बढ़ता है और प्रदूषित जल पर निर्भरता घटती है।जल संरक्षण और जल की शुद्धता के लिए जन-जागरूकता और शिक्षा तो जरूरी है ही। वास्तव में, जल संरक्षण और स्वच्छता को लेकर लोगों में जागरूकता फैलाना अत्यंत आवश्यक है, ताकि हर नागरिक जल को दूषित होने से बचाने में अपनी भूमिका निभा सके।संक्षेप में, यह बात कही जा सकती है कि जल संरक्षण केवल सरकार की ही जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि यह समाज के हर व्यक्ति का साझा दायित्व है।याद रखिए कि छोटे-छोटे प्रयास मिलकर ही स्वच्छ और सुरक्षित जल भविष्य सुनिश्चित कर सकते हैं।

टिप्पणीकार, पिथौरागढ़, उत्तराखंड।

सौंदर्य की नई भाषा: जब महिलाएं बोलती हैं, "मेरा शरीर, मेरे नियम"

कृति आरके जैन

एक लड़की आईने के सामने खड़ी है। समाज कहता है – पतली हो जाओ, गोरी बनो, परफेक्ट बनो। लेकिन वह मुस्कुराती है और कहती है, ₹मेरा शरीर, मेरे नियम !₹ यह नारा आज लाखों महिलाओं की आवाज बन चुका है। बॉडी पॉजिटिविटी आंदोलन ने महिलाओं को सिखाया है कि सुंदरता का मतलब सिर्फ एक सांचे में फिट होना नहीं। यह आंदोलन आत्म-सम्मान, स्वीकृति और स्वतंत्रता का प्रतीक है। बॉलीवुड की चकाचौंध से लेकर सोशल मीडिया की दुनिया तक, महिलाएं अब अपने शरीर को शर्म की बजाय गर्व का विषय बना रही हैं। भारत में यह आंदोलन तेजी से फैल रहा है, जहां सदियों से महिलाओं के शरीर पर नियंत्रण की कोशिशें हुई हैं। अब समय आ गया है कि हम इस बदलाव को समझें और अपनाएं।

बॉडी पॉजिटिविटी का मूल अर्थ है हर प्रकार के शरीर को बिना शर्त स्वीकार करना – चाहे वह दुबला हो, स्थूल, गोरा, सांवला या कोई भी आकार-प्रकार। यह आंदोलन 1960 के दशक में अमेरिका में फैट एक्सेप्टेंस मूवमेंट से शुरू हुआ, और सोशल मीडिया ने इसे वैश्विक बनाया। भारत में लंबे समय तक बॉलीवुड और विज्ञापनों ने 'जीरो फिगर' को आदर्श बनाया, जिससे अनगिनत महिलाएं बॉडी इमेज इश्यूज और ईटिंग डिसॉर्डर की शिकार हुईं। लेकिन अब महिलाएं कह रही हैं कि उनका शरीर उनका निजी क्षेत्र है, कोई और तय नहीं करेगा कि वह कैसी दिखेंगी। सोशल मीडिया पर प्लस-साइज इन्फ्लुएंसर्स अपनी अनफिल्टर्ड तस्वीरें शेयर कर रही हैं, और लाखों महिलाएं इससे प्रेरित होकर खुद को प्यार करना सीख रही हैं। यह बदलाव सिर्फ दिखावे का नहीं, बल्कि गहरे मानसिक परिवर्तन का है।

भारत में बॉडी पॉजिटिविटी को नई दिशा और मजबूती देने में सोशल मीडिया की भूमिका बेहद अहम रही है। अनेक महिलाएं अपने डिजिटल मंचों पर बिना झिझक अपनी निजी कहानियां साझा कर रही हैं। वे खुलकर बताती हैं कि बचपन में 'मोटी' या 'काली' जैसे शब्दों से मिले तानों ने उनके मन पर कितने गहरे घाव छोड़े, और उस पीड़ा से निकलकर आत्मविश्वास तक पहुंचना कितना कठिन रहा। इसी ईमानदारी ने लाखों महिलाओं को खुद को स्वीकार करने की हिम्मत दी है। फैशन इंडस्ट्री में भी यह बदलाव साफ दिखाई देता है, जहां अब रैंप पर विविध शरीर आकारों की मौजूदगी बढ़ी है। कपड़ों के बाजार में भी सोच बदली है और विस्तृत साइज विकल्प सामने आ रहे हैं। महिलाएं अब साफ शब्दों में कह रही हैं कि वे अपने शरीर के अनुसार कपड़े चाहती हैं, न कि कपड़ों के अनुसार खुद को बदलना। यही सोच उन्हें मानसिक स्वतंत्रता दे रही है, जहां बॉडी शेमिंग का डर धीरे धीरे कमजोर पड़ रहा है।

'मेरा शरीर, मेरे नियम' का नारा केवल वजन या शरीर के आकार तक सीमित नहीं रह जाता, बल्कि यह महिलाओं के समग्र अधिकारों की मुखर अभिव्यक्ति बन चुका है। इसमें अपने कपड़े खुद चुनने की आज़ादी है, अपने शरीर से जुड़े निर्णय स्वयं लेने का साहस है और प्रजनन से जुड़े फैसलों पर अधिकार की स्पष्ट मांग भी शामिल है। भारतीय समाज में, जहां परिवार और रिश्तेदार अक्सर महिलाओं के शरीर पर टिप्पणी करने या उसे नियंत्रित करने का अधिकार अपने हाथ में समझ लेते हैं, यह नारा एक सशक्त प्रतिरोध की तरह उभरता है। महिलाएं अब ऑनलाइन आलोचनाओं और ट्रोलिंग को चुपचाप सहने के बजाय आत्मविश्वास से जवाब दे रही हैं। डिजिटल मंचों पर शरीर के प्राकृतिक पहलुओं को सामान्य बताने की कोशिशें तेज़ हुई हैं। मध्य आयु की महिलाएं भी इस सोच से जुड़ रही हैं, जो लंबे समय तक चुप्पी ओढ़े रहीं। इससे नई पीढ़ी तक यह संदेश पहुंच रहा है कि सुंदरता किसी एक ढांचे में नहीं, बल्कि विविधता में अपनी असली पहचान पाती है।

इस आंदोलन के सामने चुनौतियां कम नहीं हैं। कई बार बॉडी पॉजिटिविटी को व्यावसायिक ब्रांड केवल प्रचार का साधन बना लेते हैं, जहां असली

सामाजिक बदलाव पीछे छूट जाता है। कुछ महिलाएं जब अपनी फिटनेस यात्रा शुरू करती हैं, तो उन्हें ही यह कहकर निशाना बनाया जाता है कि वे आंदोलन की भावना के खिलाफ जा रही हैं। भारत में गोरेपन की क्रीमों, स्लिमिंग उत्पादों और डाइट उद्योग का प्रभाव आज भी गहरा और व्यापक है। इसके बावजूद सकारात्मक परिवर्तन इन बाधाओं से कहीं अधिक मजबूत बनकर उभरा है। स्कूलों और कॉलेजों में अब इस विषय पर खुली चर्चाएं होने लगी हैं। माताएं अपनी बेटियों को यह सिखा रही हैं कि हर शरीर अलग, अनोखा और सुंदर होता है। यह आंदोलन नारीवादी सोच का अहम हिस्सा बन चुका है, जहां महिलाएं अपने शरीर की वास्तविक स्वामिनी बन रही हैं। इसका असर उनके करियर, रिश्तों और पूरे जीवन पर सकारात्मक रूप से दिखाई दे रहा है।

बॉडी पॉजिटिविटी को जीवन में अपनाने के लिए बड़े प्रयास नहीं, बल्कि छोटे और सच्चे कदम ही पर्याप्त होते हैं। हर सुबह आईने में खुद को देखकर प्रशंसा करना आत्मस्वीकृति की शुरुआत हो सकती है। सोशल मीडिया पर उन्हीं मंचों से जुड़ना जरूरी है जो सकारात्मक सोच को बढ़ावा देते हैं। व्यायाम को सजा नहीं, बल्कि स्वास्थ्य और खुशी का माध्यम बनाना चाहिए। दोस्तों और परिवार के साथ शरीर को लेकर खुलकर बातचीत करना भी बेहद जरूरी है। भारत में यह आंदोलन अब महानगरों से निकलकर गांवों तक पहुंच चुका है, जहां महिलाएं अपनी पारंपरिक वेशभूषा में भी पूरा आत्मविश्वास महसूस कर रही हैं। विभिन्न अभियानों के माध्यम से यह सोच और मजबूत हो रही है। महिलाएं यह समझने लगी हैं कि उनका शरीर सम्मान और स्नेह का पात्र है, आलोचना का नहीं। यह परिवर्तन समाज को अधिक समावेशी, संवेदनशील और मानवीय बना रहा है।

'मेरा शरीर, मेरे नियम' सिर्फ एक नारा नहीं, बल्कि यह एक पूर्ण क्रांति बन चुका है। यह महिलाओं को सदियों से उनके ऊपर थोपे गए शर्म और सामाजिक दबाव से मुक्त कर रहा है। भारतीय समाज में, जहां सौंदर्य के मानक हमेशा सख्त और कठोर रहे हैं, यह आंदोलन अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावशाली साबित हो रहा है। हर महिला को यह याद रखना चाहिए कि वास्तविक सुंदरता बाहरी रूप में नहीं, बल्कि आत्मविश्वास, आत्म-सम्मान और आत्म-स्वीकृति में निहित होती है। समाज बदल रहा है, लेकिन हमें भी इसमें सक्रिय भूमिका निभानी होगी। अगली बार जब कोई आपके शरीर पर टिप्पणी करे, तो गर्व के साथ कहें – मेरा शरीर, मेरे नियम ! यह आंदोलन तब तक चलेगा जब तक हर महिला खुद को पूरी तरह अपनाने और सम्मान देने के लिए स्वतंत्र न हो जाए। इसमें शामिल होकर, खुद से प्रेम करना और दूसरों को प्रेरित करना न केवल व्यक्तिगत सफलता है, बल्कि यह समाज में सकारात्मक बदलाव की भी जीत है।

जयपुर सेंट्रल अल्बर्ट म्यूजियम जयपुर के पुराने इतिहास और संस्कृति की अनोखी विरासत

परिवहन विशेष न्यूज

हमारा देश विविधताओं वाला देश है, जिसमें धर्म, जाति, नस्ल, रंग, इलाका वगैरह के फर्क होने के बावजूद हम एक धागे में पिरोए हुए हैं, भारत विविधता में एकता वाला देश है, जिसका इतिहास हमें हमारे शानदार अतीत की याद दिलाता है। एजुकेशनल ट्रैवल, एजुकेशन का एक ज़रूरी हिस्सा है, इसलिए इतिहास, धार्मिक फिलॉसफी, लिटरेचर, पॉलिटिक्स, समाज, इकॉनमी, कल्चर, संस्कृति, कल्चरल हेरिटेज के बारे में जानकारी देने के लिए, हमें सीधे तौर पर एजुकेशनल टूर के ज़रिए उन जगहों पर ले जाया जाता है, जो हमारे देश की शानदार निशानियां हैं। इसी सीरीज़ के तहत, हमारे स्कूल का एजुकेशनल टूर जयपुर, राजस्थान गया। टूर के दौरान सरकारी गाइड अशोक कुमार ने पार्किंग का इंतज़ाम और दूसरा मैनेजमेंट भी देखा। मास्टर ऋषि कुमार और फाइनेंस असिस्टेंट अवतार सिंह, मैडम रूपिंदर कौर, अनीता पाठक ने पूरे ट्रिप में बहुत अच्छा मैनेजमेंट स्टाइल दिखाया, जिससे स्टूडेंट्स ने एजुकेशनल टूर का मज़ा लिया और नॉलेज हासिल की। जयपुर में अलग-अलग जगहों से होते हुए हमारा एजुकेशनल टूर नेशनल म्यूज़ियम जयपुर पहुँचा।

राजस्थान का सबसे पुराना म्यूज़ियम, जयपुर में अल्बर्ट हॉल म्यूज़ियम। यह 1876 में एक कॉन्सर्ट हॉल के तौर पर शुरू हुआ था, जिसकी नींव प्रिंस अल्बर्ट एडवर्ड (बाद में किंग एडवर्ड VII) ने रखी थी, इसे अभी गवर्नमेंट सेंट्रल आर्कियोलॉजिकल साइट के नाम से भी जाना जाता है। महाराजा राम सिंह और सवाई माधो सिंह II के राज में, यह आर्ट और पुरानी चीज़ों को रखने के लिए एक म्यूज़ियम बन गया, जिसमें इंडो-वेस्टर्न फ्यूजन आर्किटेक्चर के साथ इजिप्ट की ममी और पर्शियन कालीन जैसी चीज़ें दिखाई गईं, जो एक मॉडर्न म्यूज़ियम बन गया।

कॉन्सर्ट हॉल के तौर पर: महाराजा राम सिंह ने शुरू में इस बिल्डिंग को एक टाउन हॉल या कॉन्सर्ट हॉल के तौर पर देखा था, जिसकी नींव 1876 में प्रिंस ऑफ़ वेल्स ने रखी थी।

शानदार आर्किटेक्चरल स्टाइल:

सर सैमुअल स्विंटन जैकब और मीर हुसैन का डिज़ाइन किया हुआ, यह इंडो-सरसेनिक आर्किटेक्चर का एक बेहतरीन उदाहरण है, जिसमें इंडियन, इस्लामिक और विक्टोरियन स्टाइल का मेल है।

म्यूज़ियम में बदलाव:

सवाई माधो सिंह II ने तय किया कि इसे जयपुर की कला और पुरानी चीज़ों के लिए एक म्यूज़ियम बनाया जाना चाहिए, जिसे 1887 में आम लोगों के लिए खोला गया।

अलग-अलग स्टाइल का शानदार नमूना:

राजस्थानी स्टाइल के डिज़ाइन से लेकर अरबी असर तक, यहाँ एक अलग ही दुनिया मौजूद है।

मूर्तियां और पेंटिंग:

आप म्यूज़ियम के कमरों में दिखाई गई अलग-अलग तरह की पेंटिंग और मूर्तियों को भी देख सकते हैं। हर एक मिट्टी, मेटल, चांदी, पीतल, तांबा, कांसा, मार्बल वगैरह से बनी है, जिन पर बहुत ही नाजुक डिज़ाइन और आकार हैं।

वॉल पेंटिंग:

वॉल पेंटिंग- जयपुर के अल्बर्ट हॉल म्यूज़ियम से बाहर निकलते ही अपने साथ इतिहास का एक छोटा सा हिस्सा ले जाएं। हॉलवे और कमरों में बनी पेंटिंग और आर्टवर्क मॉडर्न आर्ट से बिल्कुल अलग हैं। हर पीस को दूसरे से अलग तरह से डिज़ाइन किया गया है, जो इंसानी ज़िंदगी और उसके विकास के अलग-अलग पहलुओं को दिखाता है। जयपुर के अल्बर्ट म्यूज़ियम में देखने लायक कुछ और दिलचस्प आर्टवर्क में अलग-अलग इंसानी चेहरों से बना एक घोड़ा पज़ल, एक बड़ा हुक्का (राजा के लिए सही), बंदूकें, खंजर, भाले और चाकू का कलेक्शन, पुराने सिक्कों का कलेक्शन, कई तरह के सेमी-प्रेशियस पत्थर के गहने, म्यूज़िकल इंस्ट्रूमेंट, रंगीन कांच की पेंटिंग, सैनिकों, राजाओं के मोम के पुतले, छोटी पेंटिंग वगैरह शामिल हैं।

कालीन और कपड़े:

शाही परिवार के पहने जाने वाले खूबसूरत कपड़ों की एक बड़ी रेंज, लेस वर्क, गोटा वर्क, बंदिश वर्क, सांगानेरी प्रिंट, कोटा डोरी और कढ़ाई के दूसरे पुराने स्टाइल उपलब्ध हैं।

कठपुतली शो:

म्यूज़ियम घूमने के बाद, स्टूडेंट्स ने राजस्थानी स्टाइल का पपेट शो देखा और वहाँ डांस का मज़ा लिया। टूरिस्ट हर दिन होने वाले लाइव पपेट शो का मज़ा ले सकते हैं। यह स्थानीय लोगों की ज़िंदगी और कठपुतली बनाने की कला की एक झलक देता है।

म्यूज़ियम में 16 गैलरी हैं:

जयपुर के शाही परिवार से जुड़ी पुरानी चीज़ें और विरासत की चीज़ें दिखाई जाती हैं। इससे विज़िटर्स को लोकल कारीगरों के हाथ से बनाए गए डिज़ाइन की झलक मिलती है, यहाँ तक कि अलग-अलग मूर्तियों की रेप्लिका भी मौजूद हैं।

इजिप्टियन ममी वंडर और अट्रैक्शन:

म्यूज़ियम का सबसे मशहूर अट्रैक्शन एक इजिप्टियन ममी का ताबूत है। यह कांच के केस में बंद है और सदियों से संभालकर रखा गया है। 2011 में ममी का एक्स-रे किया गया था जिसमें हड्डियाँ अभी भी सही-सलामत थीं।

मिट्टी के बर्तन:

जयपुर के मशहूर नीले मिट्टी के बर्तन म्यूज़ियम में रेगुलर तौर पर बक्सों में रखे देखे जा सकते हैं। कटलरी और फूलों के गमलों के शानदार पीस के साथ, मिट्टी के बर्तनों की चीज़ें ज़रूर देखनी चाहिए। हर पीस यूनिक है और दूसरे से बिल्कुल अलग डिज़ाइन किया गया है। खूबसूरत ग्लेज्ड मिट्टी के बर्तन, टेराकोटा के कटोरे और बर्तन देखें जो अलग-अलग आकार और रंगों के हैं। राजस्थानी स्टाइल के डिज़ाइन से लेकर अरबी असर तक, यहाँ एक अलग दुनिया रखी है।

आर्ट गैलरी:

जयपुर के अल्बर्ट हॉल म्यूज़ियम से बाहर निकलते समय अपने साथ इतिहास का एक छोटा सा हिस्सा हॉलवे और आर्ट गैलरी में लगे म्यूरल्स मॉडर्न आर्ट से बिल्कुल अलग हैं। हर पीस को दूसरे से अलग तरह से डिज़ाइन किया गया है, जो इंसानी ज़िंदगी और उसके विकास के अलग-अलग पहलुओं को दिखाता है।

रात का मनमोहक नज़ारा:

म्यूज़ियम की सबसे दिलचस्प बात रात में होती है। म्यूज़ियम हर रात खूबसूरत, रंगीन लाइटों से जगमगाता है। बैंगनी, गुलाबी, नारंगी और नीले रंगों के साथ, आप जयपुर के अल्बर्ट हॉल म्यूज़ियम की शान में पूरी तरह डूब सकते हैं।

इस तरह, स्टूडेंट्स को म्यूज़ियम घूमते हुए राजस्थान के इतिहास, संस्कृति और पुरानी चीज़ों के बारे में देखने और सीखने का मौका मिला। यह एजुकेशनल टूर स्टूडेंट्स के लिए प्रैक्टिकल नॉलेज का भंडार बनकर उभरा।

जय हिंद।।

अवनीश लोंगोवाल
स्टेट अवार्डी पंजाब
जिला बरनाला

झारखंड में शीतलहरी, यलो अलर्ट के कारण स्कूलों की हुई छूट्टी

विमानों के उड़ान पर पड़ा बड़ा प्रभाव

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची ,मौसम केंद्र ने अनुमान किया है कि झारखंड के अलग-अलग हिस्सों में पांच और छह जनवरी को शीतलहरी चल सकती है. इसका सबसे अधिक असर उत्तरी, पश्चिमी और मध्य भागों में पड़ सकता है. इसे लेकर मौसम केंद्र ने येलो अलर्ट जारी किया है. लोगों को सतर्कता बरतने के लिए कहा गया है. इस दौरान न्यूनतम तापमान में तीन से चार डिग्री सेसि तक कमी आ सकती है. इसे देखते हुए रांची एवं अन्य कुछ जिला प्रशासन ने पांच और छह जनवरी तक सभी स्कूलों को बंद करने का आदेश दिया है. रांची जिले को येलो जोन की श्रेणी में रखा गया है. मौसम केंद्र के अनुसार, रविवार को राजधानी का अधिकतम तापमान तीन डिग्री सेसि के करीब गिर गया. रविवार को राजधानी का अधिकतम तापमान 20.6 जबकि न्यूनतम तापमान 10 डिग्री सेसि के आसपास रिकॉर्ड किया गया. वहीं, जमशेदपुर का अधिकतम तापमान करीब पांच डिग्री सेसि गिर गया. जमशेदपुर का अधिकतम तापमान 21 जबकि न्यूनतम तापमान 11 डिग्री सेसि के आसपास रिकॉर्ड किया गया

खराब मौसम और अन्य कारणों से रविवार को रांची आनेवाला एक विमान रद्द कर दिया गया, जबकि दो विमानों को कोलकाता डायवर्ट करना पड़ा. वहीं, कई विमान देर आये और कई देर से उड़े. इससे यात्रियों को काफी परेशानी हुई. जानकारी के अनुसार, रांची में मौसम खराब रहने के कारण एयर इंडिया के बेंगलुरु-रांची विमान को कोलकाता डायवर्ट किया गया. यह विमान सुबह 9:35 बजे रांची आता है, लेकिन कोलकाता से दोपहर 1:30 बजे आया. वहीं एयर इंडिया के ही मुंबई-रांची विमान को भी कोलकाता डायवर्ट किया गया. इस वजह से सुबह 10:30 बजे रांची आनेवाल यह विमान दोपहर लगभग 2:00 बजे रांची आया. उक्त दोनों विमान दोपहर 3:00 बजे रांची से अपने गंतव्य के लिए उड़े. वहीं, रात में मौसम खराब रहने के कारण रात 9:00 बजे रांची आनेवाला एयर इंडिया का दिल्ली-रांची विमान रद्द रहा.

जमशेदपुर में ब्राउन सुगर सेवन के क्रम मे एक अब्दुल की हत्या दुसरा अब्दुल जख्मी

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची , नशे का शहर में तब्दील जमशेदपुर तथा सरायकेला का आदित्यपुर इलाके को लेकर केंद्र भी चिंतित हैं। इस क्रम में टेल्को के नीलडीह जंगल में रविवार की देर शाम नशा करने के दौरान एक युवक की चापड़ से मारकर हत्या कर दी गई और उसके साथी को गंभीर रूप से घायल कर दिया। उसने किसी तरह से भागकर अपनी जान बचाई। उसने परिजनों को घटना की सूचना दी। इसके बाद पुलिस को जानकारी दी गई। मृतक की पहचान जुगसलाई मिल्लतनगर निवासी अब्दुल सोहेल अहमद के रूप में हुई है। उसके साथी का नाम अब्दुल सुफियान है, जो गंभीर रूप से घायल है। पुलिस ने इस मामले में एक युवक को हिरासत में लिया है। उससे पूछताछ की जा रही है। अब्दुल ने बताया कि रविवार शाम सोहेल अहमद ने फोन किया और उसे बाइक लेकर बुलाया।इसके बाद दोनों बाइक से नीलडीह जंगल पहुंचे। वहां सोहेल के कुछ परिचित युवक पहले से पहुंचे हुए थे, जिनमें विनीत नामक युवक भी था। सभी वहां बैठकर नशा कर रहे थे। इस दौरान किसी बात को लेकर विवाद हो गया। विवाद बढ़ने पर विनीत ने धारदार हथियार निकालकर सोहेल अहमद के सिर पर ताबड़तोड़ वार करना शुरू कर दिया। यह देख अब्दुल सुफियान मौके से भागने लगा। हमलावरों ने उसका भी पीछा कर जानलेवा हमला कर दिया। अब्दुल के सिर और पीठ में गंभीर चोटें आई हैं। हालांकि वह किसी तरह जान बचाकर पैदल ही मेन रोड पहुंचा और वहां से परिजनों को फोन कर घटना की जानकारी दी। इधर, घटना की जानकारी मिलते ही टेल्को और गोलमुरी थाना पुलिस की टीम रात को अब्दुल सुफियान के साथ सोहेल की तलाश में जुट गई। काफी खोजबीन के बाद सोहेल का शव रात 10 बजे के आसपास नीलडीह के जंगल में पाया गया। अब्दुल को इलाज के लिए एमजीएम अस्पताल ले जाया गया। उसकी स्थिति फिलहाल स्थिर बताई जा रही है।

स्लाइट में एडवांस एडिटिव मैन्युफैक्चरिंग पर 5 दिवसीय फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम का शुभारंभ

लोंगोवाल, (जगसीर सिंह)- संत लोंगोवाल इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (स्लाइट) के मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग ने आज 5 दिनों के फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम का शुभारंभ किया। यह प्रोग्राम ₹एडवांस एडिटिव मैन्युफैक्चरिंग₹ पर केंद्रित है, जो 5 जनवरी से 9 जनवरी तक चलेगा। स्लाइट के निर्देशक प्रो मणिकांत पासवान ने इस

फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम का औपचारिक उद्घाटन किया। उन्होंने बताया कि यह कार्यक्रम फैकल्टी सदस्यों को 3डी प्रिंटिंग, पाउडर बेड फ्यूजन और डायरेक्टेड एनर्जी डिपोजिशन जैसी उन्नत तकनीकों में प्रशिक्षित करेगा। प्रो. पासवान ने जोर दिया कि एडिटिव मैन्युफैक्चरिंग भारत के मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर को आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

कल्पवासी चले प्रयाग

पावन माघ मास का हुआ है शुभारंभ और घाटों पर रौनक छाई,

एक माह के इस उत्सव ने भक्तों में अनोखी संकल्प शक्ति जगाई,

कल्पवासी चले प्रयाग प्रण लेकर कठिन व्रत का बहुत ही खास,

12 वर्षों की यह अद्भुत तपस्या माघ मास गंगा स्नान व उपवास ।

कल्पवासी करेगें धरती पर शयन सत्य भाषण वाणी पर संयम,

एक महीने गृहस्थ आश्रम से हो दूर करेंगे हरि की सेवा प्रथम,

सुंदरतम माघ महात्म तीनो काल सुबह दोपहर संध्या बांचेंगे,

तुलसी जी और जौ को प्रतिदिन सींच संकीर्तन सत्संग करेंगे ।

गंगा की रेती और संगम स्थल पर संतों संग 'आनंद' होगा भरपूर,

समर्पित कर तन मन धन सब ईश्वर को मायावी जग से वे रहेंगे दूर,

दुखियों की करेंगे स्वैच्छिक सेवा स्वयं भोजन बना कर ग्रहण करेंगे,

आए चाहे कोई बाधा एक माह कल्पवास के स्थान को नहीं छोड़ेंगे ।

माघ मास की महिमा विशाल देती जीवन संजीवनी शक्ति अनंत,

इन्द्रियों पर साधकर संयम अनूठा मोक्ष गमन भीतर होता जीवंत,

जहाँ अनूठा अमृत झरता अम्बर से जो व्याधि मुक्त बनाता जीवन,

बड़ा ही पवित्रतम होता भक्त-भगवान व पूजनीय संतों का मिलन ।

- **मोनिका डागा 'आनंद', चेन्नई, तमिलनाडु**

बहते पानी की लहर सा हूँ मैं,

बहते पानी की लहर सा हूँ मैं,
बहते बहते गया ठहर सा हूँ मैं।

गहराई पाकर ठहरा हूँ बांध में,
टूटा तो बाढ़ का कहर सा हूँ मैं।

पीयो नहाओ या सिंचाई कर लो,
खेतों में बहती हुई नहर सा हूँ मैं।

बहता रहा तो निखरता ही रहूंगा,
रूका सबके लिए जहर सा हूँ मैं।

सागर जो जानोगे तो खारा ही हूंगा
यूं सुहानी बारिस के दहर सा हूं मैं।

तपती दोपहर सा ही लगने लगा हूँ,
वैसे सर्दी की ठंडी सहर सा हूँ मैं।

जो मुझे समझते है राजगुणपाल ,
उन्हे पता है बदलते पहर सा हूँ मैं।

कुदरत से की जो छेड़खानी,
तबाही का मंजर बना पानी।

बारिश नहीं ये तो चेतावनी है
संभालो जो है जान बचानी।

ये कहर कुदरत का नहीं है,
नतीजे है कि करो मनमानी।

वक्त ओर मौका तो न देगा,
गर्मी सर्दी भूकंप या सुनामी।

आग लगी झूठे विकास की,
वक्त रहते पड़ेगी ये बुझानी।

त्राहि त्राहि करेगी मानवता,
बात जब आयेंगी निभानी।

राजगुणपाल तेरा तो फ़र्ज़ है,
बात सबको सही ही बतानी।

राजगुणपाल बालकिया
9812516072
पंजाबी अध्यापक
पंचकूला

हिंदू सम्मेलन का आयोजन किया

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : रामेश्वरम मंदिर परिसर में हिंदू समुदाय की ओर से एक हिंदू सम्मेलन का आयोजन किया गया है। इसका उद्घाटन अखिल भारतीय संत समिति के राष्ट्रीय संगठन महासचिव स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती महाराज ने किया और हिंदू धर्म के लोगों को एकता बनाए रखने और मदद का हाथ बढ़ाने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि सनातन धर्म बहुत पुराना धर्म है जो हमेशा शांति और एकता के विचार के साथ आया है। मुख्य अतिथि के तौर पर जस्टिस चित्तरंजन दाश योगदी ने कहा कि सफलता तब मिलती है जब सभी एकता बनाए रखते हैं और आध्यात्मिक मार्ग पर चलते हैं। मुख्य वक्ता के तौर पर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (RSS) के संपादक विद्युत मुखर्जी, RSS ओडिशा पूर्वी महाविद्यालय के मुख्य मनोरंजन प्रमुख ने हिंदू एकता पर भाषण दिया। हिंदू समाज और देवयुग परिवार के सदस्यों के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम में अलग-अलग राज्यों और क्षेत्रों के संतों, विद्वानों और बुद्धिजीवियों सहित हजारों लोगों ने भाग लिया। यह घोषणा की गई कि आने वाले दिनों में ब्रह्म विनता के साथ एक मैराथन आयोजित की जाएगी। इस अवसर पर हनुमान चालीसा के साथ सामूहिक सुंदरकांड का पाठ किया गया।

बेटी सशक्त होगी तभी समाज समृद्ध बनेगा — डॉ. शंभू पंवार

नई दिल्ली। बेटियाँ ईश्वर की कोमल नेमत हैं। वे केवल परिवार की शान ही नहीं, बल्कि समाज की नैतिक और सांस्कृतिक शक्ति भी हैं। जिस घर में बेटी होती है, वहाँ संवेदना, संस्कार और समृद्धि स्वतः प्रवेश कर जाती है। इसलिए बेटियों को शिक्षा, सुरक्षा और संस्कार देना समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

यह विचार वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर, अंतरराष्ट्रीय लेखक, पत्रकार-विचारक एवं धरा गवर्नर डॉ. शंभू पंवार ने श्री कृष्ण गौशाला चिड़ावा में व्यक्त किए। वे अपनी सुपौत्री यशस्वी के जन्मदिन पर गौमाताओं को गुड खिलाने आए थे। उन्होंने कहा कि बेटी के शिक्षित होने से केवल एक परिवार नहीं, बल्कि दो पीढ़ियाँ सशक्त होती हैं, जिससे समाज में सकारात्मक परिवर्तन आता है।

डॉ. पंवार ने कहा कि आज का समय बदल चुका है। आधुनिक परिवेश में बेटियाँ शिक्षा, प्रशासन, विज्ञान, साहित्य, खेल, राजनीति और सामाजिक सेवा—हर क्षेत्र में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करा रही हैं। वे किसी भी दृष्टि से बेटों से कम नहीं हैं। आवश्यकता इस बात की है कि समाज की सोच बदले और बेटियों को आगे बढ़ने के समान अवसर मिलें। साथ ही उन्होंने यह भी रेखांकित किया कि वर्तमान समय में हमें अपने बेटों को भी नारी सम्मान, संवेदनशीलता और सामाजिक संस्कारों की शिक्षा देना अत्यंत आवश्यक है।डॉ. पंवार ने कहा कि संस्कार केवल उपदेश से नहीं, आचरण से पनपते हैं। जब परिवार स्वयं सामाजिक और मानवीय मूल्यों को अपनाता है, तभी नई पीढ़ी सही दिशा में आगे बढ़ती है। उल्लेखनीय है कि सामाजिक सरोकारों से जुड़े गौसेवक डॉ. शंभू पंवार अपने जीवन में सेवा, संवेदना और संस्कार को निरंतर व्यवहार में उतारते रहे हैं। वे अपने ओर परिवार के सदस्यों के जन्मदिन और अपने माता पिता की पुण्य तिथि के अवसर पर गौमाताओं को गुड, दलिया, आहार खिलाते है गौसेवा एवं सामाजिक मूल्यों के संदेश के माध्यम से समाज को सकारात्मक दिशा देने का प्रयास करते हैं। इस अवसर पर यशस्वी, यशु, सुभाष पंवार, अभिषेक पंवार, चंदन पवार ने सेवा कार्य में सहभागिता निभाई।

आप सरकार और कांग्रेस वी.बी.जी.राम.जी.के बारे में भ्रम फैलाना और गुमराह करना बंद करे :सरजीवन जिंदल

संगरूर, (जगसीर सिंह)- भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य सरजीवन जिंदल ने प्रेस बयान में कहा कि माननीय प्रधानमंत्री के नेतृत्व में ग्रामीण जीवन में खुशहाली व रोजगार सुनिश्चित करने के लिए वी.बी.जी.राम.जी. एक्ट में कई महत्वपूर्ण प्रावधान किए गए हैं। पहले मनरेगा में 100 दिन का काम दिया जाता था। इस नए एक्ट में 125 दिन की रोजगार गारंटी दी जाएगी, तय समय में काम न मिलने पर बेरोजगारी भत्ते को और मजबूत किया गया है। मजदूरी न मिलने पर अतिरिक्त राशि देने का प्रावधान है। गांव में किस तरह के काम करवाने हैं, परिवारों का पंजीकरण, रोजगार गारंटी कार्ड, आवेदन प्राप्त करने की योजना बनाना, इसकी योजना ग्राम पंचायतें व ग्राम सभाएं बनाएंगी। यह काम भी ग्राम पंचायतों द्वारा किया जाएगा। इस एक्ट के तहत 50 प्रतिशत काम सीधे ग्राम पंचायतों के माध्यम से करवाए जाएंगे। स्थानीय लोगों को काम मिलेगा, गांव का विकास होगा। इस एक्ट में जल संरक्षण, इंफ्रास्ट्रक्चर निर्माण, आजीविका आधारित और आपदा प्रबंधन से जुड़े काम किए जाएंगे। इस एक्ट में तालाब, चेक डैम, स्टॉप डैम, स्कूल, अस्पताल, आंगनवाड़ी, सड़क, नाली बनाना, गरीब परिवारों के लिए आय का जरिया और बहनों की आय बढ़ाने के लिए सेल्फ हेल्प और रोजगार से जुड़े काम किए जाएंगे, इस एक्ट में खेती की जरूरतों का भी पूरा ध्यान रखा गया है। हर काम का सोशल ऑडिट जरूरी होगा। गांव के लोग खुद देख सकेंगे कि काम ठीक से हुआ है या नहीं, काम में बायोमेट्रिक अटेंडेंस, जी आई एस जैसी टेक्नोलॉजी होंगी। मोबाइल ऐप, डैशबोर्ड और हर हफ्ते पब्लिक जानकारी के जरिए चेकिंग होगी। इस एक्ट से गांवों में खुशहाली आएगी। रोजगार के साधन बढ़ेंगे। इसलिए आप सरकार और कांग्रेस पार्टी को भ्रम फैलाना और गुमराह करना बंद करना चाहिए।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023